पुस्तक–प्राप्तिस्थान–
व्य. श्रीजिनहरिसागरसूरि-ज्ञानभंडार,
ठि. जाटावासमें,
मु. लोहावट
(मारवाड)

भावनगर–'आनंद' प्रि. प्रेसमां शेठ देवचंदभाई दामजीए
प्रकाशक माटे छाप्युं. ता. १–९–२९

लेखरूप प्रथम आवृत्तिना प्रकाशकनुं वक्तव्य.

" महान् सम्राट्सत्ता उपर अपूर्व प्रभा पाडीने तीर्थो अने शासनसमृद्धिनुं संरक्षण करनारा धुरंधराचार्य जैन-ज्योतिर्धर श्रीहीरविजयसूरिना प्रसिद्ध इतिहासथी पण लगभग २५० वर्ष पहेलां एटले विक्रमनी चौदमी सदीना उत्तरार्धमां मुस्लीम आक्रमणना विषम युगमां परम प्रभावक श्रीजिनप्रभसूरिए सुलतान महम्मद उपर पाडेली अजव प्रभानो अप्रगट इतिहास आ लेखमां बहु जीणवटथी अने विस्तारपूर्ण टिप्पण–टीका साथे प्रगट करवामां आव्यो छे. जो के आ लेख छेक असूरे मळवाथी तेनो केटलोक भाग छोडी देवो पड्यो छे; छतां लेख-कना संस्कृत–प्राकृत अभ्यास अने वडोदराना ओरी-एन्टल खाता द्वारा संशोधनना मेळवेल ऊंडा अनुभवनो लाभ समाजने आ लेखथी मळशे–तेम खात्री छे. "

—संपादक 'जैन'

—'जैन' रौप्य महोत्सव अंक

वि. सं. १९८६ [पृ. २१९]

प्रास्ताविक

आनंद-प्रमोदनो प्रसंग छे के-लगभग एक दसका पहेलां संक्षिप्त लेखरूपे प्रकाशित थयेल अम्हारो शुभ प्रयास, विशेष समृद्ध थइ विस्तृत स्वरूपमां आजे ग्रंथरूपे प्रकाशमां आवे छे. एना अन्वेषणमां-प्रामाणिक ऐतिहासिक संशोधनमां केटलो परिश्रम उठाव्यो हशे ? वर्षोना केटला प्रयत्नथी केवी केवी मुश्केलीओ वच्चे आ गवेषणा थइ हशे ? 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' सूक्तने यथार्थ प्रामाणिक करतां केवां केवां विघ्नोमांथी पसार थइ आनी संकलना थइ हशे ? अने वर्षो पछी आवा स्वरूपमां आजे आ प्रसिद्धिमां आवे छे, ते दरम्यान पण लेखकने केवा केवा प्रतिकूल संयोगो पसार करवा पड्या हशे ? ते लेखके स्वयं उच्चारवुं अप्रस्तुत लेखाय. इतिहासप्रेमी परिश्रमविज्ञ सज्जनो कदाच ए समजी शके.

आ परिश्रम, आवा संशोधित-वर्धित नवीन स्वरूपमां प्रकाशमां आवी शक्यो छे, तेनो वास्तविक सुयश, इतिहासप्रेमी गुणज्ञ जैनाचार्य **श्रीजिनहरिसागरसूरिजी** महाराजने घटे छे, जेमना प्रेरणा-प्रोत्साहन विना आ निबंध-ग्रंथनुं प्रकाशन कार्य प्राय: अशक्य थयुं होत. शासन-प्रभावक माननीय पूज्य पूर्वज आचार्योना इतिहास-संशोधनमां अने तेना प्रकाशनमां असाधारण उत्कंठा धरावनार उपर्युक्त आचार्यना आदर्शने कृतज्ञ अन्य महानुभावो पण अनुसरे-एम इच्छीशुं.

श्रीजिनप्रभसूरि-मूर्त्तिः



श्रीशत्रुञ्जयतीर्थे खरतरवसतौ प्रतिष्ठिता ।

आनंद प्रेस-भावनगर.

श्रीशत्रुंजय तीर्थ पर (खरतर–वसहीमां) रहेली मूर्ति परथी तैयार करावेल प्रस्तुत जिनप्रभसूरिनो फोटो अहिं समुचित लागशे.

प्रबल इच्छा होवा छतां पण योग्य प्रतिकृति प्राप्त न थवाथी सुलतान महम्मद (तुगलक)नो फोटो अहिं न मूकातां न्यूनता लागशे, परंतु ते माटे निरुपाय छुं. जिनचंद्रसूरि अने सम्राट् अकबरना नामे प्रख्याति पामेलुं चित्र, चरित्र–प्रसंग विचारतां म्हने तो जिनप्रभसूरि अने सुलतान महम्मद(तुगलक)नुं होय, तेम लागे छे.

विशेष वक्तव्य न करतां जिज्ञासुओने सूचवीए के—विषयानुक्रम, ऐतिहासिक नामोनी अनुक्रमणिका, ऐतिहासिक घटना–निर्देशक संवत्सर–सूची विगेरे योजनाओ साथे आ निबंध, इतिहास–प्रेमीओने विशेष उपयोगी थशे–एवी आशा छे.

आ ग्रंथ–रचनामां उपयुक्त थयेला ग्रंथोनुं सूचन, ते ते स्थळे करवामां आव्युं छे. श्रीयुत **अगरचंदजी नाहटा** जेवा जे इतिहासप्रेमीओए आ प्रकाशनमां प्रत्यक्ष के परोक्ष प्रेरणा, सहायता के सहानुभूति दर्शावी छे, ते सर्वनो हुं आभार मानुं छुं. संकलनामां अने संशोधन–प्रकाशनमां बनी शकी तेटली सावधानी राखी छे, छतां आमां कोइ स्खलना दृष्टि–गोचर थाय, तो ते साक्षरो मने जरूर सूचवे, पुनः प्रसंगे ते सुधारी शकाशे. सज्जन विद्वानो आनुं निष्पक्षपात दृष्टिथी साद्यन्त अवलोकन करो, अने ग्रन्थ–रचना–प्रकाशन–परिश्रम सफल थाओ–एम इच्छुं छुं.

वि. सं. १९९९
अक्षयतृतीया
वडोदरा.

विद्वदनुचर—
लालचंद्र भगवान् गांधी.

विषयानुक्रम

जिनप्रभसूरि अने सुलतान महम्मद.

(ले. पं. लालचंद्र भ. गांधी. प्राच्यविद्यामंदिर, वडोदरा)

पोतानी विद्वत्ता अने सच्चारित्रताथी जन-समाज पर उपकार करनारा, जैन-शासननी कीर्ति-पताका फरकावनारा, जैन-शासनना उज्ज्वल गौरवने प्रकाशित करनारा, जन-समाजमां अने राजा-महाराजाओमां हिंदु राजाओ अने मुसल्मान पातशाहो पर अपूर्व प्रभाव पाडनारा प्रभावशाली जे जे प्रभावक महापुरुषो थई गया छे; तेमां जिनप्रभसूरिनुं विशिष्ट स्थान छे.

विक्रमनी चौदमी सदीना उत्तरार्धमां-मुसल्मानी आक्रमणना भयानक विषम युगमां, दिल्लीश्वर सम्राट् महम्मद तुघलक पर अनुपम प्रभाव पाडी जैनसमाजने निरुपद्रव बनावनार, जैन-तीर्थो-मंदिरोने तुरकोना दुःखद विप्लवोमांथी बचावी निर्भय करनार, तुरकोना कब्जामां गयेल शासन-नायक महावीरना बिंबने सत्कारपूर्वक पाछुं वाळी प्रतिष्ठित करनार, जन-समाजने सुरक्षित करनार, सुलतान महम्मद तघलकथी सन्मानित थयेला आ सत्पुरुषने आपणे कमभाग्ये हजु यथार्थ रूपमां ओळखी शक्या नथी; एथी आ लेखद्वारा ए आचा-

र्यनो ऐतिहासिक प्रामाणिक परिचय कराववा कंईक यत्न करुं छुं. आ प्रयत्नथी, महम्मद तघलक संबंधी अन्यत्र जाणवामां न आवेली-प्रकाशित ऐतिहासिक पुस्तकोमां वांचवामां नहि आवेली; छतां तेना समकालीन परिचित विद्वान् जैन लेखकोए प्राकृतभाषामां लखी राखेली ऐतिहासिक घटना प्रकाशमां आवशे के जे पुरातत्त्वप्रेमी इतिहास-रसिक जिज्ञासु पाठकोने आनन्दप्रद थशे तेम धारुं छुं.

जैनाचार्य हीरविजयसूरि तथा जिनचंद्रसूरि (सपरिवार) अने सम्राट् अकब्बरनी इतिहासप्रसिद्ध विशिष्ट समागमवाळी संतोषकारक सफळ घटना पहेलां लगभग अढीसो वर्ष पर थयेल चिरस्मरणीय आ ऐतिहासिक वृत्तान्त हालमां प्रकाशमां आवे छे; एमां पण कुदरतनो कंइक संकेत हशे.

जैन ज्योतिर्धरोना झळहळता तेजने न सहन करी शकनारा, ए महाविभूतियोने यथार्थ रूपमां न ओळखी शकनारा, अथवा ओळखवा छतां गमे ते अव्यक्त तुच्छ कारणे ए सत्पुरुषोने विकृत रूपमां आलेखनारा, ए विशिष्ट उच्च ज्योतिर्धरो सामे जाण्ये-अजाण्ये रज उडाडी तेमने झांखा पाडवानी उपहासयोग्य स्वभाव-सुलभ व्यर्थ चेष्टा करे ए स्वाभाविक-बनवा योग्य छे, परंतु आपणे तो एमांथी पण प्रेरणानो बोधपाठ मेळवी, प्रमादनो परित्याग करी, आपणी तन-मन-धनादिक शक्तियोनो क्षुद्र कलहादिमां दुर्व्यय न करतां, जीवननी अमूल्य

क्षणोनो सदुपयोग करी एवा ज्योतिर्धरोने प्रकाशमां लाववा जोईए अने तेमना सद्गुणो तथा सत्कर्तव्योथी परिचित थई, तेमांथी शुभ प्रेरणा प्राप्त करी, प्रगतिने पंथे प्रयाण करतां एवा ज्योतिर्धरो प्रकटाववा प्रयत्नशील थवुं जोईए. जेनी सफळतामां स्व-परनुं श्रेयः समायेलुं छे. प्रस्तुत प्रयत्न पण ए विचारनुं परिणाम छे.

परिचय

प्रस्तुत जिनप्रभसूरिनो सांसारिक परिचय, माता-पितादि, ज्ञाति-गोत्र, पूर्वनाम, जन्म-समय, जन्म-स्थल, दीक्षा-समय, दीक्षास्थान ए विगेरे संबंधमां खास कंई जाणवामां आव्युं नथी; तेम छतां तेओ विक्रमनी चौदमी

---

१. आ ज नामना अने आ आचार्य पहेलां पचीशेक वर्ष पूर्वे थई गयेला लगभग समकालीन बीजा एक जिनप्रभसूरि आगमिकगच्छना हता. तेओए विक्रमनी तेरमी सदीना अन्तमां तथा चौदमी सदीना पूर्वार्धमां शत्रुंजयमां रही प्राकृत-अपभ्रंशादि भाषामां नाना-म्होटा अनेक ग्रंथो रच्या छे, जे पाटण विगेरेना जैन भंडारोमां मळी आवे छे [जुओ पाटण भं. सूची भा. १ गा. ओ. सिरीझ]. पोताने शत्रुंजय-सेवक तरीके ओळखावनारा आगमिकगच्छना ए जिनप्रभसूरिथी खरतरगच्छना आ जिनप्रभसूरिने जुदा समजवा जोइये.

२. विक्रमनी १७ मी सदीना अंतमां रचायेली जणाती एक

सदीना बीजा चरण(वि. सं. १३२५ पछी)थी चोथा चरणना अंत (वि. सं. १३९०) सुधी विद्यमान हता, तथा तेओ खरतरगच्छमां थयेला जिनसिंहसूरिना पट्टधर हता, एम तेमना पोताना उल्लेखो परथी जणाय छे.

अन्य ग्रंथकारने साहाय्य

जिनप्रभसूरि नामनो प्रथम उल्लेख, नागेन्द्रगच्छना उदयप्रभसूरिना पट्टधर मल्लिषेणसूरिए शकाब्द १२१४=वि. सं. १३४९ मां रचेली सुप्रसिद्ध स्याद्वादमंजरी (हेमचंद्राचार्यरचित अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिकानी विस्तृत विवृति)मां कर्यो [२] छे. ए स्थळे विशेष

ख. ग. पट्टावलीमां मळता उल्लेख प्रमाणे प्रस्तुत जिनप्रभसूरि, वागड देशना झूंझणू (वडोद्रा) नगरना तांबी श्रीमालगोत्र (? ज्ञाति) वणिक्ना पांच पुत्रोमांथी मध्यम(बीजा उल्लेख प्रमाणे ७ अने दशमां लघु)पुत्र हता.

१. आ जिनसिंहसूरिथी वि. सं. १३३१ लगभगमां खरतरगच्छमांथी एक शाखा प्रकट थई हती, जे लघु खरतरगण नामथी प्रसिद्धिमां आवी हती—एम खरतरगच्छनी पट्टावलीओमांथी सूचन मळे छे. ए शाखा-भेदने कारणे मूलगच्छ, जे बृहत्खरतरगच्छ नामथी ओळखावा लाग्यो, तेनी पट्टावलीओमां आ आचार्योनो विशेष परिचय कराव्यो जणातो नथी.

२. " श्रीजिनप्रभसूरीणां साहाय्योद्भिन्नसौरभा ।
श्रुतावुत्तंसतु सतां वृत्तिः स्याद्वादमञ्जरी ॥ "

—स्याद्वादमंजरी [प्रशस्ति श्लो० ८]

स्पष्टता न होवाथी निश्चितरूपमां कही शकाय तेम नथी के–ए मंजरीमां सौरभ प्रकट करवामां प्रस्तुत जिनप्रभसूरिनी ज सहायता होय, मात्र समान समयने तथा नाम–साम्यने लईने तेमनी संभावना करवामां आवे छे.

विद्वत्ता अने विहार–स्थळो

आ जिनप्रभसूरिए रचेली कृतियोमां प्रथम जणाती कातंत्रविभ्रम ग्रंथनी टीका छे. तेमां सूचव्या प्रमाणे ए रचना वि. सं. १३५२ मां योगिनीपुर(दिल्ली)मां माथुरवंशीय ठक्कुरकुलीन कायस्थ खेतलनी अभ्यर्थनाथी थई हती. व्याकरणविषयक २६१ श्लोकप्रमाण आ वृत्तिनी प्रति, जेसलमेरना जैन भंडारमां [1] छे. आ टीकाना अंतमां पोताने 'अप्रौढधीः' विशेषण आप्युं छे. ए पोतानी वयविषयक लघुता सूचववा वापर्युं होय एवी कल्पना करीए तो पण ते वखते तेमनुं वय वीशेक वर्षनुं कल्पी शकाय; कारण के ए ज टीकाना अंतमां 'सूरि' पद साथे पोताना नामनो निर्देश कर्यो छे. विभ्रम उपजावनार व्याकरणविषयक

१. गायकवाड ऑरिएन्टल सिरीझ् नं. २१ मां प्रकाशित थयेल 'जेसलमेर भाण्डागारीय ग्रन्थसूची' [पृ. ४८–४९] मां तथा तेना 'अप्रसिद्धग्रन्थ-ग्रन्थकृत्परिचय' [पृ. ९८] मां अम्हे आ ग्रन्थ साथे ग्रन्थकारनो संस्कृतमां संक्षेपमां परिचय कराव्यो छे.

प्रयोगो संबंधमां सूक्ष्म ज्ञान थवुं अने ए प्रयोगोने व्याख्यानद्वारा समजाववानी शक्ति प्राप्त थवी, सूरिपद–प्राप्ति थवी ए सर्वनो समय लक्ष्यमां लई विचार करतां जिनप्रभसूरिनो जन्म वि. सं. १३२५ लगभगमां थयो हशे एम संभावना करी शकाय. वि. सं. १५०३ मां सोमधर्मगणिए रचेली उपदेश–सप्ततिमां थयेला एक उल्लेखने[1] तेमना जन्मसमय संबंधमां घटावीए तो वि. सं. १३३२ मां तेमनो जन्म कल्पी शकाय. तरुण वयमां ज तेमनी दीक्षा थई जणाय छे अने सूरिपद पण वि. सं. १३५२ पहेलां थयुं होवुं जोइये एम विचारी शकाय छे. वि. सं. १३९० सुधीनी तेमनी कृतियो जाणवामां आवी छे. वृद्धावस्थाने लीधे छेल्लां दशेक वर्ष तेमने निवृत्ति स्वीकारवानी जरूर पडी होय अने विक्रमनी चौदमी सदीना अंतमां तेमनुं अवसान थयुं होय एम विचारतां तेमनी आयुष्य–मर्यादा लगभग ७५ पोणोसो वर्षनी संभवे छे. तेमनी देह–विलयनी भूमि निश्चितरूपमां जाणवामां आवी नथी, तेम छतां तेमना विहार अने वास–स्थानमां तथा ग्रन्थ–रचनामां दिल्ली, देवगिरि (दोलताबाद) अने अयोध्याने प्राधान्य मळ्युं होय तेम

१. " दन्त[३२]–विश्वे[१३]मिते वर्षे श्रीजिनप्रभसूरयः ।
अभूवन् भूभृतां मान्याः प्राप्तपद्मावतीवराः ॥ "
—उपदेशसप्तति (जैन आत्मानंद सभा–भावनगर–
द्वारा प्रकाशित पृ. ९८)

जणाय छे. विशेषतः ते तरफनो प्रदेश, तेमना स्मरणीय प्रभावो, उपदेशो, स्मारको अने उपकारोथी पावन थयो हतो.

ग्रंथ-रचना

जिनप्रभसूरिए रचेली कृतियोमां संवत्ना निर्देशवाळी कृतियो आ प्रमाणे जाणवामां आवी छेः—

वि. सं. १३५२ मां	योगिनीपुर (दिल्ली)मां	कातंत्रविभ्रम-टीका ग्रं. २६१
वि. सं. १३५६ मां		श्रेणिकचरित्र (द्व्याश्रयकाव्य) तपोटमतकुट्टनशतक
वि. सं. १३६३ मां विजयादशमी [प्रथमादर्श ले. वाचनाचार्य उदयाकरगणि]	कोसलानयर (अयोध्या)मां	विधिप्रपा (प्रा. श्रावकोनी अने मुनिओनां कृत्योनी सामाचारी) ग्रं. ३५७४
वि. सं. १३६४ मां		[1]कल्पसूत्र-वृत्ति(पंजिका संदेहविषौषधि) ग्रं. २२६८
वि. सं. १३६५ मां	दाशरथिपुर	अजितशांतिस्तव-वृत्ति

१. जिनप्रभसूरिए पर्युषणा-कल्पनां दुर्गम पदो पर विवरण-रूप पंजिका रची छे, जेनुं अपरनाम सन्देहविषौषधि छे. जामनगर-निवासी पं. ही. हं. द्वारा आ ग्रंथ प्रकट थयो छे, परंतु तेमां

पोषमां	(अयोध्या)मां	(बोधदीपिका)ग्रं.७४०
,,	साकेतपुर	उपसर्गहरस्तोत्र-वृत्ति
पोष व. ९	(अयोध्या)मां	(अर्थकल्पलता)
,,	साकेतपुर	भयहरस्तोत्र-वृत्ति
पोष शु. ९	(अयोध्या)मां	(अभिप्रायचन्द्रिका)
वि. सं. १३६९ मां	फलोधीमां	फलवर्धिपार्श्व-स्तोत्र
वि. सं. १३८० मां		पादलिप्तकृतवीरस्तोत्र-वृत्ति

रचना-समयवाळो उल्लेख जोवामां आवतो नथी, अन्य प्रति परथी तेनी रचना वि. सं १३६४ मां थयेली जणाय छे—

" सूरीन्द्रस्यान्वये जातो नवाङ्गीवृत्तिवेधसः ।
श्रीजिनेश्वरसूरीणां पौत्रः पात्रमनेधसः ॥
पुत्रः श्रीमज्जिनसिंहसूरीणां रीणरेफसाम् ।
जग्रन्थ ग्रन्थमेतं श्रीजिनप्रभमुनिप्रभुः ॥
वैक्रमे स्त्रीकला-विश्वदेवसङ्ख्ये तु वत्सरे × × "

(superscripts printed above: ६४ over "कला", १३ over "विश्व")

ही. र. कापडियाए चतुर्विंशतिजिनानन्दस्तुतिनी भूमिका [पृ. ४४] मां ' विश्व ' शब्दनी तेर संख्यावाचकतानुं समर्थन करवामां ' विश्वदेव ' शब्दवाळा उपर्युक्त पाठने दर्शावतां 'स्त्रीकळा' ने बदले ' ऽस्ति कला ' पाठ दर्शाव्यो छे, ते असंगत लागे छे.

हालमां प्रचलित कल्प-किरणावली, कल्पलता, कल्पसुबोधिका, कल्प-कलिका, कल्प-दीपिका विगेरे कल्पसूत्रनी वृत्तियो,

वि. सं. १३८१ मां — राजादि-रुचादिगण-वृत्ति
साधुप्रतिक्रमणसूत्र-वृत्ति
सूरिमंत्राम्नाय(सूरिविद्या-कल्प)

वि. सं. १३८५ मां [दिल्लीमां] शत्रुंजयकल्प(राजप्रसाद)

वि. सं. १३८६ (शकव. १२५१) मां टींपुरी-तीर्थस्तोत्र

वि. सं. १३८७ मां देवगिरि(दोलताबाद)मां पावापुरी-कल्प (दीपालिका-कल्प)

वि. सं. १३८९ मां योगिनीपुर (दिल्ली) मां तीर्थकल्पनी पूर्णता

वि. सं. १३९० मां हस्तिनापुरमां हस्तिनापुरतीर्थ-स्तोत्र

७०० स्तोत्रोनी रचना

जिनप्रभसूरि पछी लगभग सो वर्षे थयेला तपागच्छीय पं. सोमधर्मगणिए वि. सं. १५०३ मां संस्कृतमां रचेली उपदेशसप्ततिमां सूचव्युं छे के-'[२] जेणे विविध प्रकारनी श्रेष्ठ प्रभावनाओवडे सुलतानने

उपर्युक्त जिनप्रभसूरिनी संदेहविषौषधि पछी लगभग अढीसो वर्षे रचायेली छे. पाछळना वृत्तिकारोए जिनप्रभसूरिनी उपर्युक्त पंजिकानो थोडेघणे अंशे आधार लीधो हशे, एम मानवुं अयुक्त नहि गणाय.

१. केटलाक लेखकोए आनो रचना-समय वि. सं. १३२७ जणाव्यो छे, ते समजफेरथी कर्यो जणाय छे.

२. " इत्यादि नानाप्रवरप्रभावनाभरैः सुरत्राणमपि व्यबूबुधत् ।

पण विशिष्ट बोध पमाड्यो हतो, जेणे सातसें स्तोत्रो अने बहु उपकारी ग्रंथो गुंथ्या हता, समस्त अज्ञान–अंधकारने दूर करनारा, शासन–प्रभावक ते जिनप्रभसूरि संघनुं भद्र–कल्याण करो.'

जिनप्रभसूरिना रचेला सिद्धान्त–स्तव पर विवरण–अवचूरि रचनार आदिगुप्त–शिष्य (तपागच्छीय ? विशालराजगणि शिष्य?) उपर्युक्त रचना–संबंधमां विशेषमां जणावे छे के–

' पंहेलां, प्रतिदिन नवीन स्तवन निर्माण कर्या पछी निर्दोष आहार ग्रहण करवाना अभिग्रहवाळा जिनप्रभसूरिए

स्तोत्राणि यः सप्तशतीमितानि च ग्रन्थांश्च जग्रन्थ बहूपकारिणः ॥

स श्रीजिनप्रभसूरिर्दूरिताशेषतामसः ।
भद्रं करोतु सङ्घाय शासनस्य प्रभावकः ॥ "

——उपदेशसप्तति (भावनगर आ. सभा प्र. पृ. ९८–९९)

१. " पुरा श्रीजिनप्रभसूरिभिः प्रतिदिनं नवस्तवनिर्माणपुरस्सरं निरवद्याहारग्रहणाभिग्रहवद्भिः प्रत्यक्षपद्मावतीदेवीवचसाम(ऽ)भ्युदयिनं श्रीतपागच्छं विभाव्य भगवतां श्रीसोमतिलकसूरीणां स्वशैक्ष–शिष्यादिपठन–विलोकनाद्यर्थं यमक–श्लेष–चित्र–च्छन्दोविशेषादि–नवनवभङ्गीसुभगाः सप्तशतीमिताः स्तवा उपदीकृता निजनामाङ्किताः । "

——सिद्धान्तस्तवावचूरि [नि. सा. काव्यमाला गुच्छक ७, पृ. ८६)

प्रत्यक्ष पद्मावती–देवीना वचनथी तपागच्छने अभ्युदयवाळो जाणी, पूज्य सोमतिलकसूरिने पोताना शिष्य–शिष्याओ

१. बृहत्क्षेत्रसमास, सप्ततिशतस्थान (रचना सं. १३८७) विगेरेना कर्ता आ. सोमतिलकसूरिनो जन्म वि. सं. १३५५ मां, दीक्षा वि. सं. १३६९ मां, सूरिपद वि. सं. १३७३ मां जंघरालनगरमां वीरमंदिरमां संघपति गजे करेला २५००० टंकोना व्ययपूर्वक, अने स्वर्गवास वि. सं. १४२४ मां थयेल होवानुं सूचन मुनिसुंदरसूरिए वि. सं. १४६६ मां रचेली गुर्वावली (यशोविजय जैन ग्रन्थमालाप्रकाशित पृ. २८–३१)मां कर्युं छे.

जिनप्रभसूरिए रचेलां पुष्कल स्तोत्रोमांथी हालमां उपलब्ध स्तवन–स्तोत्र नीचे सूचववामां आवे छे:—

स्तोत्रनाम.	भाषा, विशेष. प्रारंभ.	पद्यसंख्या.	प्रकाशन–स्थळ.
१ ऋषभदेवस्तव	(सं. दशदिक्पाल-स्तुतिगर्भ। अस्तु श्रीनाभिभूर्देवो)	११	[प्रकरणरत्नाकर भा. ४, पृ. २४; जैनस्तोत्रसमुच्चय पृ. २६]
२ ,, ,,	(अष्टभाषामय। निरवधिरुचिरज्ञानं)	४०	[प्र. र. भा. २, पृ. २६३]
३* ,, ,,	(पारसीभाषामय। अल्लाल्लाहि)	११	[जैन० पृ.२४७]

* आ स्तोत्र पर अवचूरि छे.

विगेरेने भणवा, जोवा विगेरे माटे यमक, श्लेष, चित्र–छन्दो–

४	,, ,,	(प्रा. आज्ञाप्राधान्य नय-गम-भंगपहाणा)	११	[जैनस्तोत्रसंदोह पृ. २२७]
५	अजितनाथस्तवन	(सं. यमकमय । वि- श्वेश्वरं मथितमन्मथ)	२१	[प्र. २८–३२]
६	चंद्रप्रभस्तवन	(षड्भाषामय । नमो महासेननरेन्द्रतनूज)	१३	[प्र. र. भा. २ पृ. २६९]
७	,, स्तुति	(सं. देवैर्यस्तुष्टुवे तुष्टैः)	४	[,, २६२]
८	शांतिजिनस्तवन	(सं. श्रीशान्ति- नाथो भगवान्)	२०	[प्र. र. भा. ४, पृ. २६]
९	मुनिसुव्रतस्तोत्र	(सं. निर्माय नि- र्मायगुणर्द्धि)	३०	....
१०	नेमिस्तव	(सं. क्रियागुप्त । श्रीहरिकुलहीराकर)	२०	[प्र. र. भा. २, पृ. २४४]
११	पार्श्वस्तव	(सं. का मे वामेय ! शंकिः)	१७	[प्र. र. भा. ४, पृ. ३०; का. मा. ७ गुच्छ पृ. १०७]
१२	,,	(सं. अधियदुपनमन्तो)	१२	[,, पृ. ११७]
१३	,,	(सं. पार्श्वप्रभुं श- श्वदकोपमानं)	८	[प्र. र. भा. २ पृ. २९१]
१४	,,	(सं. श्रीपार्श्व ! पादान्त नागराज !)	८	[,, पृ. २९२]

विशेष विगेरे नवा नवा प्रकारोथी सुन्दर, पोताना नामांकित

१५	,,	(सं. प्रातिहार्य। त्वां विनुत्य महिमश्रिश्रियामहं)	१०	[प्र. र. भा. २, पृ. २५९]
१६*	,,	(प्रा. नवग्रहात्मक। दोसावहारदक्खो)	१०	[जैनस्तोत्रसंदोह पृ. २२८]
१७	,,	(सं. श्रीपार्श्व भावतः स्तौमि)	९	[प्र. र. भा. ४, पृ. २३]
१८	,,	(सं. श्रीपार्श्वः श्रेयसे भूयात्)	४४	[,, पृ. २६]
१९	,,	(सं. पार्श्वनाथमनघं)	९	....
२०	,,	(सं. जीरापल्ली। जीरिकापुरपतिं सदैव तं)	१५	[प्र. र. भा. २, २६८]
२१	,,	(प्रा. फलवर्धि। सयलाहि-वाहिजलहर !)	१२	[,, २६९]
२२	वीरस्तव	(सं. कंसारिक्रमनिर्यदापगा-)	२५	[प्र. र. भा. २, पृ. २४५; का. ७ गुच्छ पृ. ११२]
२३	,,	(सं. निर्वाणकल्याणक। श्रीसिद्धार्थनरेन्द्रवंश-)	१९	[,, पृ. ११९]

* आ स्तोत्र पर टिप्पनक छे.

७०० सातसो स्तोत्रो भेट कर्यां हतां.’

२४	वीरस्तव	(सं. चित्रस्तव। चित्रैः स्तोष्ये जिनं वीरं)	२७	[जैनस्तोत्रसं. पृ. ९२]
२५	,,	(सं. पंचवर्गपरिहार। स्वःश्रेयससरसीरुह)	२६	[प्र. र. भा. २, पृ. २४२]
२६	,,	(सं. पंचकल्याणमय। पराक्रमेणेव पराजितोऽयं)	३६	[,, पृ. २४९]
२७	,,	(सं. श्रीवर्द्धमानः सुखवृद्धयेऽस्तु)	९	[,, पृ. २५१]
२८	,,	(सं. लक्षणप्रयोगमय। निस्तीर्ण विस्तीर्णभवार्णवं जै–)	१७	[,, पृ. २६०]
२९	,,	(सं.विविधछंदोजातिरुचिर। असमशमनिवासं)	२५	[प्र.र.भा.४, पृ. २८]
३०	,,	(सं. श्रीवर्द्धमान परिपूरित)	१२	[प्र. र. भा. २, पृ. २५७]
३१	,,	(प्रा. सिरिवीयराय! देवाहिदेव!)	३५	....
३२	चतुर्विंशति-जिनस्तव	(सं.कनककान्तिधनुः)	२९	[प्र. र. भा. २, पृ. २४७; का. ७ गुच्छ पृ.११५]

तीर्थंकरो, गणधरो, तीर्थो, तीर्थरक्षको, शारदादेवी,

३३	चतुर्विंशति-जिनस्तवन	(सं. ऋषभ ! नम्रसुरासुरशेखर !)	२९	[प्र. र. भा. ४ पृ. ३१; जैनस्तो. सं. पृ. १४९]
३४	,,	(सं. आनन्दसुन्दर-पुरन्दरनम्र !)	२९	[,, पृ. १९१]
३५	,,	(सं. पात्वादिदेवो दश कल्पवृक्षाः)	२९	[प्र. र. भा. २, पृ. १७९]
३६	,,	(सं. प्रणम्यादि-जिनं प्राणी)	२८	[प्र. र. भा. २, पृ. २९८]
३७	,,	(सं. जिनर्षभ ! प्रीणितभव्यसार्थ)	७	[प्र. र. भा. ४, पृ. २२]
३८	,,	(सं. आनम्रनाकि-पति)	२९	[प्र. र. भा. ४, पृ. ३०२]
३९	,,	(सं. यमकमय। त-त्त्वानि तत्त्वानिभूतेषु सिद्धं)	२८	[प्र. र. भा. ४, पृ. ३०३]
४०*	,,	(सं. श्लेषमय। यं सततमक्षमालो)	३०	[जैनस्तोत्रसंदोह पृ. २१६]
४१	,,	(सं. ऋषभदेवम-नन्तमहोदयं)	३०	अप्रसिद्ध

* आ स्तवनी अवचूरि जयचन्द्रसूरिए रची छे.

पोताना गुरु (जिनसिंहसूरि) ए विगेरेने उद्देशीने संस्कृत,

४२	नंदीश्वरकल्प-स्तव	(सं. आराध्य श्री जिनाधीशान्)	४८	[प्र. र. भा. २, पृ. २५२]
४३	वीतरागस्तवन	(सं. जयन्ति पादा जिननायकस्य)	१६	[प्र. र. भा. २, पृ. २६१]
४४	मंत्रस्तव	(सं. स्वःश्रियं श्रीमदर्हन्तः)	९	[प्र. र. भा. २, पृ. २५१]
४५	अर्हदादिस्तवन	(सं. मानेनोर्वी व्यहृत परितो)	८	[प्र. र. भा. ४, पृ. २२]
४६	पंचपरमेष्ठिमहा-मंत्रस्तव	(प्रा. किं कप्प-तरु रे !)	१३	[प्रा. जैनस्तो. सं.]
४७	पंचनमस्कृति–स्तवन	(सं. प्रतिष्ठितं तमःपारे)	३३	[प्र. र. भा. २, पृ. २५६]
४८	कल्याणकपंचक–स्तवन	(सं. निलिम्प–लोकायितभूतलं	८	[प्र. र. भा. २, पृ. ५६०]
४९	मंगलाष्टक	(सं. नतसुरेन्द्र जिनेन्द्र !)	९	[प्रा. जैनस्तोत्रसं.]
५०	गौतमस्तोत्र	(सं. श्रीमन्तं मगधेषु)	२१	[प्र. र. भा. २, पृ.२४३;का.७ गुच्छ पृ.११०]
५१	,,	(प्रा. जम्म पवि-त्तिय सिरि)	२९	[जैनस्तोत्रसंदोह पृ. २३९]

प्राकृत, अपभ्रंश विगेरे विविध भाषामां, विविध छंदोमां, विविध अलंकारोमां, विविध चातुर्यथी रचायेलां चित्रमय मंत्रादिगर्भित ए मनोहर स्तोत्रोमांथी लगभग ७० सीत्तेर जेटलां स्तोत्रो आजे पण उपलब्ध थई शके छे. एमांनां केटलांक निर्णयसागरनी काव्यमाला(गु. ७)मां, प्रकरण-रत्नाकर (भा. २–४) मां, जैनस्तोत्र–संग्रहोमां, जैनस्तोत्रसमुच्चय, जैनस्तोत्रसंदोह विगेरेमां प्रकाशित थयेलां जोवाय छे.बीजां

९२	,,	(सं. महामंत्रमय । ॐ नमस्त्रिजगन्नेतुः)	९	[,, पृ. २३७]
९३	जिनसिंहसूरि-स्तवन	(सं. प्रभुः प्रदद्यान्मुनि–पक्षिपङ्क्ते–)	१३	[प्र. र. भा. २, पृ. २९९]
९४	जिनागमस्तवन	(सं. नत्वा गुरुभ्यः)	४६	[प्र. र. भा. ४, पृ.३००; का.७ गुच्छ पृ.८६]
९५	शारदास्तवन	(सं. वाग्देवते ! भक्तिमतां स्वशक्ति–)	१३	[प्र. र. भा. २, पृ. २९४]
९६	,,	(सं. अष्टक । ॐ नमस्त्रिजगद्वन्दित)	९	अप्रसिद्ध
९७	पद्मावती-चतुष्पदिका	(जिनशासन अवधारि)	३७	,, ...
९८	वर्धमानविद्या	(प्रा. इय वद्धमाणविज्जा)	१७	

केटलांक पाटण, खंभात, लींबडी, बीकानेर विगेरेना जैन भंडारोमां जडी आवे छे. तेओए पारसी भाषामां रचेलुं ऋषभजिन स्तोत्र (जैनसाहित्य–संशोधक खं. ३, अं. १ मां तथा नि. सा. प्रकाशित 'जैनस्तोत्रसमुच्चय' मां प्रकाशित) पाठकोनुं खास ध्यान खेंचे तेवुं छे. तेमने ते विदेशी–विजातियोनी भाषा पर पण काबु हतो, जे भाषादिना अभ्यास तरफ केटलाक डाह्या (!) घृणा धरावे छे. जिनप्रभसूरिए तो आ भाषाज्ञानथी अने बीजा केटलाक व्यवहारज्ञान–चातुर्यादि सद्गुणोथी विदेशी पातशाहीमां–दिल्लीश्वरना राज–दरबारमां पण सन्मान मेळव्युं हतुं अने तेओ समाजने उपयोगी अनेक सत्कर्तव्यो करवा भाग्यशाळी थई शक्या हता. शहेनशाह अकबरना दरबारमां सन्मान मेळवनार तपागच्छना उ. भानुचंद्र अने सिद्धिचंद्र वाचक विगेरेए ए विदेशी भाषा पर काबू मेळव्यो हतो–जेओ आ आचार्य पछी लगभग बसो वर्षे थयां.

ए उपर सूचवेलां स्तोत्रो, वृत्ति–टीकाओ अने बीजा ग्रंथोमां

कल्प–प्रदीप तेमनो कल्प–प्रदीप नामनो तीर्थकल्प

---

१ 'कविवर समयसुंदरना प्रशिष्य राजसोमे करेल ऋषभजिन-स्तवन पारसी भाषामां मळे छे, तथा संभवतः जिनप्रभसूरिजीकृत शांतिनाथ–स्तवन पण पारसी भाषामां उपलब्ध थाय छे' एम अगरचंद नाहटा जणावे छे.

तीर्थ-कल्प   ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टिए अति महत्त्वनो छे. सौराष्ट्र, गुजरात, राजपूताना, मालवा, मध्यदेश, पूर्वदेश अने दक्षिणमां आवेलां जैन तीर्थोना विश्वसनीय प्राचीन इतिहासनो परिचय करावनार ए ग्रंथ तेओए देश-पर्यटनादिद्वारा वहोळो अनुभव मेळव्या पछी वृद्धावस्थामां रच्यो जणाय छे. तेमना तीर्थ-कल्पनुं अवलोकन करतां समजाय छे के-जिनप्रभसूरिए अनेक देशोमां पर्यटन कर्युं हतुं, अनेक तीर्थोनी यात्रा-प्रतिष्ठा करी हती, अनेक वार राज-सभाओमां प्रवेश कर्यो हतो, अनेक शास्त्रोनुं अवलोकन कर्युं हतुं, अनेक भाषाओमां प्रवीणता मेळवी हती, काव्य-साहित्यकलामां कुशलता प्राप्त करी हती, अनेक पंडितो साथे चातुर्यगोष्ठी करी हती, अनेक मुनियोने अध्ययन करावी विद्या-वृद्धि करी हती. तेमना तीर्थ-कल्पमां मुख्यताए नीचे जणावेल तीर्थो अने तीर्थ-भक्तो संबंधी संक्षेप अने विस्तारथी परिचय आपवामां आव्यो छे—

तीर्थो

१ शत्रुंजय	५ अर्बुद (आबू)
२ उज्जयंत (गिरनार)	६ मथुरा
३ पार्श्व (स्तंभन-खंभात)	७ अश्वावबोध (भरुच)
४ अहिच्छत्रा	८ वैभारगिरि (राजगृह)

९ कौशांबी
१० अयोध्या
११ पावापुरी
१२ कलिकुंड
१३ हस्तिनापुर
१४ सत्यपुर (साचोर)
१५ अष्टापद
१६ मिथिला
१७ रत्नपुर
१८ कन्नाणयनयर(कन्नानूर, दक्षिण) वीर
१९ प्रतिष्ठान(पैठण)पत्तन
२० नंदीश्वर
२१ कांपिल्यपुर
२२ अरिष्टनेमि(शौरीपुर)
२३ शंखपुर
२४ नासिक्कपुर
२५ हरिकंखी–पार्श्व
२६ शुद्धदंती
२७ अभिनंदन
२८ चंपापुरी
२९ पाटलिपुत्र(पटना)
३० श्रावस्ती
३१ वाराणसी
३२ कोका–पार्श्व (पाटण)
३३ कोटिशिला
३४ चेल्लण पार्श्व (ढिंपुरी)
३५ कुडंगेश्वर (उज्जयिनी)
३६ माणिक्यदेव(कुल्पाक,दक्षिण)
३७ अंतरिक्ष पार्श्व
३८ फलवर्द्धि (फलोधी) पार्श्व
३९ समवसरण–रचना
४० महावीर–गणधर
४१ तीर्थ–नामसंग्रह

तीर्थ–भक्तो

१ कपर्दियक्ष
२ कोहंडिय देवी

३ अंबिका देवी

४ आरामकुंड-
पद्मावती देवी

५ व्याघ्री (शत्रुंजय पर
अनशन करनारी वाघण)

६ मंत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपाल

जिनप्रभसूरिए संस्कृतमां अने प्राकृतमां गद्यमां अने पद्यमां छटादार शैलीथी रचेला ग्रं. ३५०३ (६०) श्लोक प्रमाणवाळा आ तीर्थकल्प ग्रंथमां उपर्युक्त तीर्थो अने तीर्थ-भक्तो साथे संबंध धरावती पोताना समय सुधीनी अनेक घटनाओनुं विश्वसनीय वर्णन कर्युं छे. जेमांथी ते ते देशो, नगरो अने राज्योनी स्थितिनो पण सारो ख्याल थई शके छे, बीजो पण घणो उपयोगी जाणवा लायक इतिहास एमांथी मळी आवे छे. ए सर्व तीर्थोना कल्पो संबंधी विशेष परिचय करावतां आ लेख-निबन्ध एक ग्रन्थरूप बनी जाय; एथी अहिं मात्र प्रासंगिक सूचवीशुं.

राज-प्रसाद शत्रुंजयकल्प

आ तीर्थ-कल्पमां सौथी प्रथम शत्रुंजयनो कल्प छे. तेना अंतमां तेनो रचना-समय वि. सं. १३८५ माघ व. ७ शुक्रवार सूचवेल छे; ते साथे एक खास विशेषता तेमां सूचवी छे के-' आ(शत्रुंजय-कल्प)नो प्रारंभ करतां ज राजाधिराज, संघ पर प्रसन्न थया; आथी आ

कल्प ' राज-प्रसाद ' नामे लांबा वखत सुधी जयवंत रहो.'

महम्मदनी प्रसन्नता.

उपर्युक्त उल्लेख परथी विचारने अवकाश मळे अने जिज्ञासा थाय ए स्वाभाविक छे के-आमां सूचवेल दील्लीश्वर हम्मीर राजाओनो अधिराज-महान् सम्राट् कोण? अने ए संघ पर केवी रीते प्रसन्न थयो? कोना प्रभावथी प्रसन्न थयो? प्रसन्न थईने तेणे शुं कर्युं? आ जैनाचार्य साथे एने शो संबंध-परिचय? के जेथी आ ग्रंथकारने एना स्मरण माटे पोतानी एक कृतिनुं-शत्रुंजय-तीर्थना कल्पनुं ' राज-प्रसाद ' एवुं नाम राखवानुं उचित समजायुं. आ संबंधी अन्यत्र तपास करतां पहेलां आ ग्रंथ परथी शुं जणाय छे, ते तपासीए.

उपर्युक्त तीर्थकल्पना अंतिम भागमां जिनप्रभसूरिए ग्रंथकार तरीके पोताना नामनो निर्देश चातुर्यथी सूचवी ' कल्पप्रदीप ' अपरनामवाळा आ ग्रन्थने वि. सं. १३८९

---

१ " प्रारम्भेऽप्यस्य राजाधिराजः सङ्घे प्रसन्नवान् ।
अतो राजप्रसादाख्यः कल्पोऽयं जयताच्चिरम् ॥
श्रीविक्रमाब्दे बाणाष्ट-विश्वेदेवमिते शितौ ।
सप्तम्यां तपसः काव्यदिवसेऽयं समर्थितः ॥ "

—तीर्थकल्प (शत्रुंजयकल्प)

मां भाद्रपद व० १० ने दिवसे पृथ्वीन्द्र (पातशाह) हम्मीर महम्मदना प्रतापी राज्य अमलमां योगिनीपत्तन(दिल्ली)मां परिपूर्ण कर्यो हतो–एम सूचव्युं छे. ए उपरथी विचारी शकाय छे के–शत्रुंजय–कल्पना अंतमां सूचवायेल राजाधिराज ए अन्य कोइ नहि, परंतु दिल्लीश्वर सुलतान हम्मीर महम्मद होवो जोइये, के जेने इतिहासमां ' महम्मद तघलक ' नामथी ओळखवामां आवे छे अने जे वि. सं. १३८१ (ईस्वी सन् १३२५) थी वि. सं. १४०७ (ईस्वी सन् १३५१) सुधी–आजथी लगभग छसो वर्ष पर दिल्लीना

---

१ " को(का)ऽर्थं भ(सृ)जेत् ? किं प्रतिषेधवाचि ?
पदं ब्रवीति प्रथमोपसर्गः ? ।
कीदृग् निशा ? प्राणभृतां प्रियः कः ?
के ग्रन्थमेतं रचयांप्रचक्रुः ? ॥ "
—श्रीजिनप्रभसूरयः ।

नन्दानेकप–शक्ति–शीतगुमिते श्रीविक्रमोर्वीपते–
वर्षे भाद्रपदस्य मास्यवरजे सौम्ये दशम्यां तिथौ ।
श्रीहम्मीरमहम्मदे प्रतपति क्ष्मामण्डलाखण्डले
ग्रन्थोऽयं परिपूर्णतामभजत श्रीयोगिनीपत्तने ॥
तीर्थानां तीर्थभक्तानां कीर्तनेन पवित्रितः ।
कल्पप्रदीपनामाऽयं ग्रन्थो विजयतां चिरम् ॥ "
—तीर्थकल्प [का. प. ६४]

तख्त पर आरूढ रही प्रतापी सार्वभौम तरीके राज्यअमल करतो हतो. जेना संबंधमां इंग्लीश ऐतिहासिक पुस्तकोमां केटलुंक जाणवालायक सचित्र वृत्तान्त मळी आवे छे.

आ राजाधिराज हम्मीर महम्मद तवलक क्यारे? कई रीते संघपर प्रसन्न थयो? जिनप्रभसूरिए शत्रुंजय तीर्थकल्पमां एनुं स्मरण शामाटे कर्युं ? एनी पाछळ रहेला गूढ इतिहासनो भेद समजवा तत्कालीन अथवा तेना निकटना प्रामाणिक विश्वसनीय उल्लेखो तपासवा जोइये. सौथी पहेलां स्वयं ए ग्रन्थकारे ए संबंधी क्यांय सविस्तर स्पष्टताथी सूचव्युं छे के केम ? ए शोधवुं जोइये. ए शोध करतां तेमना तीर्थकल्प तरफ दृष्टि करीए. आ तीर्थ-

---

१ प्राचीन बृहट्टिपनिकामां सूचवायेला अने मर्हुम प्रो. पिटर्सनना रि. ४ था [पृ. ९१ थी १००] मां स्वल्प अंशो साथे निर्दिष्ट करायेला आ 'तीर्थकल्प' नुं प्रकाशन कार्य, एशियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगाले हाथ धर्युं हतुं; परंतु इ. स. १९२३ मां प्रकट थयेल एक भाग [पृ. ९६] पछीनो भाग हजु अम्हारा जोवामां आवेल नथी.

आ लेखनी बीजी आवृत्ति प्रकाशमां आवे छे त्यारे आ 'विविध तीर्थकल्प' प्रसिद्ध साक्षर जिनविजयजीद्वारा संपादित थइ, सिंघी जैन-ग्रन्थमालामां विश्वभारती सिंघी जैन-ज्ञानपीठ शान्तिनिकेतनद्वारा प्रकाशित थाय छे, ए खुशी थवा जेवुं छे.

कल्पनी नवीन लखावेली प्रति प्रवर्तकजी श्रीकान्तिविजयजी महाराजना संग्रहमां वडोदराना आत्मारामजी जैन-ज्ञानमन्दिरमां छे, ते[प. ४१ थी ४४]मां तथा सं. १९७१ मां प्रकाशित थयेल ' अभिधानराजेन्द्र ' नामना प्राकृतमहाकोष [भा. ३, पृ. २१२ थी २१५] मां जोवामां आवता अशुद्धियोनी बहुलतावाळा प्राकृतभाषामय ' कन्नाणयपुर-वीरकप्प ' मां प्रस्तुत विषय साथे संबंध धरावतो इतिहास मळी आवे छे.

कन्नाणयनयर-कल्पमां जणावेल ऐतिहासिक वृत्तान्त.

" अगणित गुणगणवाळा, मेरुपर्वत जेवा धीर महावीरजिनने प्रणाम करीने कन्नाणयपुर(कानानूर, दक्षिण)मां रहेली ते(महावीर जिन)नी प्रतिमानो कंइक कल्प (आम्नाय-प्राचीन अर्वाचीन इतिहास) हुं कहीशः—

चोलदेशना अवतंस(आभूषण-तिलक)रूप [1]कन्नाणय-

---

१ जिनप्रभसूरि तथा तेमना अनुयायी विद्यातिलक मुनिना उल्लेखोमां आ नगर कन्नाणयपुर, कण्णाणयनयर, कन्ना - य, कन्यानयनीय विगेरे नामोथी सूचवायेल छे. प्रो. पिटर्सनना रिपोर्ट ४ [पृ. ९५, ९९] मां एने बदले कल्याण, कात्यायनीय वगेरे नाम पण प्रकट थयेल छे. एने अनुसरीने पं. ही. हं.

नयर(कानानूर, दक्षिण)मां विक्रम-

ना 'जैनधर्मना प्राचीन इतिहास' [भा. १, पृ. ३६] मां, 'जैनग्रंथावली' [पृ. ३३] मां, 'जैनसाहित्यमें इतिहास के साधन' [जैनसाहित्य-संमेलन रि. ले. पृ. १०] विगेरेमां पण तेवुं नाम दर्शावेलुं जोवामां आवे छे; परंतु ए संबंधमां वधारे विचार अने तपास कर्या पछी जणाय छे के-दक्षिणमां चोलदेशमां श्रीरंगम टापू(पट्टन)नी उत्तरे पांच माइल पर आवेलुं, हालमां कन्नानूर(कानानूर) नामथी ओळखातुं ते ज आ नगर होवुं जोइये. जे नगर एक वखते होयसाल राजाओनी राजधानी तरीके उन्नत थई प्रसिद्धिमां हतुं. होयसाल वीर सोमेश्वरे तेने किल्लाथी सुरक्षित कर्युं हतुं. विशेष माटे जुओ केम्ब्रीज हीस्ट्री ऑफ इन्डिया [वॉ. ३, पृ. ४८१, ४८४, ४८८] आ नाम निश्चित करवामां वरोडा कॉलेजना इतिहासना प्रोफेसर म्हारा स्नेही श्रीयुत केशवलालभाई हिं. कामदारनो हुं खास आभारी छुं. विक्रमनी तेरमी सदीना पूर्वार्धमां त्यां महावीर-प्रतिमानी प्रतिष्ठा थयेली होई श्रीमान् जैनोनुं ए वास-स्थान बन्युं होवुं जोइए अने ते समये ते व्यापार विगेरेथी सुसमृद्ध स्थितिमां होवुं जोइये.

१ अहिं सूचवेल विक्रमपुर पण उपर्युक्त पुस्तकमां सूचवेल दक्षिणमांनुं उपर्युक्त कन्नानूरनी समीपनुं जणाय छे, जिनपतिसूरि-रासमां-'अत्थि मरुमंडले नयरविक्कमपुरे जसोवद्धणु जग जाणिए ए' जणावेल होइ विक्रमपुर जेसलमेर-निकटवर्ती स्थान होवुं जोइए' एम अगरचंदजी नाहटा जणावे छे, ते विचारणीय छे.

महावीरनी प्राचीन मनोहर प्रतिमा	पुरवासी, जिनपतिसूरिना[1] काका शाह मानदेवे[2] करावेली अने वि. सं. १२३३ मां आषाढ शु. १० गुरुवारे अम्हारा ज पूर्वाचार्य श्रीजिनपतिसूरिए प्रतिष्ठित

१ आ जिनपतिसूरिनो संस्कृतमां संक्षेपमां परिचय अम्हे 'जेसलमेर–भांडागारीय–ग्रंथसूची' ना अप्रसिद्ध ग्रन्थ–ग्रन्थकृत्परिचय [पृ. २८] मां तथा 'अपभ्रंशकाव्यत्रयी' नी भूमिका [पृ. ६९–६८] मां आप्यो छे. ते परथी समजाशे के–संघपट्टक-टीका, पंचलिंगीविवरण, प्रबोधोदय वादस्थल विगेरे ग्रंथो रचनारा आ प्रौढ विद्वान् वि. सं. १२१० थी १२७७ सुधी विद्यमान हता. तेमना पट्टधर जिनेश्वरसूरिए अने जिनपाल उपाध्याय, सूरप्रभ उपाध्याय, पूर्णभद्रगणि, सुमतिगणि विगेरे विद्वान् शिष्योए पण ग्रन्थ–रचनादिद्वारा जन–समाज पर घणो उपकार कर्यो छे. आ जिनपतिसूरिए गुजरातनी भूमिमां आशापल्ली(आसावळ)मां अने पृथ्वीराजनी सभामां प्रतिवादियोने परास्त करी वादमां जय मेळव्यो हतो अने विधिमार्गने विस्तार्यो हतो–एवा अनेक उल्लेखो मळी आवे छे, जे अम्हे त्यां दर्शाव्या होवाथी अहिं आ लेखने विस्तारीशुं नहि.

२ आ शाह मानदेव, ऊकेश(ओसवाल) वंशना हता, तेमना वंशनुं विस्तृत वर्णन, जिनपतिसूरिना प्रशिष्य अने जिनेश्वरसूरिना शिष्य कुमारगणि कविए चंद्रतिलक उपाध्यायना अभय-

करेली, स्वप्नना आदेश प्रमाणे मम्माणशैल(खाण)मां प्रकट थयेल जोई(ज्योती)रस उपल(रत्न)नी घडेली, अनक-ग्राल (?) नामनी पृथ्वी-धातुविशेषना स्पर्शवडे नखमात्र लागतां पण घंटानी जेम ध्वनि करती, २३ त्रेवीश पर्व (आंगळ) परिमाणवाळी, संनिहितप्रातिहार्यवाळी (चमत्कारी) महावीर-प्रतिमा श्रावकसंघवडे लांबा वखत सुधी पूजाती हती.

वि. सं. १२४८ मां चाहुयाण(चौहाण)कुळना प्रदीप पृथ्वीराज नरेन्द्र, सुलतान साहबदीन शहाबुद्दीन घोरी (शहाबुद्दीन घोरी)वडे मरण पामतां, ना अमलमां गुप्त राज्य-प्रधान परमश्रावक शेठ रामदेवे

कुमारचरित(पं. ही. हं. प्रकाशित)नी प्रांत प्रशस्तिमां ४८ श्लोकोथी कर्युं छे. ए परथी समजाय छे के–जिनपतिसूरिना पिता यशोवर्धन, आ शाह मानदेवना लघुबंधु हता. तेमना वंशना विशेष परिचय माटे जुओ पूर्वोक्त प्रशस्ति तथा गुजरातीमां अम्हे सूचवेल सार [वीजापुर–वृहद्वृत्तांत बुद्धिसागरजी ग्रंथमाळा, प्र. अध्यात्मज्ञान प्र. मंडळ आवृत्ति २ जी पृ. १३६–१४८ थी १५०]

१ जैनोना प्रज्ञापना(पन्नवणा)सूत्रमां तथा वराहमिहिरनी बृहत्संहिता[पृ. ४०६]मां उपलरत्नोनी विविध जातिमां 'ज्योतीरस' नामनी पण एक जाति सूचवी छे. जावडशाहे वि. सं. १०८ मां शत्रुंजय पर प्रतिष्ठित करेली श्रीआदीश्वरनी मूर्ति पण आ ज जातिनी हती–एम अन्यान्य ग्रंथो परथी जणाय छे.

श्रावक-संघने लेख मोकल्यो के–'तुरकोनुं राज्य थयुं छे. श्रीमहावीरनी प्रतिमा अत्यंत छानी रीते धारण करी राखवी.' त्यारपछी श्रावकोए दाहिमकुलना मंडनरूप कयंवास मांडलिकना नामथी अंकित थयेला कयंवास स्थळमां विपुल वेळुना पूरमां ते प्रतिमा स्थापी हती.

महावीर-प्रतिमानुं पुनः प्रकट थवुं

वि. सं. १३११ मां अतिदारुण दुर्भिक्ष थतां निर्वाह न थवाथी जाजओ नासनो सूत्रधार जीविका निमित्ते कुटुंब साथे कन्नाणय(कन्नानूर)थी सुभिक्षदेश तरफ चाल्यो हतो. 'पहेलुं प्रयाण थोडुं करवुं जोइए' एम विचारी कयंवास स्थळमां (ते मूर्तिवाळा प्रदेशमां) ज ते राते वास कर्यो हतो. अर्धी राते देवताए तेने स्वप्न आप्युं के–'अहिं ज्यां तुं सूतो छे, तेनी हेठे आटला हाथ पर भगवंत महावीरनी प्रतिमा छे. तारे पण देशांतर जवुं नहि पडे, अहिं ज तारो निर्वाह थशे.' संभ्रमपूर्वक जागीने तेणे ते स्थानने पुत्रादिद्वारा खणाव्युं एटले ते प्रतिमा दीठी. तेथी हृष्ट तुष्ट थयेला तेणे नगरमां जइ श्रावकसंघने निवेदन कर्युं. श्रावकोए महोत्सवपूर्वक परमेश्वरने प्रवेश करावी चैत्यगृह–मंदिरमां स्थाप्या. त्रिकाळ पूजावा लाग्या. अनेक वार तुरकोना उपद्रवथी मुक्त रह्या. श्रावकोए ते सूत्रधारने वृत्ति–निर्वाह करी आप्यो. प्रतिमानो परिकर शोधाववा छतां

पण तेओने प्राप्त थयो नहि. कोइपण स्थळ-परिसरमां ते रह्यो होवो जोइए. प्रशस्ति वर्ष विगेरे तेना पर ज लखेलुं संभवे छे.

उपद्रवना वखतमां

एक वखते न्हवण थया पछी भगवंतना शरीर पर परसेवो पसरतो दीठो, लूहवा छतां पण ते अटक्यो नहि; तेथी विदग्ध श्रावकोए जाण्युं के-'कोइपण उपद्रव अवश्य अहिं थशे.' एवामां प्रभातमां जट्टुय(जेठवा) राजपूतो (? यवनो)नी धाड आवी. नगरने चोतरफथी विध्वस्त-विनष्ट कर्युं. एवी रीते प्रकट प्रभाववाळा स्वामी वि. सं. १३८५ सुधी पूजाया.

तुगलकाबादमां शाही खजानामां

वि. सं. १३८५ मां आवेला आसीनगरना त्रिय (?) वंशमां थयेला घोर परिणामवाळाए (? घोरीए) श्रावकोने अने साधुओने बंदी (केदी) करीने विडंब्या. पार्श्वनाथनुं शैलमय बिंब भांग्युं अने महावीरनी ते प्रतिमाने अखंडित ज गाडामां चडावीने दिल्लीपुरमां

१ इ. सन्. १३२८ [वि. सं. १३८५]मां दक्षिणमां मुसलमानी हुमलो थयो हतो, अने ते वखते मदुरा अने तेनी वहारनुं मुख्य कन्नानूर, महम्मद तघलके कब्जे कर्युं हतुं, एवो इतिहास मळी आवे छे (जुओ केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया वॉ. ३, पृ. ४८८). संभव छे के-उपर्युक्त खेदजनक घटना ते वखते बनी हशे.

आणीने तुगुलकाबादमां रहेला सुलतानना भंडारमां स्थापी. ते एवा आशयथी के–' सुलतान अहिं आव्या पछी जेम फरमावशे तेम करशुं.' एथी ते प्रतिमा १५ मास सुधी तुरकोना कब्जामां रही.

कालक्रमे महम्मद सुलतान देवगिरि (दोलताबाद) नगरथी योगिनीपुर(दिल्ली)मां आव्यो.

जिनप्रभसूरिने पातशाहनुं आमंत्रण

अन्यदा खरतरगच्छना अलंकाररूप, जिनसिंहसूरिना पट्ट पर प्रतिष्ठित थयेला जिनप्रभसूरि विविध देशोमां विहार करता दिल्लीना साहपुर(शाखापुर-परा)मां आव्या. क्रम प्रमाणे महाराज–सभा(पातशाही दरबार)मां पंडितोनी गोष्ठी थतां महाराजाए(पातशाहे) पूछ्युं के–' अतिशय विशिष्ट पंडित कोण छे ?' जोषी धाराधरे तेमना (जिनप्रभसूरिना) गुणोनी स्तुति करी. त्यारपछी महाराजे ते

१ आ तुघलकाबाद, दिल्हीथी पूर्वमां ६ माइल पर ग्यास्–उद्–दीन तघलके (महम्मद तघलकना पिताए) इ. सन् १३२१ (वि. सं. १३७७) लगभगमां वसाव्युं हतुं, तेम अन्यत्र इतिहासमां वांचवामां आवे छे. एनुं चित्र पण मळी आवे छे.

२ वि. सं. १३३१ लगभगमां खरतरगच्छनी लघुशाखा आ आचार्यथी प्रवर्ती हती, ए पहेलां कहेवाइ गयुं छे.

(पं. धाराधर)ने ज मोकली जिनप्रभसूरिने बहुमानपूर्वक आमंत्रण करी बोलाव्या.

[वि. सं. १३८५] पोष शु. २ नी सांझे सूरिजी महाराज महाराजाधिराज(महम्मद)ने भेट्या.

पातशाहे जिनप्रभसूरिनो करेल सत्कार

सुलताने सूरिजीने अत्यंत पासे वेसारी कुशलादि वृत्तान्त पूछ्यो. सूरिजीए नवीन काव्य रची आशीर्वाद आप्यो, ते तेणे सांभळ्यो. लगभग अर्धी रात सुधी एकांतमां गोष्ठी करी. राते त्यां(पातशाही महेलमां) ज वास करावीने प्रभाते सूरिजीने फरी बोलाव्या. संतुष्ट थयेला महानरेंद्रे १००० गायो, द्रव्यसमूह, श्रेष्ठ बाग, १०० वस्त्रो, १०० कांबल अने अगर, चंदन, कपूर विगेरे सुगंधी द्रव्यो देवा मांड्यां; 'परंतु साधुओने ए न कल्पे' एम महाराजाने समजावी, गुरुजीए ते सर्व वस्तुओनो प्रतिषेध कर्यो. तेम छतां 'राजाधिराजने अप्रीति न थाओ' एम विचारी राजाभियोगवडे गुरुजीए तेमांथी कंबल, वस्त्र, अगर विगेरे कंइक अंगीकार कर्युं. ते पछी विविध देशांतरमांथी आवेला पंडितो साथे वाद-गोष्ठी करावी सुलताने मदकल(श्रेष्ठ) बे हाथीओ अणाव्या. तेमांना एक पर गुरुजी (जिनप्रभसूरि)ने अने बीजा पर जिनदेव

१ अहिं सूचवेल जिनदेवसूरि, जिनप्रभसूरिना पट्टधर जणाय छे. जैनग्रन्थावली[पृ. ३२, ७९]मां जिनदेवसूरिने

आचार्यने चडावी, सुलताननी आठ मदन भेरीओ वागतां, यमल शंखो फूंकातां, मृदंग, मर्दल, कंसाल, ढोल विगेरेना शब्दो घुमघुम थतां, भट्ट—चट्टो पाठ करते छते, चारे वर्णो साथे अने चारे प्रकारना संघ साथे सूरिजीने पोसहशालाए(उपाश्रये) पाठव्या. श्रावकोए प्रवेश—महोत्सव कर्यो. महादानो आप्यां.

कन्नाणय—कल्प—परिशेष रचनारा आगळ जणावेला विद्यातिलक अपरनाम सोमतिलकसूरिना शिष्य सचव्या छे; परंतु ते विद्यातिलकमुनिना ज जणावेला उल्लेख प्रमाणे प्रस्तुत जिनप्रभसूरिना शिष्य सिद्ध थाय छे. वि. सं. १३८३ (?)मां हैमनाममालानो शिलोञ्छ(नि. सा. ना अभिधानसंग्रहमां प्रकाशित) रचनार जिनदेवसूरि पण ए ज होवानुं अनुमान छे.

१ आ प्रमाणे जैन आचार्ये हाथी पर चडवुं, ए मुनिधर्म—विरुद्ध विचारणीय विचित्र घटना छे; छतां उपर्युक्त उल्लेख परथी एवो आशय समजाय छे. राजाभियोग आदिनुं अवलंबन लइ भविष्यना लाभालाभनी तरतमता विचारी समय—धर्मने मान आपी, अपवादथी एम कर्युं हशे. वि. सं. १३३४ मां प्रभाचंद्रसूरिए रचेला प्रभावकचरित्र(पृ. २५१ थी २६०)मां जणाव्या प्रमाणे—सूराचार्य नामना विद्वद्वर्य जैनाचार्य भोजराजानी सन्मुख जतां हाथी पर आरूढ थया हता अने भीमदेवे तेमनो पाटणमां प्रवेशोत्सव कर्यो

विशेषमां पातशाहे सकळ श्वेतांबर दर्शनने उपद्रवथी रक्षण करवामां समर्थ फरमान समर्पण कर्युं.

जैनश्वे.तीर्थ-रक्षा फरमान गुरुजीए तेनी नकलो चारे दिशाओमां मोकलावी. शासननी उन्नति थइ. अन्यदा सूरिजीए शत्रुंजय, गिरनार, फलोधी विगेरे तीर्थोना रक्षण माटे फरमान माग्युं. सार्वभौमे ते ते ज क्षणे आप्युं. तेने तीर्थोमां मोकलाव्युं.

वंदी-मोचन गुरुजीनुं वचन थतां ज राजाधिराजे अनेक वंदी(केदी तरीके पकडेला)ओने मुक्त कर्या हता.

फरी सोमवारना दिवसे गुरुजी राज-कुलमां पहोंच्या.

त्यारे पण तेओ हाथी पर आरूढ थया हता. चैत्यवासीओना प्राबल्यकालमां अने मुसलमानी आक्रमणना युगमां शिथिलाचार न गणातां शासन-प्रभावना अथवा दर्शन-गौरवना रूपमां ए गणायुं जणाय छे.

१ आ परथी स्पष्ट समजी शकाय तेम छे के-पहेलां जणाव्या प्रमाणे वि. सं. १३८९ मां माघ व. ७ शुक्रवारे रचायेल शत्रुंजय-कल्प, दिल्लीमां रचायो होवो जोइए अने राजाधिराजे (महम्मद तघलके) ए ज समयमां जिनप्रभ सूरिना परिचयथी तेमना वचनने मान आपी संघ-रक्षानां तथा शत्रुंजय विगेरे तीर्थोनां फरमानो आप्यां जणाय छे.

वरसता वरसादमां सुलतानने भेट्या.

महावीर-प्रतिमानुं समर्पण-सन्मान

गुरुजीना कादवथी खरडायेला पगने महाराजाए मलिक कापू(फू)र पासे श्रेष्ठ वस्त्र-खंडवडे लूहाव्या. त्यारपछी आशीर्वाद आपतां अने वर्णना-काव्यनुं व्याख्यान करतां महानरेन्द्र चित्तमां अत्यंत चमत्कार पाम्या. अवसर जाणीने सर्व स्वरूप कहेवापूर्वक भगवंत महावीरनी ते प्रतिमा मागी. एकछत्र वसुधाना अधिपतिए(महम्मद सुलताने) सुकुमार गोष्ठीओ करतां ते आपी. तुगुलकाबादना खजानामांथी असूअग(असूया करनार!) मलिकोनी खांधे स्थापन करावी, सकल सभा समक्ष पोतानी आगळ अणावी, दर्शन करी, गुरुजीने ते समर्पण करी. त्यारपछी सकल संघे महोत्सव प्रभावनापूर्वक सुखासन(पालखी)मां स्थापी ते प्रतिमाने मलिक ताजदीन-सराईमां चैत्यमां स्थापी. गुरुजीए वासक्षेप करतां महापूजाओथी पूजाय छे.

सूरि-विहार

त्यारपछी महाराजना आदेशवडे जिनदेवसूरिने बीजा चौद साधुओ साथे (पोताना प्रतिनिधि तरीके) दिल्ली-मंडलमां स्थापी, गुरुजीए अनुक्रमे महाराष्ट्र-मंडल (दक्षिण) तरफ प्रस्थान कर्युं. श्रावकोना संघ साथे जता गुरुजीने राजाधिराजे बळद, ऊंट, घोडा, गुलथिणी(तंबू), सुखासन(पालखी) विगेरे सहायक सामग्री आपी हती.

वच्चे आवेलां नगरोमां प्रभावना करता, पगले पगले संघोवडे सन्मान कराता अने अपूर्व

देवगिरि (दोलताबाद)मां

तीर्थोने नमता सूरिजी अनुक्रमे देवगिरि[१] (दोलताबाद) नगरे पहोंच्या. संघे प्रवेश-महोत्सव कर्यो. संघ-पूजा थइ.

संघपति जगसीह, साहण, मल्लदेव विगेरे संघ साथे पइट्ठाण([२]प्रतिष्ठान-पेठण)पुरमां जीवंत-

प्रतिष्ठान(पैठण) पुर-यात्रा

स्वामी मुनिसुव्रतनी प्रतिमानी यात्रा करी.

पछी आ तरफ दिल्लीमां विजयकटकमां जिनदेवसूरिए

---

१ देवगिरि(दोलताबाद)मां सं. १३८३ का. शु. १३ ने दिवसे राजसीहना सुत शाह तिहुणसिंहे उपदेशमाला-लघुवृत्ति लखावी हती (जुओ पिटर्सन रि. ३, पृ. १३१). ए विगेरे जोतां विक्रमनी चौदमी सदीना उत्तरार्धमां आ नगरमां श्रीमान् जैनो वसता होई आ नगर व्यापारादिद्वारा सुसमृद्ध अने उन्नत स्थितिमां हतुं-तेम जणाय छे. अन्यत्र मळता इतिहास परथी जणाय छे के-आ महम्मद तघलक पातशाहे आ देवगिरिने पोतानी राजधानी बनाववा दौलतथी आबाद (दोलताबाद) बनाव्युं हतुं.

२ जिनप्रभसूरिना तीर्थकल्पमां प्रतिष्ठानपत्तननो पण कल्प छे, ए उपर सूचित थइ गयुं छे.

दिल्लीमां सुलताने समर्पेल सराई, चैत्य,उपाश्रय वि.

महाराजने दीठा (सुलताननी मुलाकात करी.) महाराजे(सुलताने) बहुमान आप्युं. एक सराई आपी, तेनुं नाम 'सुलतान-सराई' स्थाप्युं.त्यां ४०० चारसो श्रावकोनां कुलो(कुटुंबो)ने वास माटे आदेश कर्यो. कलिकाल–चक्रवर्तीए (सुलतान महम्मदे) त्यां पोसहशाला (उपाश्रय) अने चैत्य कराव्युं. ते चैत्यमां ते ज (कन्नानूरना) देव महावीरने स्थाप्या. भगवंतने परतीर्थिको(अन्यधर्मीओ) तथा श्वेताम्बर अने दिगंबर भक्त श्रावको त्रिकाळ महामूल्य पूजा–प्रकारोथी पूजे छे.

एवी रीते महम्मदशाहे करेली शासननी उन्नति जोई लोको पंचम काळने पण चोथा काळ(आरा) तरीके ज अनुभवे छे.

क्लेश दूर करनारा वीरजिनेशनुं, मन अने नयनोने आनंद आपनारुं, विघ्नादिने प्रतिहत करनारुं आ बिंब यावच्चंद्र-दिवाकरौ जयवंत रहो.

कन्नाणयपुर(कन्नानूर)मां रहेल देव महावीरनी प्रतिमानो आ कल्प, जिनसिंहमुनींद्रना शिष्य मुनीश्वरे (जिनप्रभे) लख्यो छे."

---

१ जिनप्रभसूरिए ३५०३ साडात्रण हजार श्लोकप्रमाण रचेला आ तीर्थकल्पना अन्तमां पोताना नामनो निर्देश कर्यो छे,

[२]

"हवे संघतिलकसूरिजीना आदेशथी विद्यातिलकमुनि.

तेम तेमां आवेला जुदा जुदा कल्पोना अन्तमां पण प्रायशः पोतानुं नाम सूचित कर्युं छे; तेम छतां तेमां ज आवेला आ कन्नाणयनयर (कन्नानूर)–वीरना कल्पना अंतमां पोतानुं नाम स्पष्ट रीते न सूचवतां प्रकारान्तरे सूचव्युं छे. तेम करवानो हेतु एवो समजाय छे के–आ कल्पमां सूचवेली महत्त्वनी घटना साथे ए कल्पकारनो निकट संबंध होइ पोताना महत्त्वने प्रकाशित करनारी छे. जैन–शासनना गौरवने सूचवती, जैनसमाजने आनन्दजनक ए घटना वास्तविक इतिहास–प्रतिपादननी दृष्टिए एमने वर्णववी पडी छे; तेम छतां कोइ एने आत्मश्लाघा–दोषरूप न समजे एवा आशयथी पोतानी लघुता सूचववा अने ए महत्त्वनां कार्यो थवामां गुरु-प्रभाव ध्वनित करवा 'जिनसिंहमुनीन्द्रना शिष्य मुनीश्वरे आ कल्प लख्यो छे.' एवुं जणाव्युं छे. जिनसिंहसूरिना शिष्य सूरि तरीके 'जिनप्रभसूरि' नामनुं सूचन, आज तीर्थकल्प ग्रंथमां पहेलां आवी गयेल होवाथी अहिं स्पष्ट नामनिर्देश न करवा छतां आ कन्नाणयनयर(कन्नानूर)–वीर–कल्पना कर्ता तरीके ए जिनप्रभसूरि ज समजवा जोईए.

१ आ संघतिलकसूरि, रुद्रपल्लीय गच्छना गुणशेखरसूरिना शिष्य हता. तेओए विद्याभ्यास आ जिनप्रभसूरि पासे कर्यो हतो. तेमणे वि. सं. १४२२ मां सारस्वत पत्तन(पाटण)मां 'सम्य-

कन्नाणय-वीरकल्पनो परिशेष लेश कहे छे—

कृत्वसप्तति' ग्रंथ पर गद्य पद्य संस्कृत प्राकृत कथाओनी छटावाळी ७७११ श्लोकप्रमाण विस्तृत विवृति रची हती. तेना प्रारंभमां पोताना विद्यागुरु तरीके, शाह महम्मदने मुदित करनारा आ जिनप्रभसूरिनुं स्मरण कर्युं छेः—

" दि(दि)ल्ल्यां साहिमहम्मदं शककुलक्ष्मापालचूडामणिं
येन ज्ञानकलाकलापमुदितं निर्माय षड्दर्शनी ।
प्राकाश्यं गमिता निजेन यशसा साकं स सर्वागम-
ग्रन्थज्ञो जयतात् जिनप्रभगुरुर्विद्यागुरुर्नः सदा ॥"

—सम्यक्त्वसप्ततिवृत्ति (दे. ला. पु. फंड प्रकाशित श्लो० ८)

भावार्थः—जेणे दिल्लीनां शककुलना राजाओमां चूडामणि जेवा शाह महम्मदने ज्ञानकलाना समूहथी हर्षित करी पोताना यश साथे छ दर्शनोने प्रकाशमां आण्यां; सर्व आगम-ग्रन्थोना ज्ञाण अने अम्हारा विद्यागुरु ते जिनप्रभसूरि सदा जयवंत रहो.

प्रो. पिटर्सनना रि. ४ थामां आ ग्रंथनो उल्लेख थयेलो छे; परंतु त्यां आ श्लोकनो आशय समजवामां फेरफार थवाथी आ एक ज जिनप्रभसूरिने जुदा जुदा ओळखावी बीजा जिनप्रभसूरिने रुद्रपल्लीयगच्छना अने षड्दर्शनी ग्रंथ बनावनार तरीके सूचव्या छे. एनो अनुवाद अन्यत्र 'जैनधर्मना प्राचीन इतिहास ' (पं. ही. हं. भा. १, पृ. ३७) मां, 'गच्छमत-प्रबंध ' (अध्यात्म ज्ञान प्र. मंडळ प्र. पृ. ४७) मां तथा बीजा ग्रंथोमां पण गतानुगतिकताथी

भट्टारक श्रीजिनप्रभसूरिए ते वखते [वि. सं. १३८५

उतरी आवेल छे. खरी रीते जोतां खरतरगच्छना आ जिनप्रभसूरिथी अन्य रुद्रपल्लीयगच्छना जिनप्रभसूरि थयानुं त्यां सूचन नथी, तेम तेओए षड्दर्शनी ग्रन्थ रच्यानो आशय, उपरना श्लोकमांथी नीकळतो नथी.

संघतिलकसूरि, रुद्रपल्लीयगच्छना गुणशेखरसूरिना शिष्य होवा छतां तेमणे उपरनी कृतिमां विद्यागुरु तरीके जिनप्रभसूरिनुं स्मरण कर्युं छे अने पोताना एक शिष्य विद्यातिलक मुनिद्वारा कल्याणय वीर–कल्पनो परिशेष रचावी, पोताना विद्यागुरु तरफ कृतज्ञता दर्शावी छे.

२ आ विद्यातिलकमुनि, उपर जणावेला संघतिलकसूरिना शिष्य हता अने तेमनुं बीजुं नाम सोमतिलकसूरि जणाय छे. वि. सं. १३९७ मां लघुस्तवनी वृत्ति रचनारा आ विद्वाने वि. सं. १३९४ (?) मां शीलोपदेशमाला ग्रंथ पर ७००० श्लोक प्रमाण शीलतरंगिणी नामनी विस्तृत विवृति रची छे, तेमां पोताना गुरु संघतिलकसूरिनो परिचय करावतां, शकराजाने प्रतिबोध करनारा प्रस्तुत जिनप्रभसूरिद्वारा तेमने प्राप्त थयेल सूरिपद प्रमुख तत्त्वविद्यानुं सूचन कर्युं छे. पं. ही. हं.द्वारा प्रकट थयेली आवृत्तिमां अन्तिम प्रशस्तिनो भाग जोवामां आवतो नथी, परंतु अहिं प्राच्यविद्या-मन्दिरनी प्रतिमां छेः—

" तदीयचरणद्वयीसरसिजैकपुष्पन्धयः

स सङ्घतिलकप्रभुर्जयति साम्प्रतं गच्छराट् ।
शकक्षितिपबोधकृत्प्रभुजिनप्रभानुप(ग्र)हा–
न्ववाप्तगु(ग)णभृत्पदप्रमुखतत्त्वविद्यागमः ॥ ”

—प. १२९, श्लो० ९

आ वृत्तिना अंतमां तेना कर्ता तरीके विद्यातिलक अने सोमतिलक ए बंने नामो वांचवामां आवे छे—

‘ इति श्रीशीलोपदेशमालावृत्तौ स्वभावशीलपालनलीलायत-श्रीरुद्रप० भट्टा० संघ० सूरिशिष्यविद्यातिल[क]सू० विरचि०’–

“ तत्पादपद्महंसोऽधिवृत्तिं शीलोपदेशमालायाः ।
श्रीसोमतिलकसूरिः कृतवान् श्रीशीलतरङ्गिणीम् ॥
लालासाधोस्तनुजः प्रगुणनिधिः साधुसेढानुमया(?) छाजूः
शीलोपदेशस्रजममलधिया सूत्रतोऽधीत्य सम्यग् ।
अर्थं विज्ञातमस्या युग–निधि–मुरवो वत्सरे विक्रमांके
वृत्तिं नव्यां स विद्यातिलकमुनिवरात् कारयामास साधुः ॥”

–प्रा. वि. प्रति प. १२४–१२९ श्लो० १०–११

उपर्युक्त संघतिलकसूरिना बीजा शिष्य अने पूर्वोक्त सोमतिलकसूरिना लघुगुरुबन्धु देवेन्द्रसूरिए प्रश्नोत्तररत्नमालानी वृत्ति वि. सं. १४२९ मां रचेली छे. तेनी प्रांत प्रशस्तिमां पोताना वडिल गुरुबन्धुनुं नाम सोमतिलकसूरि सूचवी, तेने शीलोपदेश-माला–वृत्तिकार तरीके ओळखाव्या छे.

दोलतावादमां प्रभावना	पेथड, संहजा अने ठ. अचलनां करावेलां चैत्योनो तुरको द्वारा करातो भंग, फर-

ए उल्लेखो जोतां सामान्य(मुनि) अवस्थामां विद्यातिलक नामथी विख्यात थयेल, पाछळथी सूरिपद पछी 'सोमतिलक' नामथी प्रसिद्धिमां आव्या होय ए संभवित छे. उपर उद्धृत करवामां आवेल कन्नाणय-वीरकल्पनो परिशेष, 'विद्यातिलकमुनि' नामथी सूचव्यो होवाथी सूरिपद मळ्या पहेलां अने संभवतः जिनप्रभसूरिनी अने महम्मद तघलकनी विद्यमानतामां -विक्रमनी चौदमी सदीना अंतमां ज ते रच्यो होवो जोइए, एम आ परिशेषना अन्तिम उल्लेखथी पण विचारी शकाय छे.

१ अहिं सूचवेल सहजा, वि. सं. १३७१ मां शत्रुंजय-तीर्थना उद्धारक संघपति समरसिंहना ज्येष्ठ बन्धु जणाय छे. जेणे दक्षिण मंडलना देवगिरि(दोलतावाद)मां चोवीश जिनवाळुं मंदिर रचावी, तेमां मूलनायक तरीके पार्श्वनाथने स्थाप्या हता, तेम उपर्युक्त शत्रुंजय तीर्थना उद्धार-प्रतिष्ठा प्रसंगे त्यांथी संघ लइ शत्रुंजयमां उपस्थित थया हता; एवुं तेमना समकालीन अने परिचित निवृत्ति-गच्छना आम्र(अंब)देवसूरिए वि.सं.१३७१(?)मां रचेला संघपति समरसिंहरास (गा. ऑ. सिरीझना प्राचीन गूर्जर काव्य-संग्रहमां तथा आत्मानंद सभाना जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य-संचयमां प्रकाशित)मां तथा उपकेशगच्छना कक्कसूरिए वि. सं. १३९३ मां कंजरोटपुरमां रचेला नाभिनंदनोद्धार-प्रबंधमां वर्णव्युं छे.

मान दर्शावीने निवार्यो हतो. तेवी रीते जिनशासननी अतिशय प्रभावना करता, प्रातीच्छको(ग्रहण करवा इच्छता शिष्यो)ने सिद्धांतनी वाचना आपता, तपस्वीओने अंगप्रविष्ट अने अनंगप्रविष्ट आगमोनां तप करावता, शिष्योने तथा अपरगच्छना मुनियोने पण प्रमाण, व्याकरण,

१ रुद्रपल्लीयगच्छना संघतिलकसूरिए जिनप्रभसूरिने पोताना विद्यागुरु तरीके जणाव्या छे, ए उपर दर्शावाइ गयुं छे, ते सिवाय हर्षपुरीयगच्छना मलधारी राजशेखरसूरि, के जेणे वि. सं. १३८७ मां प्राकृत द्व्याश्रयवृत्ति तथा चतुरशीतिप्रबंध(विनोद कथा-संग्रह), षड्दर्शनसमुच्चय, नेमिनाथ-फाग विगेरे रचेल छे. तथा पूर्णिमागच्छना पं. ज्ञानचंद्रे रचेल रत्नाकरावतारिका-टिप्पनने, वि. सं. १४०१ मां मेरुतुंगसूरिना स्तंभनेन्द्र-प्रबन्ध (महा पुरुष-चरित)ने अने वि. सं. १४१० मां मुनिभद्रसूरिए रचेला शांतिनाथचरित महाकाव्यने जेणे शुद्ध कर्युं हतुं. दुर्भिक्ष-दुःखने दलनारा तथा महम्मदशाह(तघलक)थी गौरवित थयेला श्रीमान् जगत्सिंहना षड्दर्शनपोषक सुपुत्र महणसिंहे दिल्लीमां पोते आपेली वसतिमां जेमनी पासे वि. सं. १४०५ मां जेठ शु. ७ प्रबंधकोश(चतुर्विंशति-प्रबंध) ग्रंथ कराव्यो हतो--

" तत्सूनुः सामन्तस्तत्कुलतिलकोऽभवज्जगत्सिंहः ।
दुर्भिक्षदुःखदलनः श्रीमहम्मदसाहिगौरवितः ॥
तज्जो जयति सिरिभवः षड्दर्शनपोषणो महणसिंहः ।
दि(दि)ल्ल्यां स्वदत्तवसतौ ग्रन्थमिमं कारयामास ॥

काव्य, नाटक, अलंकार विगेरे शास्त्रोने भणावता, उद्भट वाद करनारा वादि-वृंदोना अतिदर्पने अपहरता सूरिजीए त्यां लगभग त्रण वर्ष व्यतीत कर्या.

शर-गगन-मनुमिताब्दे ज्येष्ठामूलीयधवलसप्तम्याम् ।
निष्पन्नमिदं शास्त्रं श्रोतृध्येत्रोः सुखं तन्यात् ॥ "

ए ज राजशेखरसूरिए, श्रीधरनी न्यायकन्दली पर संक्षिप्त विवरण रचतां, कृतज्ञताथी पोताना अध्यापक तरीके जिनप्रभसूरिनुं स्मरण कर्युं छे—

" श्रीमज्जिनप्रभविभोरधिगत्य न्यायकन्दलीं किञ्चित् ।
तस्यां विवृतिलवमहं करवै स्व-परोपकाराय ॥ "

[पिटर्सन रि. ३, पृ. २७३]

मूळ आधार न तपासतां नकलीया गतानुगतिकताथी जैन-धर्मनो प्राचीन इतिहास (ही. हं. भाग १, पृ. ३६) तथा अभिधानराजेन्द्र(भा. ४, पृ. १५००)मां अने अन्य केटलेक स्थळे केटलाक लेखकोए राजशेखर नामने बदले रत्नशेखर नाम प्रकट कर्युं छे, ते पि. रि.नी परंपराथी उतरी आवेली भूल जणाय छे.

वर्तमान साधु-समाज, आवी रीते विद्वान् आचार्यो अने मुनियो पासेथी विद्याभ्यास करतो होय,तो केटलो बधो लाभ थई शके?

१ देवगिरिनगर(दोलतावाद)मां रहेतां जिनप्रभसूरिए वि. सं. १३८७ मां भादरवा व. १२ ने दिवसे दीवाळी पर्वनी उत्पत्तिना कथनथी रमणीय पावापुरी-कल्प रच्यो हतो—

पातशाहे करेल स्मरण अने फरी आमंत्रण

आ तरफ योगिनीपुर(दिल्ली)मां शकाधिराज महम्मदशाहे कोइ अवसरे सभामां पंडितोना गोष्ठी-प्रसंगे शास्त्र-विचारमां संशय थतां गुरु(जिनप्रभसूरि)ना गुणोने संभारी कह्युं के-'जो ते भट्टारक आ समये म्हारी सभाने अलंकृत करता होत, तो म्हारा मनमां रहेला संशय-शल्यने सहजमां उद्धरत. खरेखर, बृहस्पति पण तेमनी बुद्धिथी पराजित थई भूमिने तजी शून्य

" इय पावापुरि-कप्पो दीवमहुप्पत्तिभणणरमणिज्जो ।
जिणपहसूरीहिं कओ ठिएहिं सिरिदेवगिरिनयरे ॥
तेरहसत्तासीए विक्कमवरिसंमि भद्दवयबहुले ।
पूसक्खारसीए समत्थिओ ससत्थिकरो ॥ "

'जैनसाहित्यमें इतिहासके साधन' (जैनसाहित्य-संमेलन रि. पृ. १०) मां अने अन्यत्र बीजा लेखकोए आनो रचना-समय सं. १३२७ सूचव्यो छे, ए पण परंपराथी उतरी आवेल भूल जणाय छे. चतुर्विंशति जिनानन्द-स्तुति (आ. समिति प्र.) नी भूमिका(पृ. ४०)मां ही. र. कापडियाए वि. सं. १३३७ जणाव्यो छे; परंतु छपायेल अने लखेल पुस्तकनो उपर्युक्त आधार-पाठ विचारतां ते योग्य लागतो नथी. वि. सं. १३८७ बराबर संभवे छे. जे प्रकट थइ गयेल छे. तपागच्छीय जिनसुंदरसूरिनो सं. दीपालि-कल्प, वि.सं. १४८३ मां रचायेल होइ आ पछीनो छे.

आकाशमां छूपाई गयो जणाय छे.' आवी रीते राजावडे गुरु(जिनप्रभसूरि)ना गुणोनी वर्णना(प्रशंसा) कराइ रही हती, ते ज वखते दोलतावादथी आवेला अवसरना जाण ताजलमलिके भूमितल पर भालपट्ट लगाडी विज्ञप्ति करी के-" महाराज ! ते महात्माजी (जिनप्रभसूरि) त्यां (दोलतावादमां) छे, परंतु ते नगरना नीरने सहन न करी शकवाथी अत्यंत कृश शरीरवाळा थइ गया छे.' त्यार पछी गुरुना गुणोने संभारता भूमिनाथे ए ज मीरने आदेश आप्यो के-'मलिक! जल्दी जइने दुवीरखाने फरमान लखाव अने त्यां तेवी सामग्री साथे मोकलाव के भट्टारक फरी अहिं आवे.' त्यार पछी तेणे (मलिके) तेवी ज रीते करीने फरमान मोकल्युं. अनुक्रमे दोलतावाद दीवान पासे पहोंच्युं. नगर-नायक कुतूहलखाने भट्टारकने विनयपूर्वक दिल्लीपुर प्रति प्रस्थान करवानुं पातशाहनुं आवेलुं फरमान जणाव्युं.

त्यारपछी ७ (१०) दिवसमां सज्ज थइ जेठ शु. १२ ना राजयोगमां संघ–सार्थिकोनी परिषद्थी

---

१ इतिहासनां पुस्तकोमां जेने क्युतूलघखान मलिक कयवामुदीन नामथी ओळखाव्यो छे, ते ज आ जणाय छे. (विशेष परिचय माटे जूओ--कैम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया वॉ.३ पृ.१३०, १५४, १५६, १६९)

प्रयाण अनुगमन कराता गुरुजी (जिनप्रभसूरि) अल्लावपुरमां, मोटा आडंबरपूर्वक चाल्या. अनुक्रमे

उपद्रव-निवारण स्थान स्थानमां सैंकडो महोत्सवो प्रकट करावता, विषम दुःषम काळना दर्पने दळता, वच्चे आवता सकळ देशोना मनुष्योनां नयनोने कुतूहल उपजावता, धर्मस्थानोनो उद्धार करता, दूरथी उत्कंठित थईने सामे आवता आचार्य-वर्गवडे वन्दन कराता गुरुजी राजानी भूमिना भूषणरूप अल्लावपुर दुर्ग (अलीगढ ?) पहोंच्या. तेवा प्रभावनाना प्रकर्षने न सही शकता असहिष्णु म्लेच्छोए विप्रतिपत्ति करी हती, ते जाणीने ते ज गुरुना उत्तम शिष्य, गुरु-गुणोथी अलंकृत अने राज-सभाने शोभावनार जिनदेवसूरिए सुलतानने विज्ञप्ति करी; सुलताने बहुमानपूर्वक सामे फरमान मोकली मलिक मार्फत सार्थिको (साथेनां माणसो)नी सघळी वस्तुओ पाछी अपावी हती. एवी रीते विशेषताथी जिन-शासननी प्रभावना करता सूरिजीए दोढ मास रहीने अल्लावपुरथी प्रस्थान कर्युं हतुं.

धरणीनाथे(पातशाहे) फरी पाछा सिरोह नामना महानगरमां सामे मोकलावेलां अति कोमळ

सिरोहमां सत्कार अने कुमाशवाळां देवदूष्यप्राय दस वस्त्रोवडे सूरिजी सत्कृत थया हता.

अनुक्रमे सूरिजी हम्मीरवीर(महम्मद तघलक)नी

दिल्लीमां सूरिनुं स्वागत

राजधानीना परिसर-प्रदेशमां पहोंच्या. आ तरफ लांबा वखतथी पुष्ट थयेला भक्ति-रागवडे सामे आवेला अने मात्र दर्शनथी पण जाणे अमृतकुंडमां न्हाया होय तेम पोताना आत्माने धन्य मानता आचार्य, यति-संघ अने श्रावकोना समूहथी परवरेला युगप्रधाने भादरवा शु. २ ने दिवसे राज-सभाने शोभावी. ते वखते अतिशय आनन्दित थयेली आंखोवडे अभ्युत्थान आचरता होय तेवी रीते धरणि-राज महम्मद पातशाहे कोमल वाणीथी कुशलप्रवृत्ति पूछी. स्नेहपूर्वक गुरुजीना हाथने चुंब्यो. अने अत्यंत आदरपूर्वक पोताना हृदय पर धर्यो. गुरुजीए तत्क्षण नवीन रचेल काव्य-वडे आशीर्वाद आप्यो. एथी नरेश्वरनुं मन चमत्कार पाम्युं अने महोत्सवपूर्वक विशाल पोसहशालाए मोकल्या. महीनाथे गुरुजीनी साथे जवा माटे प्रधान पुरुषोने, हिंदु राजाओने अने दीनार विगेरे मोटा मलिकोने आज्ञा करी. लांबा वखतथी उत्कंठित थयेला सेंकडो, हजारो श्रावक लोको प्रणाम करता हता. लांबा वखतथी दर्शनातुर थयेला नगरना लोको आवी मळ्या. प्रकृति(राज्यना प्रधान अधिकारीओ) अने देशना मनुष्यो कुतूहळथी एकठा थया. त्यारपछी वंदीना समूहवडे विरुदावलीथी स्तवाता अने राजाए प्रसादित करेल भेरी, वेणु, वीणा, मर्दल, मृदंग, पट्ट पटह, यमल, शंख, भूंगल विगेरे घणा प्रकारनां विपुल वाद्योना ध्वनिवडे दिशाओना अन्तरालने

वाचाळ बनावता, विप्रवर्गवडे वेदध्वनिद्वारा स्तवाता तथा गंधर्वोवडे अने सुभग-सधवाओथी मंगल-गीतवडे गवाता सूरिजी 'सुलतान-सराई' पोसहशालाए पहोंच्या. संघना पुरुषोए वर्धापन-महोत्सवो कर्या.

पर्युषणामां प्रभावना-सत्कर्तव्यो

भादरवा शु. ३ ने दिवसे सकळ संघे श्रेष्ठ महोत्सव करीने श्रीपर्युषणा-कल्प वंचाव्यो. आगमन-प्रभावनाना लेखो स्थाने स्थानमां पहोंच्या. सकळ देशना संघो रंजित थया. राजाना बंदी तरीके बंधायेला अनेक श्रावकोने लाखोना राजदेय(दंड, कर)थी मुक्त कराव्या. अने इतर लोकोने करुणावडे केदखानामांथी मुक्त कराव्या. अप्रतिष्ठित थयेलाओने प्रतिष्ठा आपी-अपावी. अनेक प्रकारे जैनधर्मनी प्रभावना करी-करावी. एवी रीते नित्य राज-सभामां जवाथी तथा पंडितो अने वादीओना वृंद पर विजय मेळववाथी प्रभावना प्रवर्तता अनुक्रमे वर्षारात्र-चोमासुं वीत्युं.

अन्यदा फागण मासमां दोलतावादथी आवती मगदूमई-

१ सुलताननी मातानुं नाम आ सिवाय अन्यत्र वांचवामां आवतुं नथी, परंतु तेणी घणी दयाळु, दानेश्वरी, उदार अने विवेकिनी हती. तेणीनुं मरण थयुं त्यारे फक्त सुलतानने ज नहि, प्रजाजनोने पण घणुं दुःख थयुं हतुं; कारण के ए सद्गुणी राज-माताना

सुलताननी माताना सन्मानमां

जहां नामनी पोतानी जननी सामे चतुरंग चमू साथे सज्ज थई जतां सुलताने अभ्यर्थना करी गुरुजीने पोतानी साथे चलाव्या. वडथूण(?) स्थानमां महाराजे जननीने भेटी सर्वने महादान आप्युं. प्रधान विगेरे सर्वने वस्त्रोनी पहेरामणी करी. अनुक्रमे महोत्सवमयी (ध्वजा—पताकाथी शणगारेली) राजधानीमां पहोंच्या. वस्त्रो, कपूर विगेरेवडे गुरुजीनुं सन्मान कर्युं.

दीक्षा विगेरे कर्तव्यो

चैत्र शु. १२ ने दिवसे राजयोगमां महाराजानी अनुमतिथी (रजा लइ) पातशाहे आपेल साइवाणनी छायामां नंदी करी, त्यां पांच शिष्योने दीक्षित कर्या. मालारोपण, सम्यक्त्वारोपण विगेरे धर्मकृत्यो कर्या. थिरदेवना नंदन ठ. मदने (वंभदत्ते) वित्त वावर्युं.

जैनबिंब-प्रतिष्ठा

आषाढ शु. १० ने दिवसे नवां करावेलां १३ बिंबोने महोत्सवपूर्वक प्रतिष्ठित कर्यां. तेमां बिंब करावनाराओए अने खास करीने साह म(स)हराजना पुत्र अजयदेवे बहु वित्त वापर्युं हतुं.

प्रभावे अनेक लोको राज—प्रकोपथी बची गया हता [जूओ केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया वॉ. ३, पृ. १६०].

सुलताने समर्पेल भट्टारकसराईमां प्रवेशोत्सव

अन्यदा 'गुरुजीने दूरथी हंमेशां पासे आववामां कष्ट छे.' एम विचारी सुलताने खुद पोते ज पोताना प्रासाद(महेल) पासे शोभतां भवनोवाळी अभिनव(नवी) सराई आपी. श्रावक-संघने त्यां वसवा माटे फरमाव्युं. खुद सुलताने तेनुं 'भट्टारक-सराई' एवुं नाम कर्युं. पातशाहे त्यां ज वीर-विहार अने पोसह-शाला करावी. त्यारपछी वि. सं. १३८९ वर्षे आषाढ वदि ७ ने दिवसे सुमुहूर्त्ते महीपतिए फरमावेल गीत, नृत्य, वाद्य विगेरे विभूतिद्वारा प्रकट कराता असाधारण महान् उत्सवपूर्वक, खुद सुलतानवडे अपाता महादानपूर्वक, मंगल-गीत गवातां भट्टारके(जिनप्रभसूरिजीए) पोसहशालामां प्रवेश कर्यो. प्रीति-दानवडे विद्वानोने संतुष्ट कर्या हता. दानद्वारा दीन, अनाथ आदि लोकोनो उद्धार कर्यो हतो.

ते पछी [वि. सं. १३९० मां] मागशिर मासमां पूर्व दिशा तरफ जय-यात्रा माटे प्रस्थान

१ ईस्वी सन् १३३३ [वि. सं. १३९०]मां महम्मद तघलके पूर्वदेशमां विजय-यात्रा माटे प्रयाण कर्युं हतुं, एम अन्यत्र उल्लेख मळे छे [जूओ केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया वॉ. ३, पृ. १४७-१४८].

मथुरा तीर्थनो उद्धार वि. करता महाराजाए(पातशाहे) सूरिजीने प्रार्थना करी पोतानी साथे चलाव्या हता. सूरिजीए ठेकाणे ठेकाणे बंदी-मोचन विगेरे द्वारा जिनधर्मनी प्रभावना करावी हती. मथुरा[1] तीर्थनो उद्धार कर्यो हतो; तथा दानादिवडे ब्राह्मणो, गरीबो विगेरेने संतुष्ट कर्या हता.

हस्तिनापुर-यात्रा-फरमान ' नित्य प्रवासी गुरुजीने स्कंधावार(लश्करी कूच)मां कष्ट थाय छे. ' एम मानता महीनाथे (महम्मदे) खोजेजहां[2] मलिक साथे सत्य प्रतिज्ञावाळा गुरुजीने आगरानगरथी राजधानी(दिल्ली) तरफ पाछा मोकल्या हता. हस्तिनापुरनी यात्रानुं फरमान लइ मुनिपति पोताना स्थानमां आव्या हता.

---

१ जिनप्रभसूरिए विविध तीर्थोना कल्पोमां मथुरा-कल्प पण रच्यो छे [जूओ ए. सो. बेंगाल प्रकाशित तीर्थ-कल्प पृ. ६९-६४].

२ महम्मद तघलकना मान्य एक प्रधान पुरुष तरीके 'ख्वाजाजहान्' नुं नाम इतिहासमां बहु प्रसिद्ध छे [जूओ केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया वॉ. ३, पृ. १३४, १४०, १४३, १४८, १५२, १५८, १७२].

संघ साथे हस्तिनापुरमां प्रतिष्ठा महोत्सव

त्यारपछी चतुर्विध संघ मेळवी शाह बोहित्थने वाहड पुत्र साथे संघपतिनुं तिलक करी, आचार्य विगेरे परिवार साथे गुरुजीए शुभ मुहूर्त्ते हस्तिनापुरनी यात्रा माटे प्रस्थान कर्युं हतुं. संघपति बोहित्थे ठेकाणे ठेकाणे महोत्सवो कर्या हता. तीर्थभूमिए पहोंच्या, वद्धापणुं कर्युं. नवां करावेलां शांति, कुंथु अने अरजिननां

---

१ जिनप्रभसूरिए संघ साथे आ यात्रा, शकाब्द १२५५ (वि. सं. १३९०) मां वैशाख शु. ६ ने दिवसे करी हती, ते वखते तेओए गज(हस्तिना)पुरनुं स्तोत्र रच्युं हतुं; तेना अन्तमां ए स्पष्ट सूचन कर्युं छे—

"इत्थं पृषत्क–विषयार्कमिते शकाब्दे
वैशाखमासि शितिपक्षगषष्ठतिथ्याम् ।
यात्रोत्सवोपनतः संघयुतो मुनीन्द्रः
स्तोत्रं व्यधाद् गजपुरस्य जिनप्रभाख्यः ॥"

—तीर्थकल्प [का. प. ६४–६५]

पिटर्सन रि. ४ था [पृ. ९९] मां उपर दर्शावेल श्लोक टांक्यो छे, पण त्यां वाणवाची पृषत्क शब्द न समजायाथी पृथत्क [थत्क्व] एवो अशुद्ध पाठ छपाव्यो जणाय छे.

उपकेशगच्छीय कक्कसूरिए वि. सं. १३९३ मां कंजरोट-

बिंबोने गुरुजीए त्यां प्रतिष्ठित कर्यां अने अंबिकानी प्रतिमा स्थापी. संघपतिए चैत्य–स्थानोमां संघ–वात्सल्य विगेरे महोत्सवो कर्या हता अने संघे वस्त्र, भोजन, तांबूल विगेरे द्वारा याचकोना समूहने संतुष्ट कर्यो हतो.

पुरमां रचेला नाभिनंदनोद्धार–प्रबंधमां जणाव्युं छे के–वि. सं. १३७१ मां शत्रुंजयतीर्थनो उद्धार करनारा सुप्रसिद्ध समरसिंहे पातशाह(ग्यासुदीन)ना फरमानथी संघपति थइ घणा संघ–पुरुषो अने जिनप्रभसूरि साथे मथुरा अने हस्तिनापुरमां तीर्थ–यात्रा करी हती. जे समरने पातशाह ग्यासुदीने(तघलके) पोताना पुत्र तरीके अने तेना पुत्र उलु[ग]खाने विश्वासपात्र पोताना भाइ तरीके स्वीकारी तिलंगदेशनो स्वामी(सूबो) बनाव्यो हतो; अने जे समराशाहे सुलतान(ग्यासुदीन तघलक)ना बंदी बनेला पांडु(पांड्य) देशना स्वामी वीरवल्ल (वीर बल्लाल) राजाने पातशाह पासेथी मुक्त करावी, पुनः तेने तेना देशमां स्थपावी राज-संस्थापनाचार्यता उपार्जी हती. जेणे तुर्कोथी बंदी तरीके पकडायेल लाखो मनुष्योने मुक्त कराव्या हता, अनेक राजा–राणाओ अने व्यवहारियो पर पण अनेक वार उपकार कर्या हता, जेणे सर्व देशोमांथी बोलावी श्रावकोना कुटुंबोने तिलंगदेशमां स्थापी, उरंगलपुरमां जिनालयो करावी जैनशासननुं महत्त्व वधार्युं हतुं.

आमां सूचवेल उल्लगखान, ए प्रस्तुत लेख साथे संबंध धरा–

पुनः स्थापना

यात्राथी आवतां ज गुरुजी(जिनप्रभसूरिजी)ए वैशाख शु. १० ना दिवसे सकळ दुरित अने महावीर-बिंबनी विघ्नो दूर करनार ते ज श्रीमहावीरना बिंबने साहिराजे(पातशाहे) करावेला विहार (जैनमंदिर)मां श्रेष्ठ महोत्सवपूर्वक स्थाप्युं हतुं, त्यारथी ते संघद्वारा विशेष प्रकारे पूजाय छे.

दिग्‌विजय यात्राथी महाराज(पातशाह) पाछा आवतां चैत्योमां अने वसतिमां उत्सवो प्रवर्ते छे. सार्वभौम उत्तरोत्तर मान आपीने गुरुजीनुं सन्मान करे छे. दरेक दिशामां सूरि अने सार्वभौमना प्रभावक श्रेष्ठ यशः—पटहो वागे छे.

पातशाही फरमानथी जैन समाज अने जैन तीर्थोमां निर्भयता

शक—सैन्यवडे दिक्—चक्र पराभव पामवा छतां पण खरतरगच्छना अलंकाररूप गुरु(जिनप्रभसूरि)ना प्रसादथी राजाधिराजे आपेल फरमान हाथमां राखनारा श्वेतांबरो अने दिगंबरो सर्व देशोमां उपसर्ग विना विचरे छे. गुरुजीए फरमान ग्रहण करीने श्री शत्रुंजय, गिरनार तथा फलोधी विगेरे तीर्थोने अकुतोभय—निर्भय कर्यां छे.

वनार महम्मद तघलक जणाय छे. जूओ केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया [वॉ. ३, पृ. १२९–१३४]

हस्तिनापुरमां पोते करेली आ प्रतिष्ठा वि. सं. १३९० मां

प्रभावक जिनप्रभसूरिना प्रभावथी प्रवर्तेला धार्मिक महोत्सवो

ए विगेरे कृत्योवडे पालित्तसूरि, मल्लवादी, सिद्धसेन दिवाकर, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्रसूरि प्रमुख पूर्वपुरुषोने उद्योतित कर्या—दीपाव्या छे. बहु कहेवाथी शुं ? सूरि–चक्रवर्ति(जिनप्रभसूरि)ना गुणोथी सुलतान आवर्जित(अनुकूळ—अनुरागी) थतां सकळ धर्म—कार्योना आरंभो प्रकट रीते प्रवर्ते छे. प्रतिप्रभाते चैत्यो अने वसति(उपाश्रयो)मां यमल-शंखो वागे छे.

वीर—विहारमां धार्मिकोवडे मर्दल, मृदंग, भूंगल, ताल विगेरे वाद्योनी गंभीर ध्वनि साथे प्रेक्षणकोथी सारभूत महापूजाओ कराय छे. श्रीमहावीरनी आगळ भव्यलोकोवडे उद्ग्रहण करावातो(उखेवातो) कपूर अने अगरना परिमलनो उद्गार(सुवास), दिक्चक्रने सुवासित करे छे.

हिंदुओनां राज्यमां जेम होय तेम, दूषम—सुषमकाळ-(चोथा आरा)नी जेम; अनार्यराज्यमां पण अने दूषमकाळमां पण जिन—शासननी प्रभावनामां परायण जैन मुनिओ स्वेच्छाए संचरे छे; एटलुं ज नहि, इतर पांचे दर्शनवाळा, परिवार साथे

थयेली होइ, ते पहेलां वि. सं. १३८९ मां पूर्ण करेल तीर्थकल्पमां सूचवेला हस्तिनापुर—तीर्थकल्पमां ए वर्णन न आपी शके ए समजी शकाय तेम छे.

गुरुजीना पादपीठमां किंकरोनी जेम आळोटे छे. प्रातीच्छकोनी जेम गुरुजीना वचनने स्वीकारे छे. आ लोक अने परलोकना कार्यना अभिलाषी परतीर्थिको(अन्यधर्मीओ) गुरुजीना दर्शन माटे उत्सुक थइने निरंतर वसतिना द्वारदेशने सेवे छे.

महासुलताननी सभामां सूरिजीनो वचन-प्रभाव

राजानी अभ्यर्थनाथी गुरुजी हंमेशां राज-सभामां जाय छे. बंदि-वर्गने मुक्त करावे छे. महा-पुरुषोना चरितने आचरता, सुचारित्रने पाळनारा सूरिजी, जिनवचनने अनुसरतां युक्तियुक्त वचनोवडे निरंतर राजा (सुलतान)ना मनमां मोटुं कुतूहल उपजावे छे. पगले पगले प्रभावना प्रवर्ते छे. गंगा-जळ जेवा स्वच्छ चित्तवाळा सूरिजी पोतानी यश-चंद्रिकावडे दिशाओना अंतराल(मध्यभाग)ने धवल-उज्ज्वल करे छे. पोतानां वचनामृतोवडे जीवलोकने उज्जीवित करे छे. स्वदर्शनी अने परदर्शनीओ समग्र व्यापारोमां गुरुजीनी आज्ञाने शिर पर स्थापी वहन करे छे. युग-प्रधान आचार्य(जिनप्रभसूरि) अनन्यसाधारण शैलीवडे स्व-पर-सिद्धान्तनुं व्याख्यान करे छे.

उपसंहार

आवा प्रकारना प्रकट रीते अनुभवाता, नित्य प्रवर्तता प्रभावनाना प्रकर्षो, अल्पमतियोवडे केटलाक कही शकाय ? मात्र 'आ सूरिवर करोडो वर्ष जीवता रहो अने लांबा वखत

सुधी श्रीजिन-शासननी प्रभावना करो.' '

श्रीजिनप्रभसूरिना गुणोनी आ लेश स्तुति, प्रभावनाना अंगरूप छे-एम विचारी कन्नाणय-वीरकल्पनो[२] परिशेषमां कहेवामां आवी छे."

---

१ आ कथन, जिनप्रभसूरिजीना जीवितकालमां उच्चरायुं होय, एम विचारतां जणाय छे.

२ तपागच्छना पं. शुभशीलगणिए वि. सं. १५२९(?)मां रचेला पंचशतीप्रबंध-कथाकोश(ह. प्रति)मां जणाव्युं छे के-" एक वखते सुलताने कान्हड गाम भांग्युं. त्यांनी वीरनी प्रतिमाने लावीने यवनोए दिल्लीमां मसीतने बारणे पगथियाने ठेकाणे राखी हती. त्यारपछी एक वखते सुलतान, सूरिना खभा पर हाथ राखता जेटलामां मसीतमां प्रवेश करे छे; तेवामां सूरि, वीरनी प्रतिमाने जोइने एक तरफ ऊभा रह्या. त्यारे सुलतान बोल्या के-' एम केम कर्युं ? ' जिनप्रभसूरिए कह्युं के-' प्रभु ! देव छे. ' सुलतान बोल्या के-'आ भूत शुं जाणे ?, कंइ नहि.' सूरिए कह्युं के-' आ देव सत्यवादी ज्ञानी छे.' राजा बोल्या-' तो बोलावो. ' सूरिए कह्युं के-' स्वामिन् ! ज्यारे भूतनुं स्थानक उपदेश माटे करावाय, त्यां मंडावाय, पूजाय, त्यारपछी पूछाय, त्यारे पूछेलुं कहे. ' त्यारपछी स्वामिए(पातशाहे) देवगृह(मंदिर) कराव्युं. ज्यारे प्रतिमा न उपडी त्यारे सूरिए कह्युं के-' तमे हाथ लगाडो, जेथी उठे.' त्यारपछी तेवी रीते कार्य करतां ते प्रतिमाने देवालयमां

[३]

जिनप्रभसूरिनां चमत्कारी वृत्तान्तो.

पीरोज सुलतान पर प्रभाव.

जिनप्रभसूरि पछी लगभग पोणोसो वर्ष पछी थयेला, तपागच्छना पं. सोमधर्मगणिए वि. सं. १५०३ मां रचेली सं. उपदेशसप्ततिमां जिनप्रभसूरिनां केटलांक चमत्कारी वृत्तान्तोनुं सूचन कर्युं छे; त्यां महम्मद सुलतानने बदले पीरोज सुलताननुं नाम जणाव्युं छे—

" कलियुगमां केटलाक सूरिओ, जिन–शासनरूपी भवनमां दीवा जेवा थइ गया; आ विषयमां, म्लेच्छपतिने प्रबोध करनार जिनप्रभसूरिनुं निदर्शन(दृष्टांत) कहेवाय छे––

पद्मावतीथी वर[दान] प्राप्त करनारा, राज–मान्य जिनप्रभसूरिजी [वि. सं.]१३३२ वर्षमां थइ गया. एक वखत

स्थापी, श्रेष्ठ भोगवडे पूजावीने वच्चे वस्त्र बंधावतां राजा जे जे संबंधी पूछे तेना तेना उत्तर आपती हती. २१ प्रिय कह्यां. सुलतान हर्षित थयो. शंकाथी वस्त्र दूर करतां पण ते ज प्रमाणे कह्युं; तेथी विशेष करीने वीर ए प्रमाणे ख्याति थइ.

ए प्रमाणे कान्हडा महावीरने स्थापन करवामां जिनप्रभाचार्यनो संबंध दर्शाव्यो. "

तेओ योगिनीपुर(दिल्ली)मां चोमासुं रह्या हता; के ज्यां राजा पीरोज[1] सुलतान विराजे छे.

ते नगरमां एक वखते उपद्रव करनारा म्लेच्छोने, तेओए (जिनप्रभसूरिए) डोक मरडीने तेने साजी करवी विगेरे प्रकारोथी शिक्षा करी हती. विश्वने विस्मय करनारा ते वृत्तान्तथी ते आचार्य, राजाथी लइ गोपाळपर्यन्त जगत्मां विख्यात कीर्तिशाळा थया. राजावडे बोलावायेला ते आचार्य, प्रतिदिन धर्म-कथनपूर्वक अवसरोचित वाक्योवडे ते राजाने प्रसन्न करता हता.

विजययंत्र-महिमा

ते राजाए विजययंत्रनो आम्नाय पूछ्यो. सूरिए तेने कह्युं के-ते तेवाओनो विषय नथी. 'हे राजन् ! जेनी समीपमां आ यंत्र होय तेने देवताइ अस्त्र पण लागे नहि अने रोषवडे रातो थयेलो पण वेरी तेने पीडा करी शके नहि.' ए प्रमाणे सांभळ्या पछी राजाए ते यंत्र करावीने परीक्षा माटे एक बकराना कंठ पर बंधाव्यो. तेणे

१ महम्मद तघलक पछी दिल्लीनी गादीए आवनार पीरोज-शाहनो राज्य-समय वि. सं. १४०७ थी १४४४ मनाय छे. जिनप्रभसूरिजी तेना राज्यअमलमां विद्यमान होवानुं शंकित छे, एथी आ वर्णवेल घटना महम्मद तघलकना राज्यकालमां-पीरोज तघलकना युवराज-कालमां संभवे छे.

मूकावेला तरवार विगेरे अस्त्रोना प्रहारो, बख्तर धारण करेल होय तेम तेना शरीरे लागता न हता. ए विजययंत्रने छत्रदंड पर बांधीने, तेनी नीचे उंदर राखीने कौतुकी ते राजाए बिलाडीने प्रेरी–हकारी हती. ते उंदरने जोवा मात्रथी वैर उत्पन्न थवाथी तेना तरफ दोडी, पासे रहेलाओए तेने प्रेरी, तो पण ते (विलाडी) ते विजययंत्रवाळा छत्रनी छायामां आवी नहि. ए बंने अद्भुत जोइने ते राजाए ताम्रमय(तांबानां) बे यंत्रो करावीने तेमांथी एक यंत्र पोतानी पासे रखाव्युं, अने एक पूज्य गुरुजीने भेट कर्युं; केमके सज्जनो उपकार कदापि भूलता नथी. त्यारपछी आ राजा, स्थान, यान, घर, गाम, सभा, विजन (एकांत) के वनमां क्यांय गुरुजीने मूकतो नहि (साथे ज राखतो हतो.)

एक वखते सुलताने, गुजरातमां जवानी इच्छाथी गामनी बहार एक वडनी नीचे प्रस्थान कर्युं वडनुं चालवुं हतुं. शीतळ, लीली छायावाळा विशाळ

१ ही. र. कापडियाए मेरु० चतु० स्तुतिनी भूमिका[पृ. ४९]मां जणाव्युं छे के–' तेमणे म्लेच्छोना आक्रमणथी पीरोज सुलतान(पीरोजशाह ?)नुं केवी रीते विजययन्त्रद्वारा रक्षण कर्युं × × चोरेली साधुनी सिक्किका(?)नी पुनः प्राप्ति × ×' आवो आशय उपदेशसप्ततिमांथी केवी रीते काढयो, ते समजी शकातुं नथी.

ते वडने वारंवार जोतां सुलताने गुरुजीने हृदयमां रहेलुं पूछ्युं के–' सूरि ! आ वड सारो छे.' तेना मनना भावने जाणनारा सूरिजी पण बोल्या के–' जो तमारी चाहना होय तो आ वडने साथे चलावीए.' राजाए ते स्वीकारतां राजा चाल्यो त्यारे ते वड पण सूरिना प्रभावथी सेवकनी जेम चालवा लाग्यो. ते वडने चालतो जोइ लोको प्रफुल्लित आंखोवाळा थइ पगले पगले सूरीन्द्रनी अने नरेन्द्रनी प्रशंसा करता हता. केटलोक मार्ग ओळंग्या पछी राजाए गुरुजीने कह्युं के–' आ वडने विसर्जन करो. आने बहु फेरो थयो.' सूरिजीए वडने कह्युं के–' राजाने नमीने तुं स्व–स्थानमां जा.' वडे पण सुशिष्यनी जेम तेवी ज रीते कर्युं.

राजा ज्यारे मरुस्थली(मारवाड)मां आव्यो, त्यारे

---

१ तपागच्छना पं. शुभशीलगणिए वि. सं. १९२९ (?) मां रचेला पंचशतीप्रबंध–कथाकोश[ह. लि. प. १]मां सूचव्युं छे के–" एक वखते सुलतान गरमीनी ऋतुमां नगर बहार वडलाना झाड नीचे रह्या हता. छायावाळा ते वृक्षने जोइ जिनप्रभ आगळ बोल्या के–' जो आवा प्रकारनी शीतळ छाया साथे आवे तो अत्यन्त सुख थाय.' त्यारपछी सूरिए कह्युं के–' वृक्ष साथे आवशे.' त्यारपछी सुलतान चालतां ते झाड पण सांझ सुधी चाल्युं, पाछळ स्थान जोयुं, त्यां न जणायुं. पछी वृक्ष(वड)ने विसर्जित कर्यो, पोताने ठेकाणे गयो. राजा चमत्कार पाम्यो. "

त्यांना नगरजनो भेटणां हाथमां लइने ठेकाणे ठेकाणे सामे आवता हता; तेमने सामान्य वेषवाळा जोइने राजाए ते गुरुजी (जिनप्रभसूरि)ने पूछ्युं के–' आ लोको लुंटायेलानी जेम आवा प्रकारना केम जोवामां आवे छे? ' [सूरिजीए जणाव्युं के–] राजन्! देशना आचारथी अने घणा द्रव्यना अभावथी अहिं प्राये आवा प्रकारना लोको होय छे; बीजुं कंइ कारण नथी. त्यारपछी प्रत्येक नर दीठ दिव्य पांच पांच वस्त्रो अपाव्यां अने प्रत्येक स्त्री दीठ सोनाना बब्बे टंका (चलणी नाणुं) अने साडी अपावी.

ए प्रमाणे मेघनी जेम लोकनी आशाने पूर्ण करता [जिनप्रभसूरि] अनुक्रमे पत्तन (पाटण) पासे जंघराल नामना मोटा नगरे पहोंच्या. त्यां पहेलेथी तपापक्षना सोम-

---

१ त. शुभशीलगणिए कथाकोश[ह. लि. प. २]मां जणाव्युं छे के–" एक वखते सुलतान, मरुस्थली(मारवाड)मां आव्यो हतो. ज्यारे गामडानी नारीओ अक्षत(चोखा) आणी वधावा लागी, त्यारे सुलताने धन आपीने कह्युं के–' स्त्रीओ आभरणथी रहित केम जोवामां आवे छे? कोइवडे लुंटाइ छे? अथवा दंडाइ छे के शुं? ' सूरिए कह्युं के–' आ मरुस्थली रुक्ष अने धनहीन छे.' त्यारपछी सुलताने प्रत्येक स्त्री दीठ सो सो दीनार (सोनामहोर) आपी जुहार कर्यो. "

प्रभसूरि हता, तेमने मळवा माटे सूरिजी(जिनप्रभ) नगरमां गया. त्यां सोमप्रभसूरिजीथी अभ्युत्थान, आसन विगेरे द्वारा बहु मानित थयेला जिनप्रभसूरि तेमना प्रत्ये बोल्या के–'तमे आराध्य छो, के जेमनी आवा प्रकारनी क्रिया छे.' तेओ (सोमप्रभसूरि) पण प्रत्युत्तररूपे बोल्या के–' प्रभो ! अमारी प्रशंसा शी करवानी होय ?, तमे धन्य छो, के जेना आधारे जिन–शासन जागे छे.'

ए प्रमाणे प्रीतिपूर्वक ते बंने आचार्यो ज्यारे परस्पर वात करता हता, तेवामां शालामां जे कौतुक थयुं ते कहेवामां आवे छे–' एक साधुनी सिक्किका(सीकली)ने उंदरे विनष्ट करी हती, ते मुनिए गुरुजीनी आगळ आवीने राव करी. ते वखते जिनप्रभसूरिजीए विद्याओवडे आकर्षेला, शालानी अंदरना सर्व उंदरो उपस्थित थया. म्हों ऊंचेथी नमावी, बे हाथ (आगळना बे पग) जोडी भय–भीरु ते उंदरो विनीत शिष्योनी जेम गुरुजीनी आगळ ऊभा रह्या. [जिनप्रभसूरिजीए कह्युं के-] ' हे उंदरो ! सांभळो, जे कोइ अपराधी(गुन्हेगार) होय, ते रहो अने बीजा बधा जाव, स्वेच्छापूर्वक हरो–फरो.' ए प्रमाणे आचार्य(जिनप्रभसूरि)ना वचनने सांभळी सघळा उंदरो त्वराथी पग उपाडता कूदीने गया अने एक तो चोरनी जेम आगळ रह्यो. सूरीन्द्रे तेने पण कह्युं के–' डर नहि, धीरता धारण कर. अमे साधुओ छीए, कोइने पण पीडा करता नथी.'

एम कहीने तेने पण शालामांथी बहार काढ्यो. ए विगेरे कौतुकोवडे तेओए (जिनप्रभसूरिजीए) साधु-वर्गने घणा वखत सुधी प्रसन्न कर्यो हतो.[१]

---

१ जिनप्रभसूरि-प्रबंध(व. का.)मां जणाव्युं छे के " गामनी सीममां श्रेष्ठ शोभावाळा आंबाना झाड नीचे गया पछी सुलताने सूरिजीने कह्युं के-' आ वृक्षनी छाया केवी सारी छे ? ' त्यार पछी ते वृक्ष साथे चाल्यो हतो. बीजा प्रयाणमां राजाए सूरिने कह्युं के-' आ आगळथी साथे शा माटे आवे छे ? ' सूरि- ' तुम्हारी मया हुइ तो पाछळ वधावणुं करे '

जि. प्र. (व.का.)-मार्गमां सुल.-' आ स्त्रीओ आभरणो, श्रेष्ठ वेष, पट्टकूल वि.थी रहित केम जोवामां आवे छे ? शुं कोइए लूंटी दंडी छे के शुं ? ' मं.-' आ देश निर्द्रव्य छे, तेथी एवा वेषवाळी छे. ' त्यार पछी सुलताने प्रत्येक स्त्री दीठ पांच पांच सोनाना टंको भाजनमां नाखी सर्वने जोहार कर्या. पाटण सुधी सघळा य मार्गमां एवी रीते कर्युं. "

जि. प्र. (व. का.) मां जणाव्युं छे के-" सैन्य जंवरा-ळमां बहार उतर्युं. जिनप्रभसूरि गाममां तपापक्षना पूज्य सोमप्रभ-सूरिजीनी पोसहशाळामां उतर्या. सोमप्रभसूरिए जिनप्रभसूरिनी प्रशंसा करी के-' भगवन् ! तम्हारा प्रसादे करीने जिनधर्म जयवंत वर्ते छे. ' त्यार पछी जिनप्रभसूरिए कह्युं के-' अम्हे अत्यंत

अविरती छीए. सुलतानना सैन्य साथे प्रतिदिन परवश तरीके जवाय छे. अम्हे तम्हारा पगनी रज सरखा पण नथी. हालमां चारित्र तम्हारा आधारे छे.'

तेवामां साधुओए प्रतिलेखन करवा माटे सिक्किका (झोळी) उतारी. एक साधुनी सिक्किकाने उंदरे करडेली जोइ जिनप्रभसूरिए रजोहरण भमाडीने कह्युं के–सघळा उंदरो अहिं आवो. तम्हारा-मांथी जेणे सिक्किका करडी होय ते रहो, बीजा जाओ. एक रह्यो, बीजा गया. तेने देश-त्याग कराव्यो. ते प्रतोळी(पोळ) मूकी बीजे गयो."

अहिं सूचवायेल जंघराल स्थान, ऐ. दृष्टिए महत्त्ववाळुं जणाय छे. अणहिलवाड पाटणमां भीमदेवनुं राज्य हतुं, ते समयमां–वि. सं. १२९५ मां दीशापाल आम्नाय(डीसावाल ज्ञाति)ना वीर नामना सुश्रावके जगच्चंद्रसूरि(तपागच्छाधार)ना वचन-श्रवणथी ज्ञातासूत्र विगेरे अंगोनी ताडपत्रीय प्रति लखावी हती; जेनुं आ जंघराळ स्थानना युगादिजिन–मंदिरमां देवेन्द्रसूरिए वि. सं. १२९७ मां संघ आगळ व्याख्यान कर्युं हतुं (जे ताड प्रति खंभातमां प्राचीन शांतिनाथजी जैन भंडारमां विद्यमान छे).

उपर्युक्त सोमप्रभसूरिजीनो जन्म वि. सं. १३१० मां, दीक्षा वि. सं. १३२१ मां, सूरिपदप्रतिष्ठा वि. सं. १३३२मां अने स्वर्गगमन वि. सं. १३७३मां थयुं हतुं. आ सोमप्रभसूरिना पट्टने शोभावनार सोमतिलकसूरिने आचार्यपद वि. सं. १३७३मां

शत्रुंजयमां रायणथी दूध वरसाववुं.

सूरिजी(जिनप्रभसूरि)ना उपदेशवडे त्यार- पछी सुलतान, सैन्य अने संघ साथे शत्रुंजय पर्वत पर गयो हतो. त्यां ते वखते संघपति तरीकेनां कृत्यो करनारा

जंघरालनगरमां वीर-जिनालयमां, त्यांना संघपति गजे २९००० टंकोना व्ययद्वारा करेला महोत्सवपूर्वक प्राप्त थयुं हतुं-एम मुनि-सुंदरसूरिनी वि. सं. १४६६ मां रचायेली गुर्वावली [य. वि. ग्रं. श्लो० २६६, २७२-२८४] विगेरे परथी जणाय छे.

तपोटमतकुट्टनशतक (वडोदरामां प्राच्यविद्यामंदिरमां तथा आत्मारामजी जैन ज्ञानमन्दिरमां ह. लि. प्रति) जेवी कृति रची तपागच्छना तत्कालीन साधुओ प्रत्ये गमे ते कारणे वैमनस्य दर्शावनार जिनप्रभसूरि, तपागच्छना उपर्युक्त आचार्य सोमप्रभसूरिने प्रीतिपूर्वक मळ्या होय तो खुशी थवा जेवुं छे; परन्तु बीजी रीते विचारतां ए घटना शंकास्पद लागे छे. वि. सं. १३३२ मां सूरिपद प्राप्त करनार सोमप्रभसूरिनो स्वर्गवास वि. सं. १३७३ मां थयेल होवानुं तपागच्छ-पट्टावली विगेरे साधनोथी जणाय छे. तथा महम्मद तघलक वि. सं. १३८१ मां दिल्लीना तख्त पर आरूढ थयानुं, तथा जिनप्रभसूरिए तेनी प्रथम मुलाकात वि. सं. १३८९ मां कर्यानुं विश्वस्त साधनो द्वारा पहेलां (पृ. २३, ३२) सूचवाई गयुं छे. अन्य साधनो द्वारा सुलतान महम्मद तघलकनुं

राजा पर सूरिए रायण झाडथी दूध वरसाव्युं हतुं.

गुजरातमां आगमन वि. सं. १३९० पहेलां थयुं होय तेम जणातुं नथी. ए सर्वनो विचार करतां सोमप्रभसूरिना पट्टधर सोमतिलकसूरि साथे जिनप्रभसूरिनो समागम संभवे छे.

१ त. शुभशीलगणिए वि. सं. १५२१ मां रचेला पंचशतीप्रबंध कथाकोश[ह. लि. कथा ९]मां जणाव्युं छे के— "एक वखते सुलतान बोल्या—'जेवी रीते चमत्कारी तीर्थ कान्हड महावीर छे, तेवी रीते बीजुं पण कोइ छे ?' त्यारपछी सूरिए शत्रुंजयतीर्थनुं व्याख्यान कर्युं. त्यारपछी संघ अने जिनप्रभसूरि साथे सुलतान शत्रुंजय गयो, त्यां तीर्थ जोइने ते ज्यारे चमत्कार पाम्यो, त्यारे सूरिए कह्युं के—'आ रायणने जो मोतीओवडे वधाववामां आवे तो क्षीर(दूध) झरे छे.' त्यारपछी तेम करवामां आवतां (रायणने मोतीओथी वधावतां) रायण दूध झरी. राजाने संघपतिनो आचार कराव्यो. त्यां लखाव्युं के—'जे आ तीर्थनी अवज्ञा करशे, ते पातशाहनी अवज्ञा करे छे.' त्यारपछी त्यां पाषाणोवडे ७ रेखाओ करावी. त्यारपछी नीचे उतरीने सर्व लोको प्रत्ये कह्युं के—'पोतपोताना देवने लावो.' त्यारपछी लोको महादेव, विष्णु, ब्रह्मा, जिन विगेरे पोतपोताना देवने लाव्या. राजाए सर्व देवो मंडावीने पूछ्युं के—'आ बधा देवोमां वृद्ध(वडा)देव कया छे ?' ज्यारे लोको न बोल्या त्यारे जिनप्रतिमाने मुख्य स्थानमां बेसारीने हरि, ब्रह्मा विगेरेनी प्रतिमाओने

गिरनारमां. रैवतक(गिरनार)मां पण एवी रीते गुरुजी साथे यात्रा करी सुलतान श्रेष्ठ उत्सवपूर्वक योगिनीपुर-(दिल्ली)मां पहोंच्या हता.

चोतरफ आसपास राखी अने पोते आसन पर बेसीने चोत-रफ हथियार सहित सेवकोने स्थापीने सुलतान बोल्या के–' कोण वृद्ध(वडो) कहेवाय ? ' लोको बोल्या के–' स्वामी ज वृद्ध (वडा) छे. ' सुलताने कह्युं के–' जो एम ज छे, तो जिन, शस्त्रोथी रहित होवाथी वृद्ध(वडा) छे अने हथियारवाळा सर्व सेवको छे. ' त्यारपछी लोकोए कह्युं के–' प्रभु(पातशाह)नुं वचन प्रमाण छे. ' "

जि. प्र. (व. का.)–" सुलताने सूरिजीने पूछ्युं के–' सर्व पर्वतोमां मोटो पर्वत कयो ? ' सूरिजीए शत्रुंजय कह्यो. त्यां गया. सु०–'आनो शो प्रभाव छे?' सूरि–'जे कोई संघपतिनो आचार करे तेना उपर दूधवडे झरे छे. ' सुलतान तेम करी रायणना झाड नीचे रह्यो. सर्व तुरको अने वणिकोना उपर कंकू, केसर अने दूध वि. थी वृष्टि करी हती. सुलताने रंजित थइ सोनाना टंकाओथी थाळ भरावी रायणने वधावी हती. "

१ त. शुभशीलगणिए कथाकोश[ह. लि. कथा १०]मां जणा-व्युं छे के–" त्यारपछी सुलतान गिरनारगिरि पर गया हता. त्यां नेमिनाथनी अच्छेद्य अभेद्य प्रतिमा जाणीने घा–प्रहारो कर-

अन्य प्रसङ्गे गोष्ठी-विनोद

एक वखते सुलतान, सभामां बेसीने सूरिजी साथे इष्ट अर्थने साधनारी प्रीति-गोष्ठी करता हता, ते वखते त्यां तेनो कोइ गुरु आव्यो, तेणे माथा पर रहेली टोपीने आकाशमां निराधार राखी. सूरिए लकुट जेवा पोताना रजोहरण (ओघा)वडे ते टोपीने प्रहार करी पाडी नाखी अने ते(रजोहरण)ने त्यां राख्युं. आचार्ये तेने(सुलतानना गुरुने) कह्युं के 'जो तारी कंइ पण शक्ति होय तो आ(रजोहरण)ने पृथ्वी पर पाड, नहि तो मौन रहे.' घणो वखत जवा छतां ते तेने पाडवामां समर्थ थइ शक्यो नहि. त्यारपछी गुरुजीए पोते ते ग्रहण कर्युं. ते(सुलताननो गुरु) लज्जित थयो, लोकोथी हसायो.

बीजे दिवसे पण एणे(सुलतानना गुरुए) पाणीथी भरेला घडाने आकाशमां राख्यो अने ते बहु ज गर्व करवा लाग्यो. ते ज सूरिए (जिनप्रभसूरिए) घडाने पण प्रहार करी खंड खंड कर्यो, छतां पाणीने तो पोतानी विद्यावडे त्यां ज थंभाव्युं. ते चमत्कार जोइने मात्र तेना एक गुरुने मूकी कया

चाथी स्फुलिंग(अग्निना तणखा) नीसरवाथी सुलताने प्रभुने प्रणाम करीने, खमावीने सोनाना [१००] टंकाओवडे वधाव्या हता."

माणसोने विसय थयो न हतो ? त्यारपछी सौ पोतपोताने घरे गयां.

---

१ शुभशीलगणिए कथाकोश[ह. लि. कथा २]मां जणाव्युं छे के-" एक वखते जिनभप्रसूरिजी पीरोज सुलतान साथे गोष्ठी करता वेठा हता त्यारे त्यां मलाणको(मलाणा-मौलाना-मुल्ललांओ) आव्या. एक मुलाणके(मौलानाए) पोतानी टोपी आकाशमां उछाळी, ते त्यां निराधार रही. सुलताने जिनप्रभसूरिनी सामे जोइ कह्युं के-अहो ! मोटुं आश्चर्य ! सूरि बोल्या-सारुं. त्यारपछी सूरिए ते टोपीने त्यां ज थंभावी. त्यारपछी सुलतान बोल्या-' टोपी आणो ' त्यारपछी तेणे(मौलानाए) आकर्षण मन्त्रनो प्रयोग कर्यो, पण टोपी आवी नहि. त्यारपछी सुलताने कह्युं के-जिन-प्रभसूरि ! तमे आणो. त्यारपछी सूरिए रजोहरण(ओघो) फेंक्युं. तेणे त्यां जइ टोपी आणी, तेथी सुलतान चमत्कार पाम्या."

जि. प्र. (व. का.)-" योगिनीपुर(दिल्ली)मां पातसाह पीरोजसुलतानना राज्यमां जिनशासनना प्रभावक जिनप्रभसूरि थया, तेना केटलाक चमत्कारो लखवामां आवे छे.—

पातसाहनी सभामां एक मुल्लाणके टोपीने आकाशमां निरा-धार राखी. सुलताने जिनप्रभसूरिजीना सामुं जोयुं, सूरिए रजोहरण (ओघा)वडे टोपीने प्रहार करी नीचे पाडी अने रजोहरणने त्यां(अद्धर) राख्युं. मुल्लाणके बहु करवा छतां पण न पड्युं.

ए विगेरे विविध श्रेष्ठ प्रभावनाओवडे जेणे सुलतानने

पछी सूरिजीए हाथ ऊंचो करी ते लइ लीधुं. "

[आ प्रसंगने सूचवतुं एक चित्र पण प्राप्त थाय छे].

शुभशीलगणिए कथाकोष[कथा २]मां जणाव्युं छे के– "बीजे दिवसे माथा पर रहेल, पाणीथी भरेल घडावाळो पनिहारी ज्यारे राजा आगळ चाली त्यारे मौलानाए तेवुं कर्युं के जेथी बंने घडाओ आकाशमां निराधार रह्या. स्त्री तो आगळ गइ. माथे घडाने न जोतां अने त्यां निराधार जोई राजा चित्तमां चमत्कार पाम्यो, तेथी राजाए ज्यारे तेनी प्रशंसा करी त्यारे गुरुए कह्युं के–'जो पाणी निराधार रहे तो श्रेष्ठ कला. त्यारपछी राजाए ते मौलानाने कह्युं, परंतु ते ते कला न जाणतो होवाथी मौन रह्यो. त्यारपछी गुरुए कांकरावडे बंने घडा फोडी पाणीने निराधार राख्युं, राजा चमत्कार पाम्यो. "

जि. प्र. (व. का.)–" बीजे दिवसे पाणीथी भरेलो घडो आकाशमां राख्यो. सुलताने सामे जोयुं. सूरिए पाषाणथी प्रहार करी कपालो(घडानां ठींकरां) पृथ्वी पर पाड्यां. पाणी निराधार [लाडवाना आकारे] ज रह्युं. शासननी महाप्रभावना थइ. "

१. शुभशीलगणिए कथाकोश[इ. लि. कथा ४] मां जणाव्युं छे के–" एक वखते सुलताने कह्युं–'जिनप्रभसूरि ! तमे विज्ञ छो. कहो, आजे हुं नगरना कया बारणाथी नीकलीश ? ' त्यार-

पण विशेष प्रकारे बोध पमाड्यो हतो. × × ”

–उपदेशसप्तति [अधि. ३, उप. ५, आ. सभा पृ. ५७–५९]

पछी जिनप्रभसूरिए पत्रमां लखीने बंध करीने सुलतानने ते लेख आप्यो अने कह्युं के–'नगरथी बहार गया पछी लेख वांचवो.' त्यारपछी सुलताने [काकर नामना] किल्लाना २१मा लंगक पासेनी(२१ थरोनी) ईंटो दूर करावी, बहार नीकल्या. पछी लेख वांच्यो. जेवी रीते नीकल्यो हतो तेवी रीते ज लखेलुं हतुं. राजा हर्षित थयो. ”

[कथा ५ मां] एक वखते सुलतान बोल्या के–“ आजे हुं शुं खाइश ?' त्यारपछी सूरिए लेख लखीने बंध करीने आप्यो अने कह्युं के–'जम्या पछी वांचवो.' त्यारपछी सुलताने खोळ खाधो. त्यारपछी लेख जोतां खोळ खावानुं लखेलुं जोयुं. राजा हर्षित थयो.”

[कथा ६ मां]एक वखते सुलतान बोल्या के–'सूरि! कहो, साकर शेमां नाखतां मीठी लागे ? ' मंत्रीओने अने पंडितोने पूछयुं. अने ज्यारे कोइए पण न कह्युं त्यारे सूरि बोल्या के–' म्होंमां नाखतां '

[कथा ७ मां] एक वखते सुलतान बहार बागमां गया हता. पाणीथी भरेलुं मोटुं सरोवर जोइ सघळानी आगळ कह्युं के–“आ सरोवर धूळ पूर्या विना नानुं केम थाय ?' एम पूछतां ज्यारे कोइए पण उत्तर न आप्यो त्यारे सूरिए(जिनप्रभे) कह्युं के–' आ सरोवरनी पासे बीजुं मोटुं सरोवर करावाय तो आ नानुं थाय.' राजा हर्षित थयो. ”

१ [कथा ११ मां] " एक वखते सुलताने जिनप्रभसूरिने पूछ्युं के–' पृथ्वी पर कयुं फूल मोटुं ? ' सूरिए कह्युं–'जगत्‌ने ढांकतुं होवाथी वडणि(वण–कपास)नुं. '

शुभशीलगणिए कथाकोश[कथा १६]मां सूचव्युं छे के–" एक नगरमां श्रावकोमां रोग उत्पन्न थयो हतो, ते कोइ रीते निवर्ततो न हतो. त्यांथी बे श्रावकोने जिनप्रभसूरि पासे मोकलवामां आव्या हता. ते बंने श्रावको ज्यारे ध्यान करता जिनप्रभसूरिजीनी पासे आव्या, त्यारे तेओए गुरुजीनी पासे बे युवतीओ जोइ, तेथी ते बंने विचारवा लाग्या के–" गुरुजीने स्त्रीओनो परिग्रह विद्यमान छे ' ते बंने ज्यारे पाछा फर्या के स्तंभित थइ गया. ध्यान पछी ते बंने देवीओए पूछ्युं के–' अम्हने बंनेने अहिं केम आणी छे ? ' गुरुजीए कह्युं के–' तमो बंने द्वारा श्रीसंघने उपद्रव करवामां आवे छे, आ कारणथी शिक्षा आपवामां आवशे. ' त्यार पछी ते देवीओ बोली के–' आजथी (हवे पछी) श्रीसंघने उपद्रव नहि करवामां आवे. ' त्यारे ते बंनेने विसर्जित करी हती. बंने श्रावको मुक्त थया. गुरुजीने नम्या. स्त्री–संबंध पूछतां गुरुजीए कह्युं के–आपना नगरमां श्रावकोने उपद्रव सांभळ्यो हतो, ते हालमां निवार्यो छे. आप बंनेए जोयुं. त्यार पछी ते बंने श्रावकोए पोताना नगरमां जइ गुरुए करेलुं जणाव्युं हतुं. "

जिनप्रभसूरिना प्रबन्धनी जूदी जूदी प्रतियोमां पण थोडा

फेरफार साथे उपर जणावेलो, तथा वींटी विगेरेनो बीजो पण केटलोक वृत्तांत मले छे.

एक ह. लि. पोथी[१७ श. प. जय. भं.]मां प्राचीन गुजराती भाषामां एवा आशयनो उल्लेख मले छे के–" वि. सं. १३३१ मां लघुखरतर जिनसिंहसूरिना पट्ट पर जिनप्रभसूरि महान् थया. तेमना गुरुजीए छ मास सुधी आयंबिल करतां पद्मावतीदेवीने आराधी हती. पद्मावतीए प्रत्यक्ष थइ कह्युं हतुं के– 'भगवन् ! तम्हारुं आयुष्य थोडुं छे, तम्हारा शिष्य जिनप्रभसूरिने फलदायिनी थइश. वागड देशमां वडोद्रा(द) गाममां अमुकने त्यां नानो बेटो पगे घाइ (खोडवालो ?) छे, तेने दीक्षा आपो. ' एम कही पद्मावती अदृश्य थई हती. गुरुजीए त्यां जइ दीक्षा दीधी. शिष्यने पाट आपी गुरुजी परलोक पहोंच्या. जिनप्रभसूरिने ११ मे वर्षे पद दीधुं.

ते जिनप्रभसूरिए ढिल्ली(दिल्ली) नगरमां महम्मद पातसाहने प्रतिबोध्यो हतो. अलावदीव [थी ?] पण मोटो पातशाह प्रतिबोध्यो. महावीरनी पाषाणमयी प्रतिमा बोलावी. पातशाह पासे प्रासाद कराव्यो. श्रीशत्रुंजयनी यात्रा करावी. पद दीधां. रायण दूधे वरसावी. बार गाऊ वड चलाव्यो. मल्लाणा(मौलाना)ओ साथे वाद कर्या. राघवचैतन्य साथे वाद कर्यो. पातशाहनी हर्म्मे राणी बालादेने क्षेत्र(खेतर)पाल लाग्यो हतो, ते छंडाव्यो. जाते पीपलनी शाखा भांगी बेठो

समकालीन इतिहास.

जावालिपुर(जालोर)मां रहेला जिनेश्वरसूरिए पोतानो अंतसमय जाणी पोताना पट्ट पर पोताना हाथे वाचनाचार्य प्रबोधमूर्ति गणिने स्थापित कर्या हता, सकळ संघ आगळ

बोलाव्यो. पातशाहना चित्तना अनेक चमत्कारो पूरा कर्या. मंत्रगर्भित ७०० स्तोत्रो कर्यां × × मोटा अवदातवाला (अतिशयवाला प्रभावक) पुरुष थई गया. ”

वी. ज्ञानभंडारनी ७ पत्रवाली बीजी पट्टावलीमां सूचव्युं छे के–“ लघुखरतर श्रीजिनप्रभसूरि थया. जेणे महावीरनी मूर्तिने बोलावी, अमावास्यामांथी पूनम करी, अल्लावदीन (?) पातशाहने शत्रुंजयनो संघवी कर्यो, रायणथी दूध वरसाव्युं, संघ साथे वड चलाव्यो, कलावंत शेखनी कुलह(टोपी)ने मुहपत्तिथी मारी आकाशथी माथे आणी, ब्राह्मणनी पाणी भरेली गागर, आकाशमांथी ओधावडे भांगी ठींकरांने हेठल नांख्यां. पाणी पिण्डरूप थयुं, पातशाहे हाथ धर्यो, ऊपरथी पाणी ऊतर्युं. शीतज्वरने झोलीमां बांध्यो, लघुखरतरगच्छमां एवा चमत्कारी थया. ”

ख. ग. नी एक पट्टावली [साक्षर जिनविजयजी द्वारा संगृहीत अने स्व० बाबू पूरनचंदजी नाहर प्र. पृ. ९४]मां आ प्रभावक जिनप्रभसूरिना घणा अवदातो होवानुं जणावी अन्य ग्रंथमांथी पद्य उध्धृत करी मूक्युं छे, ते पाठान्तर साथे सूचवुं छुं.

तेनुं नाम जिनप्रबोधसूरि आप्युं हतुं–एम तेमना शिष्य कवि सोममूर्तिगणिए रचेला जिनेश्वरसूरि–वीवाह–रास (ऐ. जैन गू. काव्य–संचय पृ. २२६–२२७ पद्य २९ थी ३१)मां सूचित कर्युं छे. वि. सं. १३३१ ना आश्विन व. ५ जिन-प्रबोधसूरिनी पद–स्थापना अने ते पछी बीजे दिवसे (व. ६) जिनेश्वरसूरिनो स्वर्गवास थयो हतो, एम रास, ख. ग. पट्टावली वि. परथी जणाय छे.

आ जिनप्रबोधसूरिए वि. सं. १३२८ मां (सूरि–गच्छ-पति थया पहेलां) कातंत्रदुर्गपद–प्रबोध रच्यो हतो, तथा सूरिपद थया पछी वि. सं. १३३३ मां प्रतिमा–प्रतिष्ठा करी हती. ए विगेरे अम्हे जेसलमेर भां. सूची (अप्रसिद्धग्रन्थ–ग्रन्थकृत्परिचय)मां जणाव्युं छे, तथा ए जिनप्रबोधसूरिए वि. सं. १३३४ मां प्रतिष्ठित करेल जिनदत्तसूरि–मूर्तिनो फोटो अम्हे अपभ्रंशकाव्यत्रयीमां प्रकट कराव्यो छे.

"गयणथकी जिनि(णि) कुलह नांषि(आणि) ओघइ उत्तारी,
किद्ध महिष(य) मुष(ख)वाद नयर पिक्खइ नव वारी;
ढिली(दिल्ली)पति सुरताण पूठि तसु (वड)वृक्ष चलाविय,
र[ा]यणि सेत्तुंजि सिहरि दुद्ध जलहर वरसाविय;
दोरडइ मुद्र कीधी(किय) प्रकट, जिन-प्रतिमा वुल्लि वयणि,
जिनप्रभसूरि सम कवण ?, भरतखंड–मंडिण रयणि."

जिनेश्वरसूरिना पट्ट पर उपर्युक्त जिनप्रबोधसूरि नियुक्त थया ए अवसरे वि. सं. १३३१ मां जिनेश्वरसूरिना अन्य शिष्य जिनसिंहसूरि (श्रीमालवंशी)द्वारा खरतरगच्छमांथी एक शाखा-भेद प्रकट थयो, जे लघु खरतरगच्छ(गण) तरीके ओळखायो. ख. ग.नी केटलीक पट्टावली तथा जिनप्रभसूरि-प्रबंध(व. का.)मां जणाव्युं छे के-" आ जिनसिंहसूरिए ६ मासना आयंबिल द्वारा पद्मावती देवीनुं आराधन कर्युं हतुं; देवीए तेमनुं अल्प आयुष्य सूचवी तेमना योग्य पट्टधर राज-प्रतिबोधक अने प्रभावक जिनप्रभसूरि थशे, तेनो परिचय आपी तेमना पर प्रसन्न थवा वचन आप्युं हतुं. "

पेथडशाहे देवगिरि(दोलताबाद)मां राजा रामदेव अने मंत्री हेमाद्रिना समयमां जिनदेव-मंदिर केवी रीते कराव्युं ? जेनी[1] रक्षा जिनप्रभसूरिए करी हती.

मुनिसुंदरसूरिए वि. सं. १४६६ मां रचेली गुर्वावलीमां सूचव्युं छे के-" वि. सं. १३२७ मां देवेन्द्रसूरि अने तेना प्रथम पट्टधर विद्यानन्दसूरि १३ दिवसना अन्तरे स्वर्गवासी थतां तेमना बीजा पट्टधर विद्यानन्द-बंधु धर्मकीर्ति गणी (गणनायक) थया हता, जे धर्मघोषसूरि नामे प्रसिद्ध थया

१. जुओ पृ. ४१-४२ नो उल्लेख.

हता. उदार बुद्धिवाळा ते गुरुए माळवा मंडळनी भूमिना विभू-षणरूप मंडपदुर्ग(मांडवगढ) नामना नगरमां शाह पृथ्वीधर(पेथड)ने आर्हत धर्मनो प्रबोध कर्यो हतो. त्रिकालज्ञानी ते भगवाने सम्यक्त्व साथे बारव्रत अंगीकार करता ते(अनाढ्य)ने पण पांचमा व्रत(परिग्रह–परिमाण)मां लाख द्रव्य(रू.)नी छूट रखावी हती. अनुक्रमे ते(पृथ्वीधर) मालव-मंडलना राजानुं प्रजाओथी पूजातुं सचिवत्व प्राप्त करी शक्यो हतो. ऋद्धि वडे कुबेर जेवो थयो हतो. ते पृथ्वीधरे (पेथडशाहे) चैत्योद्वारा पृथ्वीने व्याप्त करी हती, सद्गुणोद्वारा मनीषी-(सज्जनो)नां हृदयोने व्याप्त कर्यां हतां, कीर्तिओद्वारा दिशाओने व्याप्त करी हती. धनद्वारा भंडारोने व्याप्त कर्या हता, अने षड्गुणना जाणकार एवा तेणे पृथ्वीना प्रभुओ (राजाओ) पर पण प्रकृष्ट शासन कर्युं हतुं.

पोताना गुरु [1]धर्मघोष ज्यारे ते नगर(मांडवगढ)मां पधार्या, त्यारे ते पृथ्वीधरे हर्षथी ३ अयुत अने ६ हजार (३६०००) जूना टंकाओना व्ययवडे तेमनो प्रवेशोत्सव कर्यो हतो.

प्रसन्न थयेला गुरुए आपेल क्रम(अनुष्ठानादि आम्नाय)वाळा

---

१. प्रभावक चमत्कारी आ योगी सूरिनो स्वर्गवास वि. सं. १३५७ मां थयो होवानुं गुर्वावली, तपागच्छ–पट्टावली विगेरे साधनोथी जणाय छे.

अने क्रमथी द्रव्यव्ययनां स्थानो जाणनारा आ पृथ्वीधरे उज्ज्वल ८४ चैत्यो कराव्यां हतां.

श्रेष्ठ उदार धीर अचिन्त्य चरितोवडे तेणे लांबा काळ पर थइ गयेला, हरिषेण चक्रवर्ती, संप्रति अने कुमारपाळ राजानुं स्मरण कराव्युं हतुं.

मुक्तिलक्ष्मीथी संयुक्त जिन–नायकोथी विभूषित थयेला ते विहारो (जिनमंदिरो), भूमिरूपी भामिनीना हृदय पर रहेला मोतीना हारो जेवा शोभे छे.

' कोटाकोटि ' एवा नामथी प्रसिद्ध महिमावाळो अने शांतिनो शत्रुंजय पर, तथा ' पृथ्वीधर ' एवी संज्ञावडे सुरगिरि(देवगिरि–दोलताबाद)मां अने मंडपाद्रि(मांडवगढ) मां अने पृथ्वी पर नगरो, गामो विगेरेमां रहेला तेना बीजा पण घणा ऊंचा प्रासादो मुक्तिरूपी वलभी पर चडवाने नीसर–णीना दंड जेवा शोभे छे.

पृथ्वीधरशाहे करावेला प्रासादोना स्थानोनी संख्या अने मूलनायक जिनोनां नामो विगेरे वक्तव्य, पूज्य गुरु सोमतिलकसूरिजीए करेलुं स्तोत्र, अहिं उतारीने पठन करवुं जोइए; ते आ प्रमाणे छे—

" दीन विगेरेने सुविधिपूर्वक उत्कृष्ट दान आपनार, जयसिंह राजा प्रत्ये भक्तिवाळा, पोतानुं औचित्य साचवनार, अर्हन्तोनी भक्तिथी पुष्ट, गुरुना चरण सेवनार, मिथ्यामतिने

परिहरनार, सत्शील विगेरेथी पोताना जन्मने पवित्र करनार, प्राये रोषनो नाश करनार, सारी रीते विशाल अनेक पौषध-शालाओ करावनार, मंत्रमय स्तोत्रद्वारा विदीर्ण थयेला लिंगथी विवृत(प्रकट)थयेल श्रीपार्श्वनी पूजा करनार, विद्युन्मालिदेवे करेल, देवाधिदेव नामथी प्रख्यात महावीरनी देदीप्यमान प्रतिकृति(मूर्ति)नी आडंबरथी पूजा करनार, नित्य त्रिकाल जिनराजनी पूजनविधि तथा बे वखत आवश्यक(प्रतिक्रमण) करनार, धार्मिक मात्र साधु पर पण मोटी भक्ति करनार, संसार पर विरक्ति करनार, सारां पर्वोमां पौषध करनार, साधर्मिकोनुं सदा वैयावृत्त्य अने उच्च प्रकारे हर्षथी वात्सल्य करनार, पुण्य-सागर श्रीमत् संप्रतिराजाना, कुमारपाल भूपालना अने सचिवाधीश वस्तुपालना चरितने संभारी संभारीने उदार हर्षरूपी सुधा–सागरनी ऊर्मियोमां उन्मज्जन करता, श्रेयरूपी उद्यानने सिंचित करवामां वर्षाकालना श्रेष्ठ मेघ जेवा सज्जन पृथ्वीधर(पेथड)शाहे सम्यग् न्यायथी सारी रीते उपार्जित करेला वहोळा धनने सारा स्थानोमां स्थापतां वि. सं. १३२० वीत्या पछी नेत्रोने प्रसाद–जनक, सुख आपनारा जे जे प्रासादो, जे जे गिरि (पर्वत) पर, श्रेष्ठ नगरमां अथवा गाममां कराव्या, ते प्रासादोने तेमां रहेला जिननायकोना नाम साथे श्रद्धापूर्वक हुं स्तवुं छुं—

वि. सं. १३२० लगभगमां पेथडशाहे करावेला सोनाना दंड–कलशवाळा ८४ जिन–प्रासादोनां मुख्य स्थानो.

	नग–नगरादि–नाम.	मूलनायक जिन–नाम
१	मंडपगिरि(मांडवगढ–माळवा)मां	आदिजिन
२	*निंबस्थूर पर्वत पर (गिरनार–स्मारक)	नेमिजिन
३	* ,, ,, नीचे भूमि पर	पार्श्वनाथ
४	*उज्जयिनीपुर(उजेणी–माळवा)मां	,,
५	*विक्रमपुरमां	नेमिजिन
६–७	*मुकुटिका(मकुडी)पुरीमां	पार्श्वजिन अने आदिजिन
८	विन्धनपुरमां	मल्लिनाथ
९	आशापुरमां	पार्श्वनाथ
१०	घोषकीपुरमां	आदिजिन
११	अर्यापुरमां	शांतिजिन
१२	*धारा नगरमां	नेमिनाथ

१. रत्नमंडनगणिए रचेला सुकृतसागर काव्यमां शत्रुंजयावतार (शत्रुंजय–स्मारक) नामना आ चैत्यने ७२ जिनालयोवाळुं, सोनाना दंड–कलशवाळुं १८०००० अढार लाख द्रम्मोवडे करावेलुं जणाव्युं छे.

१३	वर्धनपुरमां	नेमिनाथ
१४	चंद्रकपुरीमां[1]	आदिजिन
१५	जीरापुरमां[2]	,,
१६	जलपद्रमां	पार्श्वनाथ
१७	दाहडपुरमां	,,
१८	हंसलपुरमां	वीरजिन
१९	*मान्धाताना[3] मूलमां	अजितनाथ
२०	धनमातृकापुर(धणियावी ?)मां	आदिजिन
२१	*मंगलपुरमां	अभिनंदन जिन
२२	*चिक्खल्लपुरमां	पार्श्वनाथ
२३	*जयसिंहपुरमां	वीरजिन
२४	सिंहानकमां	नेमिजिन
२५	*सलक्षणपुरमां	पार्श्वनाथ
२६	*ऐन्द्रीपुर(इंदोर ?)मां	,,
२७	ताह्लणपुरमां	शांतिजिन
२८	*हस्तिनापुरमां	अरजिन
२९	*करहेटक(करहेडा)मां	पार्श्वनाथ
३०	नलपुरमां	नेमीश्वर
३१	दुर्गमां	,,

१-२. सु. सा. मां चंद्रावती तथा ज्यापुर जणावेल छे.

३. आगळ पृ. ८६ नी टिप्पणी जुओ.

३२	*विहारक(विहार ? व्यारा ?)मां	वीरजिन
३३	लंबकर्णीपुरमां	”
३४	खंडोह(खंडवा)मां	कुंथुनाथ
३५	*चित्रकूटाचल(चित्तोडगढ)पर	आदिजिन
३६	*पर्णविहारपुरमां	”
३७	चंद्रानकमां	पार्श्वनाथ
३८	*वं(वां)कीमां	आदिजिन
३९	नीलकपुरमां	अजितनाथ
४०	*नागपुरमां	आदिजिन
४१	मध्यकपुरमां	पार्श्वनाथ
४२	*दर्भावतिकापुर(डभोइ)मां	चंद्रप्रभजिन
४३	*नागहृद (नागदा)मां	नमिनाथ
४४	*धवलक (धोळका) नगरमां	मल्लिनाथ
४५	*जीर्णदुर्ग(जूनागढ)मां	पार्श्वनाथ
४६	*सोमेश्वरपत्तन(प्रभासपाटण)मां	”
४७	शंखपुरमां	मुनिसुव्रत जिन
४८	सौवर्तकमां	महावीर जिन
४९	*वामनस्थली(वणथली)मां	नेमिजिन
५०	*नासिक्य(नाशिक)पुरमां	चंद्रप्रभ जिन
५१	*सोपारपुरमां	पार्श्वजिन
५२	रूणनगरमां	”

५३	उरुंगल(वरंगल)मां	पार्श्वजिन
५४	*प्रतिष्ठान(पैठण)मां	,,
५५	*सेतुबंधमां	नेमिजिन
५६	*वटपद्र(वडोदरा ?)मां	वीरजिन
५७	नागलपुरमां	,,
५८	टक्कारिकामां	,,
५९	*जालंधरमां	,,
६०	*देवपाल(देपाल)पुरमां	,,
६१	*देवगिरि(दोलताबाद)मां	,,
६२	*चारूपमां	शांतिजिन
६३	द्रोणतमां	नेमिजिन
६४	*रत्नपुरमां	,,
६५	अर्बुकपुरमां	अजितनाथ
६६	*कोरंटकमां	मल्लिनाथ
६७	*ढो(द्वा)रसमुद्र (पशुसागर) देशमां	पार्श्वनाथ
६८	*सरस्वती पत्तन(पाटण)मां	,,
६९	*शत्रुंजय पर'कोटाकोटि' जिनेन्द्रमंडप साथे	शान्तिनाथ
७०	*तारापुरमां	आदिजिन
७१	*वर्धमानपुर(वढवाण ? बडवाणी ?)मां	मुनिसुव्रतजिन

१ सु.सा. मां आने ८ भार-प्रमाण सोनाना ७२ दंड-कलशवाळो प्रासाद सूचव्यो छे. भार-प्रमाण माटे पृ. ८७ नी टिप्पणी वांचो.

७२	*वटपद्र (वडोद ?) मां	आदिजिन
७३	*गोगपुरमां	,,
७४	पिच्छनमां	चंद्रप्रभजिन
७५	*ओंकारपुरमां अद्‌भुत(उत्कृष्ट) तोरणवाळुं	जिनमंदिर
७६	*मांधातृ(ता)पुरमां	त्रिक्षण ,,
७७	विक्कनपुरमां	नेमिनाथ
७८	चेलकपुरमां	आदिजिन

एवी रीते पृथ्वीधरे प्रत्येक पर्वत, नगर, गाम अने सीममां सर्वत्र(चोतरफ) हिमालयनां शिखरो साथे स्पर्धा करनारां उंचां चैत्योमां, पृथ्वीरूपी युवतिना माथाना मुकुट जेवां, जिनोनां जे बिंबोने स्थाप्यां तेने; तथा देवोए अने नरवरोए

---

* आवी निशानीवाळां नगर, गाम विगेरेनां नामो सु. सा. मां पण सूचवेल छे.

१. पुरण–प्रख्यात 'ओंकार–मान्धाता' संबंधी एक परिचयलेख 'वाणी' हिन्दी पत्रिकाना वि. सं. १९९१ना 'नीमाड' २ अंकमां छे.

ओंकारपुरमां पेथडशाहे हेमाद्रिना नामे चलावेल सत्र भोजन–दानशाला माटे आगल वांचो. अनेक राज्य–परिवर्तन ऊथलपाथल अने अन्य आस्मानी–सुलतानी पछी हालमां अहिं ते श्वे० जैन मन्दिरोनां दर्शन थतां नथी, परंतु ओंकारजीमां अर्वाचीन दि० जैनमन्दिर 'सिद्धवरकूट' सिद्धक्षेत्र नामथी ओळखाताय छे.

करावेलां अने न करावेलां(अकृत्रिम-शाश्वत) अन्य जिन-बिंबोने पण हुं वंदन करुं छुं." पृथ्वीधरशाहे करावेलां चैत्योनुं (श्लो० १८६ थी २०१) १६ काव्योवाळुं स्तोत्र, पूज्य सोमतिलकसूरिए करेलुं छे.

फरकता ध्वजरूपी हंसोथी शोभती आकाशगंगाने चन्द्रकांत रत्नना पाणीवडे स्रवतो, स्फटिकरत्नमय कलशरूपी चंद्रने मस्तकपर धारण करतो, मरकतमणिद्वारा नीलकंठवाळो तेनो उज्ज्वल चैत्योनो समूह, ज्योत्स्नावाळा हर(महादेव)ना विलासनो आश्रय करे छे. (महादेवना विलासनी जेवो शोभे छे). आ(पृथ्वीधर-पेथडशाह)नुं वारंवार वर्णन शुं कराय ? जेणे हर्षथी २१ घडी प्रमाण सोनाना व्ययद्वारा, शत्रुंजय पर सुमेरुपर्वतना शिखर जेवुं आदीश्वरनुं सुवर्णमय मंदिर कराव्युं हतुं. तेना पुत्र झंझणदेवने उत्तम जनो उदार कहो अथवा कृपण कहो; आश्चर्य छे के-जेणे शत्रुंजयमां अने रैवतक-(गिरनार)मां पण सोना-रूपानो एक ज ध्वज आप्यो हतो. केटलाक कहे छे के-'सोनानी ५६ घडीनो व्यय करी तेणे लीलामात्रथी हर्षपूर्वक इंद्रमाला पहेरी हती.' पृथ्वीने त्रण

१. गणितसार विगेरे प्राचीन गणित ग्रंथोमां, सोनाना तोल संबंधमां सूचव्युं छे के-५ गुंजा (चणोठी)=१ मासो. १६ मासा= १ कर्ष. ४ कर्ष=१ पल. ६ पल=पा मण १२ पल=अधमण. २४ पल=१ मण. आवा १० दश मणनी १ घडी अने १० घडी=१ भार गणाय छे.

दिशामां धारण करता कूर्म (कच्छप), वराह अने शेष घणुं कष्ट पामता हता; तेओ ते पृथ्वीने चोथी दिशामां धारण करनार पृथ्वीधरने प्राप्त करीने हर्षित थया.

मोक्ष आपवामां जामीन जेवां, जिनोए कथन करेलां समग्र शास्त्रो लखावीने तेणे उच्च प्रकारनां सरस्वती–क्रीडागृहो जेवा ७ श्रेष्ठ कोशो (भंडारो) भराव्या हता.

स्तंभतीर्थ(खंभात)मां निवास करता प्रभावक संघ-पति भीमे शील (ब्रह्मचर्य) स्वीकारतां, समस्त साधर्मिकोनो सत्कार करतां पृथ्वीधरने पण उचित वेष मोकलाव्यो हतो. प्रथमिनी नामनी सुपत्नी साथे, तेवी रीते (ब्रह्मचारी थइने) ज साधर्मिकपणानो विचार करतां ३२ वर्षनो भट (शक्ति-संपन्न युवक) होवा छतां पण, कामने जीती, शील (ब्रह्मचर्य) स्वीकारीने पृथ्वीधरे ते वेष पहेर्यो हतो. आ(पृथ्वीधर)नी प्रिया प्रथमिनी पण सतीओमां प्रथम तरीके प्रख्यात थइ हती; गुरु–देव–भक्त एवी जे पण कोइ वार पण, क्यांय पण पुण्य कृत्योद्वारा पृथ्वीधरथी हीन थइ न हती.

राजाए अर्पण करेल मालवा(देश)नी रक्षानी महाचिंता-वाळो होवा छतां पण गुरुना उपदेशने वश रहेनार, बंने वार प्रतिक्रमण करनार, नित्य ३ वार जिन–पूजन, गुरु–नमन, साधर्मिकोनुं अभ्यर्चन(सन्मान), दीन विगेरेनो उद्धार, सशास्त्रोनुं पठन, पर्वदिवसोमां पौषध, ए प्रमाणे कृत्योने ते

आश्चर्यकारक रीते करतो हतो. श्रेष्ठ उदार समग्र सद्गुणोवाळो, सदा ६ आवश्यकोमां तत्पर, अर्हद्-गुरु-भक्त, मत-प्रभावक ते (पृथ्वीधर=पेथड) पृथ्वीना अलंकाररूप थइ गयो. "

[मुनिसुंदरसूरिनी सं. गुर्वावली श्लो० २०२थी २१२]

देवगिरिमां जिन-प्रासाद केवी रीते कराव्यो ?

पं. रत्नमंडनगणिए विक्रमनी १६ मी सदीमां रचेला पेथडशाहना ऐतिहासिक प्रबंधरूप सुकृतसागर नामना मंडनांक सं. काव्य(चतुर्थ तरंग)मां सूचव्युं छे के—

" ते प्रासादोमां, देवगिरिपुरमां एक दिव्य प्रासाद, जे रीते बन्यो, ते प्रबंध जाणवा योग्य छे—

" हाथीओनी मद-वृष्टिनी सुगंधथी बहेकता मुख्य द्वार-वाळुं, घणा सुवर्णथी सार्थक नाम धरावतुं देवगिरि(देवोनो पर्वत स्वर्णगिरि=मेरु)पुर छे. प्राकार(किल्लो), परिखा (खाइ) अने आराम(उद्यानो)नी पंक्तिओथी परिवेष्टित थयेला श्रीबीज जेवा जे नगरने शत्रुओ एकतानवाळा थइ संभारे (ध्यानमां धरे) छे. ते नगरमां ध्वनि करतां बार हजार वाद्योद्वारा शत्रुओने त्रास पमाडनार, संग्रामनी शोभाना प्रयोजनरूप थयेल शस्त्रो विगेरेनी सामग्रीवाळो, तथा १ मोतीनी जोड, २ चित्तने चोरनार स्त्री, ३ कष्टभंजन घोडो अने ४ बावनाचंदन ए चार रत्नोवाळो, ५६ करोड सोनैयावाळो, ८०००० एंशी

हजार घोडाओवाळो तथा १२००० बार हजार हाथीओवाळो **राम** नामनो राजा हतो.

तेनो धी-सख (मंत्री) हेमादि[1] हतो, जेनी पासे घणुं हेम विगेरे हतुं. आश्चर्य छे के जेणे कृपणताथी पोतानुं पाप पण याचकोने आप्युं न हतुं. ते वखते त्यां ब्राह्मणोनुं एकछत्र

---

१ उपर सूचवायेल हेमादि ए देवगिरि-राज्यमां दक्षिणना इतिहासमां सुप्रसिद्ध हेमाद्रि एक नामांकित अधिकारी थइ गयेल छे. तेनो परिचय करतां पहेलां आपणे गुजरात अने दक्षिणनो तत्कालीन पूर्व इतिहास लक्ष्यमां लेवो जोइए.

विक्रमनी १३मी सदीना उत्तरार्धमां देवगिरिना राजा सिंहणे मोटुं सैन्य मोकली गुजरात पर चडाइ करवानी एक तक साधी हती, परंतु गूर्जरेश्वर-महामात्य मंत्रीश्वर वस्तुपालनी-वीरता-भरी समयसूचकताथी तथा महामंडलेश्वर वाघेला लावण्यप्रसाद अने महाराणा वीरधवलनी वीरताथी तेमां तेने सफलता मळी जणाती नथी. भरुचनी सरहदमां-नर्मदा अने तापी नदीना तट पर बंने पक्षनां सैन्योए भयानक परिस्थिति उपस्थित करवा छतां अंते संधि थयानुं सूचन मळे छे. गूर्जरेश्वर-पुरोहितकवि सोमेश्वरे रचेली कीर्तिकौमुदी (सर्ग ४, श्लो० ४३-४७), जयसिंहसूरिए रचेल हम्मीरमदमर्दन नाटक, तथा मं. वस्तुपालनो ऐ. परिचय करावतां केटलांक अन्य साधनो परथी ए जणाय छे. गा. ओ. सि. तरफथी प्रकाशित थयेली लेखपद्धतिमां यमलपत्रना उदाहरण तरीके

साम्राज्य हतुं; जैन चैत्य करावनाराओने तेओ बलवडे अटकावता हता. ए वात सांभळीने देदना नंदन पेथडशाहे विचार्युं के–'जो कोइ पण रीते आ नगरमां विहार(जिनमंदिर) करावाय तो घणो लाभ थाय अने जैनदर्शननी प्रभावना थाय.' फरी विचार कर्यो के 'तो हेमादि साथे हुं प्रेम धारण करुं, जेथी तेनी प्रेरणाद्वारा म्हारुं आ प्रयोजन राजाथकी सिद्ध थाय. सर्वांग–पूर्ण लक्ष्मीवाळो आ राजा तो घणा सोनावडे, माणेकोवडे, घोडाओवडे के हाथीओवडे तुष्ट करी शकाय तेम नथी. ' प्रधानने संतुष्ट कर्या विना राजाने तुष्ट करवा'–ए न्याययुक्त नथी. 'बारणाना बिंबने

वि. सं. १२८८ वै. शु. १९ना निर्देश साथे ए संधिनी शरतो सूचवी छे के–" सिंहणदेवे अने महामंडलेश्वर राणा लावण्यप्रसादे पूर्व रूढि प्रमाणे पोतपोताना देशमां रहेवुं, कोइए पण कोइनी भूमि पर आक्रमण करवुं नहि–दबाववी नहि; शत्रुथी हल्लो थाय तो एक-बीजाए सैन्यनी सहायता करवी. " सिंहणनी बिरुदावलीमां तेने 'गूर्जरराज–हस्त्यंकुश' तरीके तथा गूर्जरेश्वर वीसलदेवने 'सिंघण-सैन्य–समुद्र–संशोषणवडवानल' तरीके ओळखावेल छे.

उपर्युक्त चंद्रवंशी सिंहण पछी, जैत्रपाल पछी, राजधानी देवगिरि(दक्षिण)नी गादी पर आवेल महादेव राजाना अने तेना उत्तराधिकारी रामदेव राजाना राज्यमां (विक्रमनी १४ मी सदीना पूर्वार्धमां) श्रीकरणाध्यक्ष हेमाद्रि नामनो अतिबुद्धिशाली राज्याधिकारी थई गयो. पुराणो, स्मृतियो विगेरेमांथी उद्धृत करी

पूज्या विना मूलनायक पूजाय नहि. ' तेथी सत्र (सदाव्रत–दानशाला–भोजनशाला) मांडवामां आवे अने त्यां हेमादिनुं नाम कहेवामां आवे; तो लोकमां पोतानो प्रासुक (पोते न करेल, न करावेल) यश सांभळीने ते तुष्ट थाय. एवी रीते तेनुं तोषण अने दानथी उत्पन्न थतुं म्हारुं पुण्य–'आंबाने पाणी सिंचाय अने पितृओने तृप्ति थाय ' ए विगेरे नीतिनी जेम–ए बंने कार्यो थाय. "

उपर प्रमाणे विचार करीने पृथ्वीधरे (पेथडशाहे) मुसाफरोने आनंद आपनार विशाळ सत्रागार (सदादान–भोजनशाळा) ओंकारनगरमां मंडाव्युं. त्यां सज्जनोने उज्ज्वल पाणीवडे

१ व्रत, २ दान, ३ तीर्थ अने ४ मोक्ष (परिशिष्ट साथे) विषय पर योजायेल ' चतुर्वर्ग चिंतामणि ' नामनो विशाल संग्रह ग्रंथ ए हेमाद्रिनी कृति तरीके ओळखाय छे. तेमां देवगिरिना यादव (जाधव) राजाओ साथे हेमाद्रिनी पण प्रत्येक परिच्छेदमां प्रशंसा करवामां आवी छे. ए विचारतां वास्तविक रीते ते संग्रह कृति, हेमाद्रिना आश्रित कोई विद्वान्नी जणाय छे. आ हेमाद्रि संबंधमां मराठी भाषामां ' हेमाद्रि ऊर्फे हेमाडपंत ' नामनुं विस्तृत माहितीवाळुं पुस्तक, केशव आप्पा पाध्ये, बी. ए. एल्. एल्. बी. (ॲडव्होकेट, मुंबई हाइकोर्ट) द्वारा सन् १९३१मां प्रकाशमां आवेलुं छे, एटले अहिं तेनो विशेष परिचय कराववानी खास अपेक्षा रहेती नथी.

स्नान करावातां हतां. प्राकृत (सामान्य) मनुष्यो माटे पग धोवा लायक पाणी तैयार रखातां हतां. सत्रनी समीपमां विहार (जैन मंदिर)मां अर्हन्तोने प्रणाम करावी साधर्मिक थयेला सर्वने विवेकथी भोजन करावातां हतां. घणां पक्वान्नो, खांडथी भरपूर मंडो (मालपूडा), अखंड उज्ज्वल शालि (चोखा), पीळी गुणकारी दाळ, नाकथी पीवाय एवुं घी, घणां शाको, पित्तने शांत करनारा करंभा, स्निग्ध (तर-चीकाशवाळुं) दहीं, लवंगना संगथी सुगंधि पाणी मनुष्योवडे स्वेच्छापूर्वक आ- स्वादित करातुं हतुं. नागरवेलनां पानो, कपूर अने सोपारी साथे अपातां हतां. पछी निद्रा विगेरे माटे दिव्य खाटो (पलंगो) अपाती हती. त्यां आवेला प्रवासीओ स्वादु भोजन करता अने सुखे सूता छता पोतानी स्त्रीओना अने माताओना हाथोने तथा पोतानां घरोने संभारता नहि. पूछ- नाराओनी आगळ तो हेमादिनुं ज नाम कहेवामां आवतुं हतुं. एवी रीते पेथडशाहे त्यां ज्यारे ३ वर्षो सुधी सत्र चलाव्युं; त्यारे भोजनथी प्रसन्न थयेला, देवगिरिमां गयेला भाट विगेरे, ३ वर्ष सुधी हेमादिनी आदरथी एवी रीते स्तुति करता हता के—

" ओंकारपुररूपी क्यारामां, पृथ्वीना जनोने अतिप्रिय एवुं सत्र, यतिओना समूहवडे परम ध्येय पवित्र बीज जेवुं आ- चरण करे छे; ते थकी उत्पन्न थयेली अने कवितारूपी आ

नीकोवडे विस्तरेली तमारी असाधारण कीर्तिरूपी लता आजे मांडवानी जेम ब्रह्मांड पर चडे छे. "

ए विगेरे प्रकारनुं प्रशंसावाळुं खोटुं वर्णन नित्य सांभळतां हेमादिए एक वखते चित्तमां विचार कर्यो के–" में जन्मथी मांडीने याचकोने पण कांइ आप्युं नथी, तो आ लोको सत्र (दानशाला–भोजनशाला)शुं कहे छे ? अने आ वळी जो कदाचित् कोइ एक कहे तो खोटुं होइ शके; परंतु आटला बधा लोको आटला वखत सुधी असत्य बोलनारा न होइ शके." एवो विचार करीने ते जोवा माटे तेणे एक माणसने ओंकार-पुरमां मोकल्यो. त्यां जइ आवेला ते माणसे जाणेलो संबंध जणाव्यो के–" सर्व प्रकारना स्वाद रसवाळी ते भोजनशालामां जे भोजननो स्वाद ग्रहण करे, ते ज रसना(जीभ)ने हुं रसज्ञा जाणुं छुं, बीजी जीभने तो रसना कहो. त्यां आवेलो कोइ पण माणस असंतुष्ट थइने जतो नथी, तेम ज अन्य भोज-नोनी अवज्ञा कर्या विना जतो नथी, तथा तमारी प्रशंसा कर्या विना जतो नथी. तमने ते भोजनशालामां आटला वखतमां सवाकरोड द्रम्मनो व्यय थयो; परंतु तमारो यश अने पुण्य करोड कल्प पर्यन्त रहे तेवां थयां छे. कानरूपी नीकद्वारा आवेलां आ वचनरूपी पाणीवडे सिंचायेला हेमादिना शरीर पर रोमांचरूपी अंकुरा प्रकट थया. त्यार पछी ओंकारपुरमां जइ भोजनशालाना अधिकारीओने सारी रीते पूछीने ते भोजन-शाला चलावनार तरीके पृथ्वीधर(पेथडशाह)ने जाणीने

हेमादिए तेनी स्तुति करी के-" ते पुण्यवती स्त्रीनी कुक्षिना ओवारणा लउं, के जेणीए पृथ्वीधर नामथी प्रख्यात पुरुष-रत्न उत्पन्न कर्युं. ते पुत्रवती सती युवती भले गर्व धारण करो के जेणीने गुणोवडे अलौकिक पृथ्वीधर(पेथड) जेवो पुत्र छे." "बीजाना द्रव्यवडे पोताना नामने प्रख्यात करे तेवा पुष्कळ मनुष्यो छे; परंतु पोताना द्रव्यवडे बीजानी ख्याति करावनार तो मात्र पृथ्वीधर(पेथड) ज छे " ए प्रमाणे स्तुति करीने हेमादि, स्वर्गनगरीना गौरवने न्यून करनार दुर्ग (मांडवगढ)मां जइने पेथडशाहने मळ्यो. पेथडशाहे तेनो हर्षथी सत्कार कर्यो. हेमादिए तेने कह्यु के-तमोए आवी भोजनशाळा म्हारा नामे मांडी, तेनो जे हेतु होय ते खुशीथी मने कहो. जो के तमारा उपकारनो बदलो तो हुं कोइ रीते वाळी न शकुं, तो पण म्हारा योग्य कार्यनुं कथन करी मने आनंदित करो.' प्रधान(हेमादि) वडे आग्रहपूर्वक पूछातां पृथ्वीधरे(पेथडशाहे) कह्युं के-' जो विलंब विना कार्य-सिद्धि थाय, तो कार्य कहेवामां आवे.' हेमादिए कह्युं के-' बहु शुं कहुं ?, तमोए इच्छेलुं कार्य, मारे द्रव्यवडे, बल-वडे अने शरीर द्वारा पण करवानुं छे.'

पेथडशाह बोल्या-' तो देवगिरि पुरनी मध्यमां विहार (जिनमंदिर)ने योग्य एवी मोटी भूमि मने अपावो.'

ब्राह्मणोनी उद्धताइथी दुःसाध्य एवुं पण ते कार्य, प्रौढ

उपकारना भारथी दबायेला ते बुद्धिशाळी मंत्री हेमादिए ते ज वखते स्वीकार्युं. त्यारपछी सपरिवार ते बंने देवगिरि पुरीमां गया. हेमादिए मंत्री पेथडने रमणीय हर्म्य(हवेली)मां उतार्या. 'चैत्यनी भूमि माटे हुं जाते राजाने विज्ञप्ति करीश, आ विषयमां तमारे कांइ पण चिंता न करवी.' एम कही हेमादि घरे आव्यो.

हेमादि अवसर जोतो हतो; कारण के अवसर विना करातुं कार्य सारुं थतुं नथी. एवामां एक सारो अवसर मळी गयो. घोडा वेचनारा त्यां आव्या. राजाए तेमांथी एक श्रेष्ठ घोडो लेवा प्रधानने कह्युं. अश्वलक्षणना विचक्षण परीक्षक हेमादिए एक जातिवंत घोडो दर्शाव्यो. समस्त लक्षणवाळो देवसत्त्वी ते घोडो राजाने पसंद पड्यो. गति विगेरेथी तेनी परीक्षा करी ६०००० साठ हजार टंका(रू.)वडे ते घोडो लइ राजा घरे गयो. अन्य प्रसंगे पाणी–पार उतरतां हेमादि मंत्रीनी प्रतिभाथी ते जातिवंत(कुलीन) घोडानी उत्तमतानी प्रतीति थइ. राजाए तेनुं नाम 'कष्टभंजन' प्रकट कर्युं. श्रेष्ठ सत्कार कर्यो. हेमादिना विस्मयकारी ते विज्ञानथी तुष्ट थइ राजाए अभीष्ट मागवा कह्युं. ए अवसरे मंत्री हेमादिए माग्युं–'मारो एक बन्धु अहिं मनोहर विहार(जिन–मंदिर)करावबा इच्छे छे; ते माटे मनोऽभिलषित स्थानमां भूमि अर्पण करो.' राजाए कह्युं के–'ब्राह्मणोनी अप्रीति होवा छतां पण में तमने भूमि

आपवी छे जः परंतु कहो के-ते बन्धुनुं नाम शुं छे ? अने ते क्यां वसे छे ? ' हेमादिए कह्युं के-' राजन् ! अवंती (माळवा)नो अलंकार, धर्मकर्ममां कुशल पृथ्वीधर (पेथड) नामनो जीभथी मानेलो म्हारो बंधु छे. माळवामां जयसिंह नामना राजा बिंबमात्र छे; छत्र अने चामरोथी रहित होवा छतां पण पृथ्वीधर(पेथड) ज पति(राजा) छे, ते प्रातः-काले प्रभु(आप महाराजा)ने प्रणाम करवा माटे आवे त्यारे स्नेहथी घरे आवेल मालवराजने योग्य एवा सर्व गौरवने योग्य छे. '

राजाए(रामदेवे) ए अवधारण करी हृदयमां निश्चय कर्यो. हेमादिए हर्षित थइ पेथडशाहने सूचित कर्युं. बीजे दिवसे माळवाना मंत्री पेथडशाह, राजसभामां राजाने मळवा आव्या त्यारे थाळमां सोनानी महोरो उपर श्रीफळ(नाळी-एर)नी भेट धरी, समीप आवतां राजा(रामदेव) जल्दीथी ऊभा थइ हर्षथी तेने भेट्या.

राजाए पेथडशाहने योग्य आसन पर बेसारी, स्वागतादि पूछी, नाळिएर ग्रहण करी भेटणुं पाछुं आप्युं. प्रधानने पहेरामणी करी राजा पृथ्वीना दान माटे घणा परिवार साथे घोडा पर बेसीने नगरीमां गया. चौटानी अंदरनी पृथ्वीनी प्रार्थना थतां राजाए ते आपी, ब्राह्मणो दून थवा छतां पण दोरी

देवरावी. प्रधाने भेट माटे आणेला सोनैयाओ वडे, नगरीना जनोने संतोषित करी वाद्योना ध्वनिपूर्वक हर्षथी महोत्सव कर्यो. कच्छ–भंगनी उचितता विचारी महेभ्य–श्रीमानोनी ७ हवेलीओ थइ शके तेटली भूमिमां हाट, घर विगेरे सघळुं पडावी नाख्युं. शुभ दिवसे ३ वांस प्रमाण पायो खोदावतां घणुं स्वादिष्ट अपूर्व पाणी प्रकट थयुं. ते जाणीने मत्सरी भूदेवो-(ब्राह्मणो)ए उत्सुक थइ सांझे रामदेव राजाने विज्ञप्ति करी–'राजन् ! पहेलां अहिं क्यांय स्वादु पाणी न हतुं, ते हालमां तमारा भाग्यथी विहार(जिनमंदिर)नी भूमिमां प्रकट थयुं छे, तो त्यां वाव करावो. अहिं तरस्या अढारे वर्ण पाणी पीशे; तेमां तमने जे पुण्य थशे तेनो तो पार नथी. हे राजन् ! कूवा विगेरेमांथी निपान(अवेडो) कराववामां पुराणमां पण चोरना उदाहरणपूर्वक बहु पुण्य कहेवामां आव्युं छे, तो चैत्यने योग्य भूमि बीजे आपी आ स्थळमां घणा पुण्य माटे कृपा करी वाव करावो. ब्राह्मणोना वाक्यथी राजानुं चित्त दोलायमान थयुं. 'सवारे त्यां आवी, पाणी पीने स्वादु जणातां विपुल वाव ज करावाशे' एम कहीने राजाए तेओने विसर्जित कर्या.

पेथडशाहे पोताने उतारे हंमेशां आवता, राजाना एक नापित(नाइ–हजाम)ने तुष्ट करेलो हतो, तेणे पेथडशाहने ते जणाव्युं. अवसरज्ञ माळवानो अमात्य पेथडशाह राते लवण-

वालदि (मीठाना अगर) जाणी, द्वारपाळने द्रव्य आपी पोठ्योने नगरीमां दाखल करावी, मीठुं नखावी, पाणी खारुं करी, तेमने रवाना करी, घरे आवीने सुखे सूतो.

सवारे त्यां आवेला राजाए माणसो द्वारा मंगावी ते पाणीनो जाते आस्वाद कर्यो. खारुं जणातां थूंकी नाख्युं. 'ब्राह्मणोए मत्सरथी खोटुं कह्युं' एम विचारी ब्राह्मणोने ठपको आप्यो. पृथ्वीधर(पेथड)नुं सन्मान कर्युं. एवी रीते बुद्धि-भंडार प्रधान पेथडने प्रासाद माटे पृथ्वी प्राप्त थइ.

[कहे छे के–सिद्धराजे रुद्रमहालय कराव्या पछी ते करनार सूत्रधारने 'एना जेवुं शिल्पकाम ए अन्यत्र न करे' ए हेतुथी अंध कर्यो हतो. सूत्रधारे एथी पण श्रेष्ठ जैनप्रासाद करवा प्रतिज्ञाथी इच्छा राखी हती. अपूर्णांश ते सूत्रधारनी पेढीनो पांचमो वंशज कला–रत्नाकर रत्नाकर भमतो भमतो ते अवसर पर मंत्री(पेथड)ने मळ्यो हतो.]

बुद्धिशाळी मंत्री पेथडशाह, ते रत्नाकर सूत्रधारद्वारा कर्मस्थायनो आरंभ करावी त्यां वणिक्पुत्रो(वाणोतरो)ने मूकी माळवा गया अने तेओए कर्मस्थाय माटे सोनाथी भरेली ३२ सांढणी मोकलावी आपी. ते माटे हजार हजार ईंटो पकवनारा १० नीभाडा थया हता. ३ वांस प्रमाण पायावाळी पाषाणनी ३ संधियोमां अनुक्रमे ५ शेर, १० शेर अने १५

शेर लोढानी पादुकाओ हती. १४४४ थरमां केटलीक पाषाणनी पट्टीओ (पाटो), १९ (३९) गजनी लांबी हती. ईंडुं चडाववानी पाटने वच्चे रहेला किल्लाथी विघ्न थतुं सांभळी साहसिक पेथडशाहे त्यां आवी रात्रे तेटला भागमां किल्लाने पडावी नाख्यो हतो; पछी बंने तरफना पद्या(पाज)ना खंडोने संयुक्त करावी, ईंडुं चडावी किल्लाने पाछो सज्ज करावी दीधो हतो.

आ चैत्यमां संपूर्ण घाट, सारोद्दार(सारूआर)थयो हतो, जेनाथी सामान्य चैत्यो ८४ थइ शके. '८४ हजार टंकोनां दोरडां तुट्यां हतां, १ लाख टंकोना दीवा राते कर्मस्थायमां बळ्या हता.' ए प्रमाणे वणिक्पुत्रो द्वारा चैत्य करावतां थयेलो धन-व्यय सांभळी उदार पेथडशाहे लेखांनी वहीने पाणीमां नखावतां लोकोए आ प्रासादने 'अमूल्यविहार' नामथी प्रख्यात कर्यो हतो.

ते जिन-प्रासादमां स्थापन करवा माटे चंद्रनी ज्योति जेवा आरासण पाषाणनुं ८३ आंगळ-प्रमाण श्रीवीरनुं बिंब कराव्युं हतुं.[1] मनोहर पूतळीओ तथा निपुणताथी उत्कीर्ण करेल (उकेरेल) वस्तुओनी आकृतिवाळो घणो रमणीय प्रासाद तैयार थतां ते प्रासादनी, प्रतिमानी, सुवर्णकलशनी, दंडनी

१. विक्रमनी १९ मी सदीमां रचायेला जणाता एक सं. स्तोत्रमां भिन्न भिन्न स्थानमां रहेला वीर (जिन-बिंब)ना

अने ध्वजनी प्रतिष्ठा-पूजा बहुलक्ष्मीना व्ययथी महोत्सवपूर्वक करावी हती. माधव नामना मंगलपाठके लाखो श्रीमंतोनी पर्षद्‌मां पेथडशाहनी साचा पृथ्वीधर तरीके प्रशंसा करी हती (विशेष वृत्तान्त माटे सुकृतसागर काव्य वांचवुं).

देवगिरिमां रामदेवराजाना राज्यमां शाह देसल अने सहजाशाहे करावेल जिनदेव-मंदिर, जेनी रक्षा जिनप्रभसूरिए करी हती.

उपकेशगच्छीय कक्कसूरिए वि. सं. १३९३मां कंजरोट (कंजरडा)पुरमां रचेला नाभिनंदन-जिनोद्धार प्रबंध (प्र. २, श्लो. ९२२ थी ९५३)मां जणाव्युं छे के-" वि. सं. १३७१मां शत्रुंजय पर उद्धार प्रतिष्ठा करावनार ओसवाल संघपति देसलशाहे पोताना सद्‌गुणी मोटा पुत्र सहजने देवगिरिपुरमां वास माटे मोकल्यो हतो. सहजे देवगिरिमां

उल्लेखोमां, पृथ्वीधरे(पेथडे) देवगिरि (दोलताबाद)मां करावेला रम्य विहारमां रहेला तथा योगिनीपुर(दिल्ली)मां रहेला कल्लाण नामना वीरदेवनुं पण संस्मरण मळे छे—

" श्रीपृथ्वीधरकारिते सुरगिरौ रम्ये विहारे स्थितं
कल्लाणाभिधयोगिनीपुरगतं देवं सदारासणे ।
श्रीजावालपुरेऽपि हेपचरि(सहि)तं पंचासरे वायडे
श्रीवीरं वरभीमपल्लीकमिति ख्यातं स्तवेर्वाटके ॥ "

रामदेव राजाने गुणोवडे तेवो वश कर्यो हतो, के ते बीजानी कथा पण न करे. कर्पूरना पूरथी सुभग एवुं तांबूल आपता जे(सहज)ने मंगल-पाठकोए 'कर्पूरधाराप्रवाह' बिरुद आप्युं हतुं.

जे(सहज)नी सांभळेली कीर्तिथी प्रेराइ तिलंगाधिपतिए पोताना नगरमां देव-मंदिर माटे स्थान आप्युं हतुं.

कर्णाट अने पांड्देशमां सदा पसरता जेना जशे त्यांना राजा प्रमुख लोकोने तेना दर्शन माटे उत्कंठित कर्या हता.

देसलशाहे देवगिरिमां नवुं जैनमंदिर करावबानो मनोरथ सिद्धसूरिने जणाव्यो हतो. सूरिए प्रोत्साहित करी मूलनायक पार्श्वजिन कराववा सूचना करी हती. त्यार पछी जिनमंदिर माटे देसलशाहे सहजने आदेश आप्यो हतो. सहजशाहे एथी हर्षित थइ रामदेव राजाने भेटणांओथी संतोष पमाडी जिनमंदिर माटे भूमि लीधी हती. घणा धनदानवडे वैज्ञानिको(शिल्पीओ)ना उत्साहथी थोडा दिवसोमां संपूर्ण देवमंदिर तैयार थयुं हतुं. देसले चंद्र जेवा उज्ज्वल आरासण-शिलामय मूलनायक(पार्श्वनाथ) कराव्या हता. तथा २४ जिनबिंबो अने २ मोटां बिंबो तथा सत्या (सच्चिका), अंबा, शारदायुगल तथा गुरुनी मूर्तियो करावी हती. अभ्यर्थनाथी सिद्धसूरिने साथे लइ स्कंधवाहो

(मजूरो)ना खभा पर बिंबोने आपी देसलशाह देवगिरि तरफ चाल्या हता. सहजपाल, मूलनायक अने अन्य जिनबिंबोनी तथा गुरुनी सामे संघ साथे ४ प्रयाणो सुधी गया हता. देवगिरि पहोंचतां मंगल वाद्योना ध्वनिथी श्रेष्ठ प्रवेश-महोत्सव कराव्यो हतो. घरेघर तोरणो अने पूर्णकळशोनी शोभा थइ हती. देसलशाहे देवगृहनी तथा पौषधालयनी प्रतिष्ठा सिद्धसूरिद्वारा करावी हती. देसलशाहे श्रेष्ठ भोजनो अने वस्त्रो द्वारा चतुर्विध संघनुं हर्षथी पूजन कर्युं हतुं. प्रासाद आगळ विशाल मंडप, २४ देवकुलिकाओ साथे कराव्यो हतो. प्रासादनी चोतरफ रम्य हर्म्यों सहित दुर्ग बनाव्यो हतो. प्रासाद उपर स्वर्णमय दंड साथे सुवर्णकलश स्थाप्यो हतो. त्यार पछी देसलशाह, गुरुजी साथे पाटण(गुजरात) गया हता.

भयानक अल्लाउद्दीन-युग.

वि. सं. ८४५ मां गज्जणवइ हम्मीरना सैन्यद्वारा वलभीनो भंग अने शिलादित्यनुं मरण थया पछी लगभग सवाबसो वर्षो पछी गुजरात भांगीने, वि. सं. १०८१मां चडी आवेला बीजा म्लेच्छराज गज्जणवइ(गजनवी)ए, ते पछी घणे काळे आवेला मालवी राजाए अने वि. सं. १३४८ मां आवेल काफूरना प्रबल सैन्ये अन्यत्र आक्रमण उपद्रव कर्या छतां ज्यांना महावीरना प्रभावे साचोरनी सीम चंपाणी न हती

ते संबंधमां सत्यपुरकल्पमां प्रस्तुत जिनप्रभसूरिए पोताना समयमां बनेली ऐ. दुःखद घटना सूचवी छे के–"वि. सं. १३५६ मां अल्लावदीन सुलताननो नानो भाइ उल्लूखान ढि(दि)ल्लीपुरथी, मंत्री माधवथी प्रेराइने गुजरातनी धरा तरफ चाल्यो हतो. ते वखते चित्तकूड(चित्तोड)ना राजा समरसिंहे दंड आपीने मेवाडदेशनी रक्षा करी हती. त्यार पछी ते हम्मीर-युवराज वागडदेश अने मुहडासा (मोडासा) विगेरे नगरोने भांगीने आसावल्ली (आसावळ, अमदावाद पासे) पहोंच्यो हतो. कर्णदेव राजा नाठो.[1] सोमनाथने घणना घाथी भांगीने गाडामां चडावी ढिल्ली(दिल्ली) मोकल्या हता. फरी वामणथली(वणथली) जइ मंडलीक राणाने दंडी सोरठमां पोतानी आण प्रवर्तावी आसावळमां पडाव नाख्यो हतो. मठो, मंदिरो, देवळो विगेरे बाळी देवामां

१. उपकेशगच्छना कक्कसूरिए वि. सं. १३९३ मां कंजरोटपुरमां पूर्ण करेला नाभिनंदन-जिनोद्धार प्रबंध (३ जा प्रस्ताव)मां सूचव्युं छे के–उछळता घोडाओरूपी कल्लोलोवडे समुद्रनी जेम पृथ्वीने व्याप्त करनार अलावदीन सुलतान ते वखते त्यां(पाटणमां) राजा थयो हतो. जेणे देवगिरिमां जइ तेना राजाने बांधीने पोताना जयस्तंभनी जेम फरी त्यां ज स्थाप्यो हतो.

सपादलक्ष(सेवालिक)ना रणथंभोरना स्वामी अभिमानी वीर हम्मीर राजाने हणी तेनुं सर्वस्व लइ लीधुं हतुं.

आव्यां हतां. अनुक्रमे सत्तसयदेशमां पहोंच्यो. साचोरमां ढक्का–नादथी म्लेच्छोनुं सैन्य पलायन करी गयुं हतुं; परंतु त्यार पछी भवन, गोमांस अने लोहीथी छंटातां देवताओ दूर थतां, भवितव्यता अलंघ्य होवाथी, दुःषमकाळना विलासथी अधिष्ठायक ब्रह्मशांति यक्ष प्रमादी थइ असंनिहित थतां अल्लावदीन राजाए वि. सं. १३६७मां ते ज भगवान् महावीर(बिंब)ने दिल्लीमां लावी आशातना-पात्र कर्या हता. ' ते कालांतरे फरीथी पाछा बीजी प्रतिमामां प्रकट प्रभाववाळा थइ पूजा–योग्य थशे. " कन्नाणयनयर(कानानूर)वाळी महावीर–प्रतिमाने दिल्लीमां सुलतान महम्मद तघलकद्वारा सन्मानित–प्रतिष्ठित करावी उपर्युक्त भविष्यवाणीने वि. सं. १३८५ थी १३९०मां जिनप्रभसूरिए साची करी बतावी हती.

चित्रकूटदुर्ग(चित्तोडगढ)ना राजाने बांधी तेनुं धन लइ तेने नगरे नगरमां वानरनी जेम भमाड्यो हतो.

जेना प्रतापथी गुजरातनो राजा कर्ण, जल्दी नाशी, विदेशोमां भमीने रंकनी जेम मरण पाम्यो.

माळवानो राजा पण पुरुषार्थ–रहित बनी किल्लामां केदीनी जेम घणा दिवसो वीतावी त्यां(किल्लामां) ज मृत्यु पाम्यो हतो.

जेणे कर्णाट, पांडु, तिलंग विगेरे देशोना समस्त राजाओने वश कर्या हता.

वि. सं. १३६९ मां शत्रुंजय तीर्थना मूलनायक आदीश्वरना बिंबने म्लेच्छोए भांग्यानुं तथा वि. सं. १३७१ मां समराशाहे तेनो उद्धार कर्यानुं सूचन जिनप्रभसूरिए वि. सं. १३८५मां रचेला राज-प्रसाद नामना शत्रुंजय-कल्पमां कर्युं

जेणे समियानक (समियाणा), जावालिपुर(जालोर) जेवां केटलांय विषम स्थानोने ग्रहण कर्यां हतां, के जेनी संख्या करी शकाती न हती.

जेणे खापरराजनां सैन्योने पोताना देशमां भमतां अटकाव्यां हतां."

ए विषम समयमां पण शूरवीर राजपूतोए प्राणोनी परवा न करतां स्वदेश अने स्वमाननी रक्षार्थे पोतानां पाणी वताव्यां हतां– ते संबंधमां जयसिंहसूरि-शिष्य महाकवि मुनि नयचंद्रे रचेला वीरांक सं. हम्मीरमहाकाव्य तथा पद्मनाभ कविए वि. सं. १५१२मां रचेल प्रा. गू. कान्हडदे-प्रबंध विगेरे ग्रन्थो विशेष जिज्ञासुओए जोवा जोइये.

" अलावदीन सुलताननो प्रसादपात्र प्रतापी प्रतिनिधि सेवक अलपखान, पत्तन(पाटण)मां नरनायक (राजा-सूबो) हतो. तेना राज्य अमलमां वि. सं. १३६६मां जिनशासन-प्रभावक ऊकेशवंशी (ओसवाल) सुश्रावक शाह जेसले स्तंभतीर्थ-(खंभात)मां, खरतरगच्छना जिनचंद्रसूरिना सदुपदेशथी कोट्टडिका स्थापनपूर्वक, श्रावक-पोषधशाला साथे, अजितस्वामि देवनो

छे, जे शत्रुंजय–तीर्थनायक(प्रतिमा)ना उद्धार–प्रतिष्ठा–प्रसंगनुं संक्षेप–विस्तारथी वर्णन ते ज समयमां अंबदेवसूरिए समरा–रास (गु.) द्वारा, तथा वि. सं. १३९३ मां उपकेशगच्छीय कक्कसूरिए (उपर्युक्त प्रतिष्ठा करनार सिद्धसूरिना पट्टधरे) रचेला नाभिनंदन जिनोद्धार–प्रबंध (सं.) द्वारा कर्युं छे, जे अन्यत्र प्रसिद्धिमां आव्युं छे.

कन्नाणपुरना जैन शिल्पशास्त्री ठक्कुर फेरु

विक्रमनी चौदमी सदीना उत्तरार्धमां–अलावदीनना राज्य–समयमां ठ. फेरु नामनो शिल्प-शास्त्री जैन विद्वान् ग्रन्थकार थइ गयो. जेना पितामहनो तथा तेनो पोतानो वास पण पहेलां कन्नाणपुरमां अने पाछळथी दिल्लीमां हतो तेम तेणे सूचित कर्युं छे.

विधिचैत्यालय कराव्यो हतो. ते त्यांना शिलालेख(नकल प्राचीन-गूर्जरकाव्यसंग्रह गा. ओ. नं. १३, परि. ८मां प्रकट थइ गयेल छे)थी विदित थाय छे. शाह देसलना सुपुत्र समरसिंह ते(अलपखान)नी सदा सेवा करता हता. राजा पण तेना गुणोथी प्रसन्न थइ बंधुनी जेम तेना पर प्रीति करता हता. राज–प्रसाद छतां पण समरशाह चंद्रकांतनी जेम शीतल हता. राज–प्रसाद प्राप्त करीने तेणे देश–स्वामी (राजाओ)नां कार्यो पण कर्यां हतां. ”

रत्न–परीक्षा नामना ग्रन्थना अंत(प्रा. सं.)मां तेणे सूचव्युं छे के–" धंधकुलमां कन्नाणपुरमां कालिय नामना शेठ हता. तेना पुत्र ठक्कुर चंद्रनो पुत्र फेरु थयो, तेणे ढिल्लिय(दिल्ली)पुरीमां वि. सं. १३७२मां अलावदीनना राज्यमां संक्षेपथी रत्न–परीक्षा रची हती.

ढि(दि)ल्लीनगरमां श्रेष्ठ बुद्धिशाली, जिनेन्द्रवचनना विचारकोमां अग्रणी फेरु नामनो वणिक्–शिरोमणि थयो. तेणे लोकोना हित माटे विद्वानोने चमत्कार करे तेवी, प्रासादोनी अने बिंबोनी क्रिया–रत्नोनी सारभूत परीक्षा स्फुट करी हता.[1]"

वास्तुसार ग्रंथना अंतमां तेणे जणाव्युं छे के–" धंधकलसकुलमां उत्पन्न थयेल चंद्रना पुत्र फेरुए कन्नाणपुरमां रहीने पूर्वशास्त्रोनुं निरीक्षण करीने वि. सं. १३७२मां

---

१ " सिरिधंधकुल आसी कन्नाणपुरम्मि सिट्ठिकालियओ ।
तस्स य ठक्कुरचंदो फेरु तस्सेव अंगरुहो ॥
तेण य रयण–परिक्खा रइया संखेवि ढिल्लियपुरीए ।
कर–मुणि–गुण–ससिवरिसे अलावदीणस्स रज्जम्मि ॥
श्रीढिल्लीनगरे वरेण्यधीषणः फेरु इति व्यक्तधी–
मूर्धन्यो वणिजां जिनेन्द्रवचने वैचारिकग्रामणीः ।
तेनेयं विहिता हिताय जगतां प्रासाद–बिम्ब–क्रिया–
रत्नानां विदुषां चमत्कृतिकरी सारा परीक्षा स्फुटा । "

विजयदशमीने दिने स्व-परोपकार माटे वास्तुसार(गृह-प्रतिमा-लक्षणादि) शास्त्रने रच्युं हतुं.[1] "

अम्हारा स्नेही पं. भगवान्‌दासजी जैनीए हिंदी अनुवाद साथे जैन विविध ग्रंथमाळा, जयपुर सिटीथी हालमां प्रसिद्ध करेला आ ग्रन्थमां कन्नाणपुरने कल्याणपुर (करनाल, देहली) सूचवेल छे, परन्तु अम्हारा धारवा प्रमाणे जिनप्रभसूरिना कन्नाणयनयर-कल्पमां सूचित ते चोलदेश(दक्षिण)नुं कानानूर संभवे छे. संभव छे के ठ. फेरुए पितामहना प्रसंगथी पहेलां कन्नाणपुरमां वसवाट अने शास्त्र-निरीक्षण कर्या पछी दिल्लीमां आवी उपर्युक्त ग्रन्थ-रचना करी होय.

दिल्लीश्वर पातशाहोथी सन्मानित समकालीन अन्य जैनाचार्यो.

वि. सं. १४१० मां ६२७२ श्लोकप्रमाण सं. शांति-

---

१. " सिरिधंधकलसकुलसंभवेण चंदासुएण फेरेण ।
कन्नाणपुरठिएण य निरिक्खिउं पुवसत्थाइं ॥
स-परोवगारहेऊ वयण-मुणि-राम-चंदवरिसम्मि ।
विजयदसमीइ रइअं गिह-पडिमा-लक्खणाईणं ॥
परमजैनचन्द्राङ्गजठक्कुरफेरुविरचिते वास्तुसारे प्रासाद-विधिप्रकरणं तृतीयम् । "

नाथ–चरित महाकाव्य रचनार, पेरोज शाहि महम्मद पातशाहनी सभामां प्रतिष्ठोदय प्राप्त कर- अने पेरोजथी नार मुनिभद्रसूरिए पोताना गुरु गुण- गौरवित गुण- भद्रसूरिनो परिचय करावतां सूचव्युं छे भद्रसूरि अने के–"ते (बृहद्गच्छना मानभद्रसूरि)ना मुनिभद्रसूरि पट्टने शोभावनार गुणभद्रसूरि सुगुरु थया, जेओ व्याकरण, छंद, नाटक, तर्क, साहित्य, अलंकार विगेरे सर्व शास्त्रोमां चातुर्य धरावता हता. जेना श्लोकोना व्याख्यानथी रंजित थइ अयुत(दस हजार) सौवर्णटंको(सोनैया) आपता क्ष्मापाल–चूडामणि शाहि मुहंमदनी आगळ 'तपस्वीओथी ए ग्रहण न ज कराय' एम बोलतां जेणे चारित्रने स्थापित कर्युं हतुं.'[1]

---

१. "तस्य श्रीगुणभद्रसूरिसुगुरुः पट्टावतंसोऽभवद्
य: श्रीशाहिमुहंमदस्य पुरतः क्ष्मापालचूडामणेः ।
श्लोकव्याकृतिरञ्जितस्य ददतः सौवर्णटङ्कायुतं
ग्राह्यं नैव तपस्विनामिति वदंश्चारित्रमस्थापयत् ॥ × ×

तच्छिष्यो मुनिभद्रसूरिरजनि स्याद्वादिसंमाननः
श्रीपेरोजमहीमहेन्द्रसदसि प्राप्तप्रतिष्ठोदयः ।
तेनेदं निरमायि मन्दमतिना श्रीशान्तिवृत्तं नवं
तत्तज्जन्मसहस्रसंचितमहादुष्कर्मविच्छित्तये ॥ × ×

वि. सं. १४१२ ना राजगृहीना जैनमंदिरना शिलालेखमां सूचन छे के–सकल महीपालोथी नमन कराता सुलतान शाह पेरोजना राज्यकालमां तेना हुकमथी मगधमां मलिकवयो (१) नामना मंडलेश्वरना समयमां, तेना सेवक सहणासदुरदीननी सहायताथी उपर्युक्त पार्श्वनाथ जैनमंदिर रचायुं हतुं. जेनी प्रतिष्ठा, खरतरगच्छना जिनचंद्रसूरिनी आज्ञाथी उपाध्याय भुवनहिते करी हती.

वि. सं. १४२२ मां ६३०७ श्लोकप्रमाण सं. पद्य महम्मदशाहथी कुमारपाल–चरित महाकाव्य रचनार, प्रशंसित कृष्णर्षिगच्छीय जयसिंहसूरिए पोताना महेन्द्रसूरि गुरु महेन्द्रसूरिनो परिचय करावतां सूचव्युं छे के—

अन्तरिक्ष–रजनीहृदीश्वर–ब्रह्मवक्त्र–शशि–सङ्ख्यवत्सरे ।
वैक्रमे शुचितपोजयातिथौ शान्तिनाथचरितं व्यरच्यत ॥ ”

——मुनिभद्रसूरिना शांतिनाथचरित–महाकाव्यनी प्रशस्ति

(श्लो. ७, ९, १७ य. वि. ग्रं.)

१. “ सकलमहीपालचक्रचूलामाणिक्यमरीचिमञ्जरीपिञ्जरितचरणसरोजे सुरत्राणश्रीसाहिपेरोजे महीमनुशासति ।

तदीयनियोगान्मगधेषु मलिकवयोनाममंडलेश्वरसमये तदीयसेवकसहणासदुरदीनसाहाय्येन × × ”

" प्रतिवर्ष दीन, दुःस्थो (खराब स्थितिवाळा दुःखी)ना उद्धार सुकृत माटे मानपूर्वक साक्षात् अपाती लाख दीनारो (सोनामहोरो)ने जेणे निर्लोभभावथी तृणनी जेम तजतां 'आ ते एक ज महात्मा छे, बीजो नथी.' एवुं स्तोत्र राजा महम्मदसाहि तरफथी प्राप्त कर्युं हतुं, ते भगवान् महेन्द्रसूरि अम्हारा ता(पा)पनो विनाश करो.[1]

श्रेष्ठ भृगुपुर(भरुच)मां गणकचक्र-चूडामणि (ग-

विशेष माटे जुओ स्व. बाबू पूरनचंदजी नाहरनो जैन लेखसंग्रह (भा. १ लो), तथा जिनवि. प्रा. जैनलेखसंग्रह (भा. २, ले. ३८०).

१. " प्रत्यहं दीन-दुःस्थोद्धृतिसुकृतकृते दीयमानं समानं
साक्षाद् दीनारलक्षं तृणमिव झटिति(कटरि!) प्रोज्झ्य निर्लोभभावात् ।
एकः सोऽयं महात्माऽनव (न पर) इति नृपश्रीमहम्मदसाहेः
स्तोत्रं प्रापत् स ता(पा)पं क्षपयतु भगवान् श्रीमहेन्द्रप्रभुर्नः ॥ ७ ॥
तत्पट्टपूर्वाचलमण्डनैकचण्डद्युतिः श्रीजयसिंहसूरिः ।
कुमारपालक्षितिभृच्चरित्रमिदं व्यधत्त स्वगुरुप्रसादात् ॥ ८ ॥ × ×
" श्रीविक्रमनृपाद् द्वि-द्वि-मन्वब्देऽयमजायत ।
ग्रन्थः सप्त-त्रिशती-षट्सहस्राण्यनुष्टुभाम् ॥ "

—ही. हं. तरफथी वि. सं. १९७१ मां अने विजयदेवसूरि -संघ पेढी, मुंबई तरफथी वि. सं. १९८२ मां प्र.कुमारपाल-चरित प्र.

पेरोज पातशाहना मान्य गणितज्ञ महेन्द्रसूरि.

णितज्ञ विद्वानोमां श्रेष्ठ), राज-संस्तुत (सन्मानित) मदनसूरि नामना विद्वान् गुरु थया; तेना पद(सूरिपद)थी शोभता महेन्द्रगुरुए परोपकार माटे शकाब्द १२९२=वि. सं. १४२७ मां गहन गणित-शास्त्र सुयंत्रागम (यंत्रराज) ग्रंथनी रचना करी हती. तेनी व्याख्या रचनार तेमना विद्वान् शिष्य मलयेन्दुसूरिए उपर्युक्त गुरु महेन्द्रसूरिने पेरोज पातशाहना सर्व गणको(गणितज्ञ विद्वानो)मां अग्रेसर तरीके सूचव्या छे.[1]

चंद्रकीर्तिसूरिना शिष्य हर्षकीर्तिसूरिए स्वोपज्ञ धातुपाठ-वृत्ति(धातुतरंगिणी)नी प्रशस्तिमां पोताना पूर्वजोनो परिचय कराव्यो छे के—

---

१ "अभूद् भृगुपुरे वरे गणकचक्रचूडामणिः
कृती नृपतिसंस्तुतो मदनसूरिनामा गुरुः ।
तदीयपदशालिना विरचिते सुयन्त्रागमे
महेन्द्रगुरुणोदिताऽजनि विचारणा यन्त्रजा ॥ × ×
श्रीपेरोजमहेन्द्रसर्वगणकः पृष्टो(क-प्रष्ठो) महेन्द्रप्रभु-
र्जातः सूरिवरस्तदीयचरणाम्भोजैकभृङ्गद्युता(तिः) ।
सूरिश्रीमलयेन्दुना विरचितेऽस्मिन् यन्त्रराजागम-
व्याख्याने प्रविचारणादिकथनाध्यायोऽगमत् पञ्चमः ॥"

विशेष माटे जुओ यंत्रराज (सुधाकरद्विवेदीद्वारा संशोधित, सं. १९३९मां काशीमां प्र.)

पेरोज पातशाहथी सत्कृत रत्नशेखरसूरि.

" अवनितलने पवित्र करनारा जे गच्छमां, हम्मीरदेवथी पूजायेला सद्गुणी जयशेखरसूरि सुचरित पुरुषोमां मुकुट जेवा थइ गया. रूणापुरीमां सीहडना वचनथी अल्लावदी[न] राजावडे सद्वस्त्र साथे फरमान–दानपूर्वक पूजायेला वज्रसेन गुरु पछी विद्यानिधि रत्नशेखरसूरि गुरु थइ गया, जेने पातशाह पेरोज साहिए हर्षथी श्रेष्ठ वस्त्रोद्वारा सारी रीते पहेरामणी करी हती. अने नागपुरीय श्रेष्ठ पाठक हंसकीर्ति, दिल्लीमां साहि सिकंदर आगळ प्रतापथी अधिक थइ गया.[1] "

---

१. " गच्छे यत्र पवित्रितावनितले हम्मीरदेवार्चितः
सूरिः श्रीजयशेखरः सुचरितश्रीशेखरः सद्गुणः ।
रूणायां पुरि सीहडस्य वचनादल्लावदीभूभुजा
सद्वासः–फुरमानदानमहितः श्रीवज्रसेनो गुरुः ॥ १ ॥

सूरिश्रीप्रभुरत्नशेखरगुरुर्विद्यानिधिर्यं मुदा
सत्क्षोमैः किल पर्यधापयदरं पेरोजसाहिप्रभुः ।
श्रीमत्साहिसिकंदरस्य पुरतो जातः प्रतापाधिको
दिल्ल्यां नागपुरीयपाठकवरः श्रीहंसकीर्त्याह्वयः ॥२॥ "

—धातुतरंगिणी–प्रशस्ति (भां. रि. १८८२–८३)

बृहद्गच्छमां थयेला रत्नशेखरसूरिए प्रा. सिरिवालकहा (श्रीपालकथा दे. ला. नं. ६३) रची हती. जेनी प्रथमादर्श प्रतिने वि. सं. १४२८मां तेमना शिष्य साधु हेमचंद्रे लखी हती. सिद्धचक्रयंत्रोद्धार, गुणस्थान-स्वरूप (क्रमारोह), गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिका, क्षेत्रसमास, संबोधसत्तरी, छंदःकोश विगेरे ग्रंथरत्नो रचनारा पण आ ज रत्नशेखरसूरि जणाय छे.

वि. सं. १४२९मां का. शु. ४ रविवारे पत्तन (पाटण)मां पूर्णिमापक्षना ज्ञानकलश मुनिद्वारा लखायेल नलायन महाकाव्य पुस्तकना अंतमां उल्लेख छे के-ते समये महाराजाधिराज पीरोज पातसाहिथी नियुक्त खान दफरखान समस्त गूर्जर धरित्रीनुं परिपालन करता हता.

सुलतान-सन्मानित शाह जगसिंह अने महणसिंह

जेना देवगिरिना जिन-मंदिरनी प्रशंसा जिनप्रभसूरिए करी हती.

तपागच्छनायक रत्नशेखरसूरिए वि. सं. १५०६ मां रचेली स्वोपज्ञ श्राद्धविधिनी ६७६१ श्लोकप्रमाणनी विधिकौमुदी नामनी वृत्ति [पृ. १६३] मां सूचव्युं छे के-"देवगिरिमां शाह जगसिंहे पोतानी समान करेला ३६० वणिक्पुत्रो (वाणोतर) द्वारा ७२००० टंकाओना व्ययद्वारा प्रतिदिन एकैक साधर्मिकवात्सल्य कराव्युं हतुं. एवी रीते प्रतिवर्ष तेनां ३६० साधर्मिक-वात्सल्यो थतां हतां."

वि. सं. १५१७ मां भोज-प्रबंध विगेरे रचनार रत्नमंदिरगणिनी उपदेशतरंगिणी(य. वि. ग्रं. पृ. १६५)मां तथा जिनप्रभसूरि-प्रबंध(सं.)मां पण आने मळतो उल्लेख छे.

वि. सं. १५२१ मां पं. शुभशीलगणिए रचेला कथा-कोश(कथा २२ मी)मां साधर्मिक-भक्ति पर जगसिंहनो संबंध सूचव्यो छे के-' साधर्मिकोना वात्सल्यनुं फळ मुक्ति-सुख प्राप्त करावनारुं छे ' एम सांभळी जगसिंह शाहे देवगिरिमां धन-व्यवसाय विगेरेमां सांनिध्य करवुं विगेरे प्रकारोथी ३६० व्यवहारीओने पोतानी समान (समृद्ध) साधर्मिको कर्या हता. त्यार पछी प्रतिदिन एकेकना घरे पक्वान्न विगेरे रसोई बनावाती हती. त्यां सर्व श्रावको कुटुंब साथे जमता हता. त्यां प्रतिदिन ७२००० बोंतेर हजार द्रव्यनो व्यय थतो हतो. एवी रीते प्रत्येकना घरे जमतां वर्षने अंते बीजी वार वारो आवतो हतो. तेवी रीते धर्म-कृत्य करता जगत्सिंह शाहे भरत, दंडवीर्य राजाओने याद कराव्या हता."

तपागच्छाधिपति सोमतिलकसूरि, देवगिरिमां साह जगसिंहने घरे देवोने नमन करवा गया, त्यारे तेणे संघनी भक्ति कर्यानुं सूचन उपदेशतरंगिणी(पृ. १५९-१६०)मां मळे छे.

पं. शुभशीलना कथाकोश(कथा २३)मां जणाव्युं छे के-
"एक वखते जगसिंह शाहे सोमतिलकसूरि पासे धर्मनुं

स्वरूप पूछ्युं हतुं. × × गुरुजीनो उपदेश सांभळी जगसिंह शाहे २९९ गाडां, हजारो घोडा, ५२ देवालयो विगेरे संघ तथा सोमतिलकसूरिजी साथे शत्रुंजय अने गिरनारनी यात्रा करी हती."

जिनप्रभसूरिना सं. प्रबन्धमां उल्लेख छे के–"जिनप्रभसूरिजी सर्वत्र चैत्य–परिपाटी करता [म]हम्मद सुलतान साथे देवगिरिमां पहोंच्या त्यारे ते सा. जगसिंहे ३२००० बत्रीश हजार टंकाना व्ययथी प्रौढ प्रवेश–महोत्सव अने संघ–पूजन विगेरेथी तेमनो सत्कार कर्यो हतो. तेना देवतावसरमां, देवोने नमस्कार करवाना अवसरे माथुं धूणावतां तेमने सा. जगसिंहे कारण पूछ्युं; त्यारे जिनप्रभसूरिए जणाव्युं के–हालमां बे अपूर्व तीर्थो जोयां–एक तम्हारुं आ रत्नमय बिंब अने बीजुं जंगम तीर्थ अणहिल्लपुरमां तपागच्छेन्द्र सोमतिलकसूरिजी." ए सांभली तेना भक्त होवाथी सा. जगसिंहे विशेष प्रकारे भक्ति करी हती."

'जिनप्रभसूरिए देवगिरिमां शाह जगसिंहना अद्भुत गृह–चैत्यनां दर्शन कर्यां हतां.' ए प्रसंग–संबंधमां पं. शुभशीलना कथाकोश(कथा २१)मां सूचव्युं छे के–

"एक वखते जिनप्रभसूरिजी नगरे नगर अने गामे गाम देवोने नमन करवा चाल्या हता. अहम्मद (?) एवा अपर-

नामवाळा पीरोज सुलतान साथे देवगिरि पहोंच्या हता, त्यां तेमना पुर–प्रवेश–महोत्सवमां श्रावकोए घणा धननो व्यय कर्यो हतो. सर्व प्रासादो(जिनमंदिरो)मां देवोने नमस्कार करी, गृहचैत्योने वन्दन करता जिनप्रभसूरिजी शाह जगत्-सिंहने घरे गया हता. त्यां सूरिए श्रेष्ठ वैडूर्यरत्नमय, स्फटिक-रत्नमय, स्वर्णमय, रूप्यमय, पित्तलमय प्रतिमाओने वंदन कर्युं हतुं. ते घर–तीर्थ जोइ सूरिजीए माथुं धूणाव्युं; तेथी जगसिंहे पूछ्युं के–' माथुं केम धूणाव्युं ? ' गुरुजीए कह्युं के–अम्हे स्थाने स्थान, गामे गाम, नगरे नगरमां देवोने वांद्या, परंतु हालमां एक आ आपनुं घर–चैत्य अने बीजुं जंघरालपुरमां तपा श्री सोमतिलकसूरिजी वांद्या. हमणां आ बंने उत्कृष्ट तीर्थो मनमां आव्यां, आथी माथुं धूणाव्युं. ' ×× प्रासंगिक धर्मोपदेश सांभळीने अने धर्मिष्ठो प्रत्ये अनुराग जाणीने शाह जगसिंहे श्रेष्ठ वस्त्रना तथा अन्न–पानना दानथी जिनप्रभसूरिजीनी विशेष प्रकारे भक्ति करी हती. "

वि. सं. १५०३मां पं. सोमधर्मगणिए रचेली उपदेशसप्तति-(पांचमा गृहस्थधर्माधिकारना उ० ६)मां जणाव्युं छे के–

" पीरोज सुलताननी सभाने शोभावनार जगत्सिंह नामनो शेठ योगिनीपुर(दिल्ली)मां थइ गयो. जे त्रण वखत जिन–पूजा अने बे वखत आवश्यक(प्रतिक्रमण) ए पांच वेळा साचवतो हतो. समस्त नगरमां अद्वितीय सत्यवादी तरीके

प्रतिष्ठा–प्रसिद्धि पाम्यो हतो. तेनी तेवी ख्याति सांभळी, तेनी परीक्षा करवा इच्छता सुलताने तेना मर्म जाणनारा दुर्जनोने एकान्तमां पूछ्युं के–' आ शेठ पासे केटलुं धन छे ? ' तेना द्रोहीओए ७० लाख कह्या.

केटलाक दिवसो पछी सुलताने जगत्सिंहने पूछ्युं के– 'तमारे त्यां केटलुं धन छे?' तेणे प्रत्युत्तरमां जणाव्युं के–'विचारीने कहेवाशे' पछी बीजे दिवसे घरना सरसामाननी संभाळ करी सूचव्युं के–'पातशाह! म्हारे त्यां चोराशी लाख द्रव्य छे.'

'बीजा लोकोए पहेलां जणावेली संख्याथी अधिक कहेवाथी आ साचो ज छे; पोताना द्रव्यनी संख्याना कथनमां प्राये थोडा ज सत्यवादी होय छे.' एवो विचार करी तेना सत्य वचनथी संतुष्ट थयेला पातशाहे सोळ लाख आपीने ते शेठने कोटिध्वज(करोडपति) कर्यो हतो.[1]

१. वि. सं. १५०६मां रत्नशेखरसूरिए रचेली श्राद्धविधि–वृत्ति[पृ. ९६]मां जणाव्युं छे के–

"संभळाय छे के ढि(दि)ल्लीमां 'शाह महणसिंह सत्यवादी छे' एवी ख्याति सांभळी परीक्षा माटे सुलताने तेने पूछ्युं के–' तम्हारे त्यां केटलुं धन छे ? ' तेणे कह्युं के–' लेखुं जोइने जणावीश. ' पछी सघळुं लेखुं ठीक करी राजानी आगळ कह्युं के–' म्हारे घरे अनुमानथी ८४००००० चोराशी लाख टंको

संभवे छे.' 'में थोडुं सांभळ्युं हतुं, आणे घणुं कह्युं' एवी सत्य उक्तिथी हर्षित थयेला राजाए तेने कोशाध्यक्ष (राज-भंडारी) बनाव्यो हतो.

वि. सं. १५२१ मां पं. शुभशीलगणिए रचेला पंचशती-प्रबंध (ह. लि. कथाकोश कथा १२)मां सूचव्युं छे के–" एक मनुष्ये सुलताननी आगळ कह्युं के–'जगसिंह शाह खोटुं बोलता नथी.' त्यार पछी सुलताने पूछयुं के–' जगसिंह ! तम्हारा घरमां केटलुं धन छे ? ' तेणे कह्युं के–' काले कहेवाशे ' त्यार पछी घरे जइ शाहे घरनी सर्व लक्ष्मीनी संख्या करी सुलताननी पासे जइ कह्युं के–'म्हारा घरमां चोराशी लाख सोनाना टंको छे.' ते पछी सुलताने सत्य जाणी सोळ लाख पोताना खजानामांथी अपाव्या अने तेने कोटिध्वज कर्यो हतो."

वि. सं. १५५५मां इंद्रहंसगणिए रचेली उपदेशकल्पवल्ली-[पल्लव ७] मां सूचन मळे छे के–

"सत्यवादी तरीके प्रसिद्ध महणसिंहने असत्यवादी करवानी इच्छाथी कोइ दुर्जने ६४ [हजार] सोनाना टंकावाळी तेनी लक्ष्मी प्रकाशित करी.पातशाहे सभामां तेने पूछयुं के–'तमारे त्यां केटलुं धन छे ? ' महणसिंहे कह्युं के–'तमे ७ दिन आपो, जेथी ते धन गणी शकुं.' त्यार पछी जोइने साचे साचुं जणाव्युं के–'चोराशी (?) हजार लाख छे. ते सिवाय रूपुं विगेरे घरनो बीजो सार जुदो जाणवो.

राजा (पातशाह) आश्चर्य पाम्यो के–'कोइ क्यांय सर्वस्व

पातशाहे एक वखते जगत्सिंह शेठने पोताना खजाना-मांथी मंगावीने सूर्य जेवुं तेजस्वि रत्न दर्शाव्युं अने पूछ्युं के 'आ रत्न जेवुं बीजुं रत्न पृथ्वीमां क्यांय छे ? ' जगत्सिंहे जवाब आप्यो के—'पृथ्वी पर शुं बे पातशाहो होय ? ' तेना वचनथी रंजित थयेला पातशाहे ते उत्तम रत्न तेने स्थापन करवा माटे (थापणरूपे) आप्युं हतुं. भेद विना बंनेनी गाढ प्रीति थइ हती.'

कहेतुं नथी. जेने म्हारा तरफथी द्रव्यना अपहरणनी बीक पण न लागी' सुलताने सत्यवादी मंत्रीनी गुण—प्रशंसा करी के—'आ सचिव म्हारा राज्यमां पृथ्वी पर शिरोमणि छे. ' तथा तेनो सत्कार करी पहेरामणी आपी. तेनो यश पृथ्वी पर विस्तर्यो हतो."

१ "एक वखते सुलताननी आगळ कोइए ३ रत्नो वेचवा आण्यां हतां. रत्न—परीक्षको(झवेरीओ)ने बोलाववामां आव्या. सघळाए रत्नो वखाण्यां. त्यार पछी शाह जगसिंहने दर्शावतां तेणे कह्युं के—'पहेलुं अमूल्य छे, बीजुं लाख मूल्यनुं अने त्रीजुं कोडीना मूल्यनुं छे.' राजाए पूछ्युं के—'केम जणाय ?.' पहेलुं घणना सो घावडे पण भांग्युं नहि, बीजुं घणना दस घा थतां सहज उच्छ्वसित थयुं (उखड्युं), अने त्रीजुं घणनो घा थवाथी बे ककडा थइ गयुं. पहेलो घा थतां सूक्ष्म देडकी नीकळी. तेथी शाह मानीता थया. ते वणिक्(वेपारी)ने पहेला रत्नना ३ लाख

अपाव्या, बीजा रत्नना एक लाख अपाव्या अने त्रीजा रत्ननी कोडी अपावी हती. ” [ह. लि. कथाकोश कथा १९]

“ एक वखते सुलताने पोताना हाथमां श्रेष्ठ रत्न लइ पूछयुं के ‘जगसिंह ! आ रत्नथी बीजुं कोइ मोटुं श्रेष्ठ रत्न छे के नहि ?’ शाहे कह्युं के ‘ आथी श्रेष्ट रत्न आप छो.’ सुलताने एथी रंजित थइ घणी लक्ष्मी आपी हती.” (कथाकोश कथा १३)

“ धर्मधुरंधर शाह जगसिंहे वचन-माधुर्यादि गुणोथी धरापीठमां प्रशस्त नाम धारण कर्युं हतुं. जेने सुलताने एक वखते राजसभामां पूछयुं हतुं के-‘ शाह ! आ मणि (रत्न) सरखुं बीजुं छे ? कहो. ’ शाहे प्रत्युत्तर आप्यो हतो के-पातशाह ! पृथ्वीमां सुलतान एक ज होय, बीजो नहि. ते वचनथी रंजित थयेला राजाए तेने महाप्रसादपूर्वक पहेरामणी करी हती.” (उ. क.)

वि. सं. १५५९ मां इंद्रहंसगणिए रचेली उपदेशकल्पवल्ली वृत्ति(७मा पल्लव)मां प्रतिक्रमण करवाना विषयमां महण-सिंहनो प्रबंध सूचव्यो छे—

“ सुख संपदाओनुं स्थान, अनुपम गामो अने आरामोथी अलंकृत भूमिवाळो देवगिरि नामनो देश शोभतो हतो. त्यां ऊकेश-वंशमां शिरोमणि जगसिंह नामनो धनिक वसतो हतो. जे अनर्गल लक्ष्मीवाळो, महेभ्योनी मंडलीमां मणि जेवो, सौजन्यपात्र हतो. राज-सभाने शोभाववामां हीरा जेवा, गुण-लक्ष्मीना घरसमा जे धन्य श्रेष्ठीए अनर्गल धन-वृष्टिथी समस्त याचकोने पोष्या हता.

शुभ कर्मोद्वारा जेणे रत्नाकरथी उत्पन्न धन–राशि उपार्जन करी सुयश विस्तार्यो हतो, संसारनी असारता जोनार, मद मत्सरने तजनार, सदाचारी जे श्रीमान् चार प्रकारनी बुद्धिना सागर हता. जगत्ने आनंद पमाडनारा जे दानी, मननी आर्ति दूर करी धनने सदा सात क्षेत्रोमां वावता हता. दुर्भिक्ष(दुष्काल)मां, क्षीण-संपत्तिना प्रसंगमां ज्यारे दुरवस्थाथी अने अक्षेमथी लाखो लोको खळभळी उठ्या हता त्यारे ते श्रीमान् सेवा करवा योग्य थया हता. 'प्राप्त थयेली बहोळी चंचळ लक्ष्मीनुं सुफल हुं लइश.' एम विचारी जे श्रीमान् चडता उत्कृष्ट हर्षथी साधर्मिक लोकोने कुटुंब साथे सर्वदा जमाडे, परंतु ते साधर्मिको प्रतिदिन भोजन माटेनुं निमंत्रण मानता न हता; एथी तात्त्विक बुद्धिशाली जे श्रीमाने व्यवसाय(वेपार–उद्यम)ना वहानाथी पोतानुं द्रव्य आपी ३६० वणिकोने पोतानी समान कर्या हता, अने तेमनी द्वारा वर्षना ३६० दिवसोमां सदा नवीन नवीन प्रकारथी साधर्मिक–वात्सल्य कराव्युं हतुं. 'सारी अवस्थावाळा गृहस्थोना ते उत्सवो खरेखर प्रशंसायोग्य गणाय के जेमां सत्क्रियावाळा तत्त्वज्ञ सज्जनोनो सत्कार करवामां आवे.' × ×

ए जगसिंहनो पुत्र कामदेव जेवो रूपवंत, कपट रहित मनवाळो, सर्व शाहोमां श्रेष्ठ, क्रियानिष्ठ, मंत्रिराज महणसिंह धर्मकृत्योमां द्रव्यव्यय करतो हतो. बंने वखत प्रतिक्रमण करतो हतो. अन्य जनोनी आपदा हरतां पुण्यनो भंडार भरतो अने संसाररूपी सागरथी

केटलोक काळ वीत्या पछी कोइ पण कारणथी पातशाह तेना पर रुष्ट थया !! तेथी पातशाहे तेने कैदखानामां नखाव्या, तेनी रक्षा माटे पोताना एक सेवकनी योजना करी हती. तेवा वखते पण शेठने पातशाहे करेली परतंत्रताथी नही, परंतु पोताना पांच वेळाना धर्म–व्यतिक्रमथी खेद थतो हतो. तेथी ते सेवकने खानगीमां एकैक सोनानो टंको अपावी ए धर्मिष्ठ श्रीमान् पोतानी पुण्य–वेलाओने साधतो हतो. २१ दिवस सुधी २१ टंका अपावी तेणे पोतानां धर्मकार्यो कर्यां हतां.

त्यार पछी सुलताने प्रसन्न थइ तेने पोतानां शरीर परनां पांच आभूषणो अने पांच पंचरंगी दुकूलो (उत्तम वस्त्रो)नी पहेरामणी करी हती. त्यार पछी घणां वाद्यो अने घणा लोको साथे वाजते गाजते, याचकोने इच्छित दान आपता शेठ पोताने घरे आव्या हता.

पातशाह विगेरेथी डरतो ते रक्षक, एकांत थतां आवीने ते लीधेला टंका पाछा आपवा लाग्यो. शेठे कह्युं के–' भद्र !

पोतानो उद्धार करतो हतो. सज्जनो पर उपकार करतो अने दुर्जनोनो तिरस्कार करतो ते जगत्मां शोभतो हतो.

" चंचल अधिकारोने प्राप्त करीने जेणे शत्रुओ पर अपकार कर्यो नहि, मित्रो पर उपकार कर्यो नहि, बंधु–वर्गोनो सत्कार कर्यो नहि; तेणे शुं कर्युं ? "

में आ टंका तने समर्पण कर्या छे, तेथी तुं एने जेम रुचे तेम दे, भोगव अने सुखी था; कारण के में तारा प्रसादथी धर्मनुं अनुष्ठान कर्युं. धर्म संबंधी एक क्षण, करोडथी पण दुर्लभ छे. तेवा पांच पांच क्षणोने में एकैक टंकाद्वारा कृतार्थ कर्या. तेथी तने एथी पण अधिक द्रव्य आपवुं जोइए; तेने बदले लेवाय केम ? ' एम कही फरीथी वधारे दान आपी तेने विसर्जित कर्यो.[1]

[उपदेश-तरंगिणी (य. वि. ग्रं. पृ. २१३)मां सा. जगसिंहने बदले भूलथी साजणसिंह नाम छपायुं छे; त्यां पीरोज पातशाह द्वारा बंदी करातां ५० हाटको (सोनैया) द्वारा ५० प्रतिक्रमणो कर्यानो अने पाछळथी सुलताने तेनो सत्कार कर्यानो उल्लेख छे.]

---

१ " लोकने प्रसन्न करनार गुणवाळा, सुवर्ण-भूषणोथी भूषित थयेला, अमृत जेवुं भाषित करनारा ए अमात्यरूपी चंद्रमां वचन-छलथी सुलताने रोषथी लाल आंखवाळा थइ अधिकार-विषयक कंइक दूषण हृदयमां विचार्युं, अने तेने निगडो(बेडी)थी जकडी केदमां नाख्यो. बंदि(केदी)स्थानमां रहेवा छतां पण नियममां तेनी दृढता हती. लांघण थवा छतां पण ते प्रतिक्रमण करतो हतो. प्रतिदिन बब्बे सोनाना टंका आपवाथी रक्षको तेने प्रति-क्रमणनी वेळाए बंधनथी छोडता हता. क्रियामां रुचिवाळा, तेणे

सपादलक्ष (सेवालिक–अजमेर तरफनो देश)नो राजा एक वखते सुलताननी सेवा माटे हजूरमां आव्यो हतो. तेणे सुलतान आगळ बे वस्तु भेट धरी हती. (१) सूखडनो कटको अने (२) निर्मल मोतीनी जोड. ते अल्प भेट जोइ पातशाह क्षणवार रुष्ट जेवो थइ गयो हतो. सर्व सभ्यो जोई रह्या हता, परंतु कोइ परीक्षा करतो न हतो. सपादलक्षनो राजा, जनोनी मूर्खतानो विचार करतो हतो. ए अवसरे जगत्सिंहे पातशाहने जणाव्युं के–"आ बंने वस्तु अमूल्य छे. आ चंदनना खंडनुं माहात्म्य एवुं छे के–'अग्निथी तपेलुं सो मण प्रमाण तेल होय, तेमां पण आ चंदननो खंड नखातां ते तेल हिम जेवुं शीतल थई जाय. बीजुं, कोइ छ महिनाना तावथी पण पीडातो होय,

---

प्रतिक्रमणो करतां एक महिनाना ६० सोनाना टंका आप्या हता. भाग्ययोगे राजाए (पातशाहे) तेनो क्रिया करवानो संबंध जाणी तेने मुक्त कर्यो अने विशेष प्रकारे पहेरामणी करी. राजारूपी अग्निनी परीक्षामांथी पसार थएल मंत्रिराजरूपी सोनुं विशेष तेजस्वी अने यशस्वी थयुं हतुं. तेना गुणो गातां होय तेवां वाद्यो वागतां ते आडंबरपूर्वक पोताना आवास पर आव्यो हतो. प्रतिक्रमणादि समस्त पुण्य करनारा ते मंत्रीने जोइ अन्य भव्यो क्रियाओमां सद्भाववाळा थया हता.

राजाना सन्मानने जोई डरतो केदखानानो अधिकारी लीधेलुं द्रव्य पाछुं आपवा माटे मंत्रीना मंदिरे पहोंच्यो अने बोल्यो–

ते आ चंदननो खंड घसीने पीए, तो ते पण रोगरहित थाय.

पातशाह ! आ बंने मोतीनुं कौतुक पण अवधारो–' आ बेमांथी एक मोती वेचीने बीजुं गांठे बांधवामां आवे तो सांझे पाछुं उत्सुक मित्रनी जेम जरूर तेने मळे.' ए सांभळी पातशाह विस्मय पाम्यो अने ते बंने वस्तुनी परीक्षा करावी.[1]

पातशाहे जगत्‌सिंहने पूछ्युं के–'तमे केवी रीते जाणो छो ? ' तेना प्रत्युत्तरमां जगत्‌सिंहे जणाव्युं के–'बालपणथी अभ्यासथी वस्तु–परीक्षा हुं शीख्यो छुं. '

तेना वचनथी प्रसन्न थइ पातशाहे सपादलक्षना राजा

' मंत्रीश्वर ! प्रसन्न थाओ. राज–प्रसादने प्राप्त थयेला तमे म्हारा–वडे भेट करातां आ सोनाना टंकाओने स्वीकारो. ' मंत्रीचंद्रे जणाव्युं के–' आपे म्हाराथी बीहवुं नहि. म्हारो ते क्षण धर्म–कार्यथी सफल थयो. मनुष्यना आयुष्यनो जे क्षण, करोडो रत्नोद्वारा पण दुर्लभ छे, तेने में प्रतिक्रमणथी पवित्र कर्यो छे. ' मंत्रीश्वरे २४ सुवर्ण टंकाओथी तेनो सत्कार कर्यो हतो." (उ.क.)

१. " महेभ्य जगसिंहनो पुत्र महणसिंह हतो, जेमां कलाओ वृद्धि पामी हती. गुरुना सदुपदेशथी कुमित्रोनो कुसंग तजी जे सुशील, निर्मल अंतःकरणवाळो, शीतल, प्रियभाषी अने विनयनम्र मस्तकथी शोभतो हतो.

जोडले उत्पन्न थनारां अने बीजाना हाथमां जवा छतां

पर तथा जगत्सिंह पर घणो प्रसाद विस्तार्यो हतो. एवी रीते जीवन पर्यंत पांच पुण्य वेळाने आराधतां अने सत्य भाषा बोलतां शेठ जगत्सिंहे जैनशासनने लांबा वखत सुधी जागतुं कर्युं हतुं."

उपर्युक्त जगत्सिंह शेठनो पुत्र मदनसिंह पण चतुर होइ लोकोमां तेवो ज प्रख्यात थयो हतो. पहेलां खुरासाणनिवासी धनद नामनो वस्तुपति तेना पितानो प्रीतिपात्र हतो. जगत्-सिंह स्वर्गवासी थया त्यारे ते योगिनीपुर(दिल्ली)मां व्यव-साय माटे आव्यो हतो, अने तेने घरे पण आव्यो हतो. कुटुंबनुं कुशल तथा तेनो निर्वाह, व्यवसाय विगेरे पूछी जगत्सिंहनी जेम तेना पुत्र साथे पण व्यवहार करवानी इच्छावाळो थयो हतो, परंतु तेनी परीक्षा माटे तेणे उपाय कर्यो. मायावडे कृत्रिम आदर दर्शावी तेणे मदनसिंहने कह्युं के–'तारा पिता पासेनुं मारुं जे लेणुं छे, ते तुं आप; कारण के घणां वर्षो सुधी में तारा बाप साथे व्यवहार कर्यो,

पण परस्पर मळी जनारां शिव–शक्ति नामनां, मोतीओने लइ महणसिंह दिल्लीमां गयो हतो, अने त्यां पातशाहने नमीने गंगाजल जेवां निर्मळ ए मोती भेट कर्यां हतां. ए मोतीओनो प्रभाव सांभळी सुलतान चमत्कार पाम्या. पातशाहे महणसिंहने पोताना अंतःपुर(जनानखाना)नो रक्षाधिकारी बनाव्यो हतो. राजमान्य थइ ते सदा धन्य अने उदार बन्यो हतो." (उ. क.)

तेथी लेणदेण पण घणी थइ. पहेलां सो घोडा आपीने देवुं वाळ्युं हतुं, अने उत्सुकताथी पोताना नगरमां पहोंची गया त्यारे वाकीनुं लेणुं अहिं रही गयुं हतुं. 'केटलुं लेणुं छे?' एम पूछातां तेणे कह्युं के—जूनां नाणां प्रमाणे ३२००० वत्रीश हजार लेणा थाय, जो वरावर होय तो आपो. मदनसिंहे पण कह्युं के—" पिताजीनुं देवुं थोडुं अथवा वधारे वहीमां में जे प्रमाणे जोयुं ते नाम प्रमाणे में आपी दीधुं छे, परंतु तेमां आपनुं नाम में क्यांय जोयुं नथी, तो लख्या वोल्या विना लेणुं केवी रीते लेणुं थइ शके?" चित्तमां हर्षित थवा छतां पण ते शेठ रुष्ट जेवो थइ तेना प्रत्ये वोल्यो के—' अरे! पितानुं देवुं पुत्र आपे तेमां विचार शो?' मदनसिंह—' शेठ! आप आ फोकट प्रयास शा माटे करो छो? साक्षी विना अथवा लखाण विना लेणुं लइ शकाशे नहि.' ते शेठ सुलताननी सभामां गयो अने एकांत करावी सुलतानने विज्ञप्ति करी के—' परीक्षा माटे जगत्सिंहना पुत्र साथे में वनावटी कलह मांड्यो छे; जे ते प्रलाप करवामां मने कोइ दोष देवो नहि.' एवी रीते खानगीमां

महणसिंह वंने वखत प्रतिक्रमण अने त्रिकाल देव—पूजा करतो हतो. साधुओने वहोरावी(दान आपीने) ज जमतो हतो. प्रतिवर्ष त्रण वार साधर्मिक—वात्सल्य अने त्रण वार संघ—पूजा करतो हतो. " (उ. क. प. ७) आ ज महणसिंहे दिल्लीमां वि. सं. १४०५मां पोते आपेली वसतिमां वास करावी राजशेखर-

कही सर्व समक्ष ते बोल्यो के–'पातशाह! जगत्सिंह पासे म्हारुं पहेलानुं लेणुं छे, ते आ तेनो पुत्र आपतो नथी; तो शुं करवामां आवे? ए आप फरमावो.' पातशाहना बोलाव्याथी सभामां आवेला जगत्सिंहना पुत्रे पण पोतानुं स्वरूप कह्यं. तेणे पोतानुं कह्युं. बंनेनो विवाद थयो. वस्तुपति बोल्यो के– 'जो तारा बाप पासे लेणुं न होय तो सौना देखतां तुं बापना सोगन कर.' पुत्र(मदनसिंह) धीरजपूर्वक बोल्यो के–' आप लहेणुं ल्यो अथवा म्हारुं सर्वस्व ल्यो, परंतु हुं पिताजीना सोगन नहि करुं. करोडो उपकारोथी पण जेनो बदलो वाळी शकाय नहि तेवा पिताजीने शुं हुं ३२००० बत्रीश हजारमां वेचुं ?'

महणसिंहनी एवा प्रकारनी उक्ति सांभळी सौ सभ्योए विस्मयपूर्वक तेनी प्रशंसा करी. ते वस्तुपति पण बोल्यो के–"वत्स! तुं धन्य–शिरोमणि छो, के जेनुं आवा प्रकारनुं साहस छे. में आ परीक्षा करी, म्हारुं लेणुं कंइ ए नथी.' सिंहनो बच्चो सिंह जेवो होय, सूर्यथी अंधकारनी वृष्टि न होइ शके, चंद्रथी अंगाराओनी वृष्टि न होइ शके. एवी रीते तेणे तेनी प्रशंसा करी तेने जगत्सिंहना श्रेष्ठ स्थान पर स्थापी तेनी जेम महणसिंह साथे पण व्यवहार विस्तार्यो हतो.' एवी

सूरिद्वारा चतुर्विंशति–प्रबन्ध ग्रन्थ कराव्यो हतो–ए पहेलां (पृ. ४३ मां) अम्हे जणाव्युं छे.

१ "ऊकेश (ओसवाळ) ज्ञातिना आगेवान शाह जग-

रीते मदनसिंह पण राजा विगेरेमां वल्लभ थयो हतो. 'ज्यां ज्यां गुणोनो आदर होय, त्यां त्यां प्रतिष्ठा संभवे छे.'

" एक वखते मांदा थयेला सुलतानने मेवाडथी आवेला प्रोला नामना महावैद्ये रोगरहित कर्या हता. विविध औषधो अने योगोनो जाणकार, रसांगवेदी शास्त्रज्ञ ते वैद्यराज त्यारथी राजा विगेरेनो पण मान्य थयो हतो. अत्यंत बलवान् ते वैद्यराज एक साथे ९ नाळिएर भांगी नाखतो हतो, अने सोपारीने पोताना अंगुठावडे नाळिएरमां नाखी शकतो हतो. बेने ढींचणो पर, बेने काखमां, बेने कफोणि पर, बेने खभा पर अने एकने चिबुक पर राखीने ते नव नाळिएरने चूर्ण करी

सिंहने घरे कोइ खुरसाणी वणिक् पांच लाख टंका थापण मूकी करीने गयो हतो. ७ वर्षो गयां. त्यार पछी तेणे जगसिंहने मृत्यु पामेलो सांभळी विचार्युं के-' धन गयुं. ' फरी विचार्युं के-' तेनो पुत्र महणसिंह छे, तेनी परीक्षा करीए.' त्यार पछी त्यां आवीने तेणे कह्युं के-' महणसिंह ! तम्हारा पिता म्हारा मित्र हता. में तमारा पितानी पासे × × ते बंने सुलताननी पासे गया, बंनेए पोतपोतानो संबंध कह्यो. खुरसाणीए कह्युं के-' आप पिताना सम करो. ' महणसिंहे कह्युं के-' पांच लाखवडे शुं बापने वेचे ? ' त्यार पछी तेने पांच लाख आप्या. खुरसाणीए जगसिंहना अक्षरो दर्शावीने कह्युं के-' सिंहथी सिंह ज थाय छे.' ए साचुं थयुं. महणसिंहने एक लाखनी पहे-

नाखतो हतो. ते महावैद्य एक वखते महाजन साथे शाला (उपाश्रय)मां आव्यो हतो. त्यां वेषधारीद्वारा कराता व्याख्यानमां बेठो हतो. त्यां कोइक अधिकारमां तपागच्छनी अवहीलना अने पोतानी प्रशंसा करी त्यारे पोलाक बोल्याः—'अरे बोकडा! शुं बोले छे ? महाजनने जोतो नथी ?' एम कही एकदम ऊठीने तेने लातथी प्रहार कर्यो हतो. वेषधारी रोषथी लालचोळ थइ सुलताननी सभामां गया अने वैद्य पण त्यां पहोंच्या. बंनेए पोतपोतानो वृत्तांत कह्यो. बंनेनुं मान्यपणुं होवाथी राजा बोल्या नहि, तेवामां मदनसिंह बोल्या—'पातशाह ! आमां विचारणा शी ? एके जीभ वापरी अने बीजाए हाथ चलाव्यो. एकनो दंड थतां बीजानो पण दंड थवो जोइए; तेथी बंनेनो पण न करवो.' ए सांभळी पातशाहे अंतःकरणमां हसतां ते बंनेने मृदु वचनोथी सान्त्वन पमाडी पोतपोताना स्थानमां विसर्जित कर्या हता.'" (उपदेशसप्तति अ. ५, उ. ७, पृ. ८६)

रामणी करी, मैत्री करीने ते गयो." (शु. कथाकोश कथा १४)

१ "एक वखते मेवाडी वैद्य पाल्हाक, सुलताननी चिकित्सा माटे आव्यो हतो, ते कोमलसूरिनी शालामां गयो हतो, त्यां तेओए (कोमल यति–सूरिओए) तपागच्छना सूरिवरोनी निंदा करी हती, तेथी तेणे कोमल यतियोने हकित कर्या, तेथी कलह थयो. केटलाकना हाथ भांग्या, केटलाकनां मोढां भांग्यां, त्यार पछी वाद करता सौ सुलताननी पासे गया हता. सुलताने सर्वनी चेष्टा जाणी कह्युं के—'कोनो दंड कराय ? सर्वे न्यायी

अने सर्वे अन्यायी छो. हवे पछी कोइए पण कलह करवो नहि. ए प्रमाणे समता पर पीरोज सुलताननो संबंध" जिनप्रभसूरिना केटलाक अवदात संबंधोमां शुभशीलना कथाकोश [कथा १७]मां जणावेल छे.

केटलाक दुर्जनोए असद् दूषणोनी घोषणा करी पवित्र एवा महणसिंहने पण दूषित कर्यो हतो. अंतःपुरना द्वार पर आवतां भूपाले (पातशाहे) ते स्थानमांथी नीकळता ते(महणसिंह)ने जोयो. प्रज्वलित कोपाग्निनी ज्वालाथी लालचोळ आंखोवाळा थइ पातशाहे तलवार खेंची; वस्त्रो उतरावी प्रहार करतां ७ ताळांवाळो कच्छोटो जोयो. पातशाहे ताळांओ उघाडवा कह्युं. महणसिंहे जणाव्युं के– 'कुंचीओ स्त्रीना हाथमां छे.' घरे गया पछी ताळांओ उघाडवानुं बनशे.' [ग्रीक राज्योमां आवी पद्धति होवानुं जणाय छे] पातशाहे तेना शरीर–नियंत्रणनी अने उज्ज्वल शीलनी प्रशंसा करी.

शीलना माहात्म्यथी महणसिंहनी कीर्ति आदन(एडन) बंदर सुधी पहोंची हती. सर्व कलाओथी युक्त कामलता नामनी रूपवती वेश्या तेनुं नाम सांभळी खेंचाइने त्यां आवी. अद्भुत नृत्य करतां नर्तकीए सुलतानने रंजित कर्यो. दानना अवसरे तेणीनी याचना प्रमाणे महणसिंहने घरे नाटक(नृत्य) प्रकट करवानुं पातशाहे फरमाव्युं. ते चतुर नर्तकीए त्यां आवी ७ वार नृत्य कर्युं छतां 'आ महणसिंह छे' एम जाण्युं नहि. त्यार पछी गुणी महणसिंहे नाटक कराव्युं. तेने जोइ हृष्ट तुष्ट थयेली, पोताने धन्य मानती ते नर्तकीए नृत्य कर्युं. गुणवंत महणसिंहनी परीक्षा करी सुलतान आगळ प्रशंसा करी हती." (उपदेशकल्पवल्ली प. ७)

[५]

जिनप्रभसूरिनो विशेष परिचय

(प्राचीन प्राकृत *प्रबंधना आधारे)

जिनसिंहसूरि

जिनपतिसूरिना पट्ट पर जिनेश्वरसूरि थया (जेमना पिता नेमिचंद्र भंडारी हता). तेमने बे श्रीमालसंघना गुरु शिष्यो हता. एक श्रीमाल जिनसिंहसूरि अने बीजा ओसवाल जिनप्रबोधसूरि. एकवखते जिनेश्वरसूरि पल्हूपुर (पालणपुर) नगरमां पोसहशालामां बेठा हता, एवामां सूरिनो

---

* आ प्राकृत गद्य प्रबंधनी प्राचीन प्रति जोवा मळी शकी नथी, परंतु ते उपरथी नवी लखावेली ९ पत्रवाळी अशुद्ध एक प्रति हालमां ज म्हने बीकानेर(मारवाड)थी जिनहरिसागरसूरिजीए जोवा मोकलावी छे, तेनी रचना विक्रमनी पंदरमी सदीमां थइ हशे, तेम धारवामां आवे छे. तेमां कर्त्तानुं नाम जणातुं नथी, तेम छतां जिनप्रभसूरिना नजीकना कोइ शिष्य-प्रशिष्ये तेनी रचना करी हशे-तेम तेना उल्लेखो परथी अने शैली परथी कल्पना करी शकाय. तेमां जिनप्रभसूरिना पूर्वजो(वर्धमानसूरि, जिनेश्वरसूरि, जिनचंद्रसूरि, अभयदेवसूरि, जिनवल्लभसूरि, जिनदत्तसूरि, जिनचंद्रसूरि, जिनपतिसूरि, जिनेश्वरसूरि)ना अने गुरु जिनसिंहसूरिना प्रबंधो जणाव्या पछी छेल्ले जिनप्रभसूरिनो प्रबंध

दंडो अकस्मात् 'तडतड' एवो शब्द करीने बे ककडा थइ गयो. सूरिए पूछयुं के-' शिष्यो ! आ शब्द केम थयो ? ' शिष्योए जोइने कह्युं के-स्वामी ! तम्हारो आखो दंडो बे ककडा थइ गयो. ते पछी आचार्ये विचार कर्यो के-" म्हारी पाछळ बे गच्छो थशे, तो हुं जाते ज गच्छने म्हारा हाथमां करीश."

आ ज अवसरमां श्रीमाल संघोए मळीने विचार्युं के-' आ देशमां कोइ गुरु आवता नथी. चालो गुरु पासे, गुरुने लावीए.' सकल संघ मळीने गुरु पासे गयो. आचार्यने वांदीने सकल संघे विज्ञप्ति करी के-' स्वामी ! अम्हारा देशमां कोइ पण गुरु आवता नथी, तो अम्हे शुं करीए? गुरु विना सामग्री (धर्म-साधना) न थाय.' गुरुए पूर्व निमित्त जाणीने श्रीमालवंशमां उत्पन्न थयेला जिनसिंहगणिने पोताना पट्ट पर स्थाप्या. ' जिनसिंहसूरि ' एवुं नाम कर्युं अने कह्युं के-' आ श्रावको में तमने सोंप्या, संघ साथे जाओ. ' त्यारपछी गुरुने वांदी जिनसिंहसूरि श्रावको साथे आव्या. सर्व श्रीमाल संघोए कह्युं के-' आजथी मांडीने आ ज अम्हारा धर्माचार्य छे. '

छे. एमना पूर्वाचार्यो संबंधी वृत्तांत अन्यत्र प्रकाशित थयेल होवाथी अने केटलाकनो परिचय अम्हे अन्यत्र आपेल होवाथी अहिं प्रस्तुत प्रबंधनो ज अनुवाद प्रकट करवामां आवे छे. पहेलां सूचवेला उल्लेखो साथे तुलनात्मक दृष्टिए सरखाववाथी आ प्रबंधनी उपयोगिता समजाशे अने पुनरुक्ति जणाशे नहि.

आथी बे गच्छो थया. वि. सं. १२८० संवत्सरे पल्हूपुर (पालणपुर) नगरमां जिनेश्वरसूरिए जिनसिंहने सूरि कर्या, पद्मावती-मंत्रनो उपदेश कर्यो. केटलांक वर्षो पछी जिनेश्वरसूरि देवलोकमां गया.

जिनप्रभसूरिनां जन्म-दीक्षा-सूरिपदादि

जिनेश्वरसूरिना पट्ट पर जिनसिंहसूरि थया, तेओ पद्मावतीना मंत्रनी साधनामां तत्पर थइ नित्य ध्यान धरता हता. ध्यानना अंतमां पद्मावतीए कह्युं के-' तम्हारुं आयुष्य छ मास (?) छे.' सूरिए कह्युं के ' म्हारा शिष्योने प्रत्यक्ष थजो, म्हारा पट्ट पर कोण थशे ? ए कहो. ' पद्मावतीए कह्युं के-" सो(?मो) हिलवाडी नगरीमां तांबी गोत्रने पवित्र करनार महाधर नामनो महर्द्धिक(श्रीमान्) श्रावक छे. तेना पुत्र रत्नपालने खेतल्ल-देवी भार्याथी उत्पन्न थयेल सुभटपाल नामनो पुत्र सर्वलक्षण-संपन्न छे, ते तम्हारा पट्ट पर जिनप्रभसूरि नामना भट्टारक जिनशासनना प्रभावक थशे. "

ए वचन सांभळी जिनसिंहसूरि त्यां गया. मोटा महोत्सव-पूर्वक श्रावके पुर-प्रवेश कराव्यो. पछी सूरि महाधर शेठने घरे गया. आचार्यने जोइ [शेठ] सात आठ पगलां सामे गया. वंदन करी आसन पर निमंत्रण कर्युं-' भगवन् ! म्हारा उपर मोटो प्रसाद कर्यो के-आप म्हारे घरे पधार्या, परंतु आगमननुं प्रयो-

जन कहो, त्यारपछी गुरुए कह्युं–' महानुभाव ! तम्हारे घरे हुं शिष्य–निमित्ते आव्यो छुं, म्हने एक पुत्र आपो. ' तेणे 'तथा' कही ते स्वीकार्युं. अन्य पुत्रो साथे वस्त्र विगेरेथी संस्कार करीने ते पुत्र आण्यो, अने कह्युं के–' आमांथी तम्हने जे रुचे, तेने ग्रहण करो. ' गुरुए कह्युं के–' आ (अन्य) पुत्रो दीर्घ आयुष्यवाळा थइ तम्हारे घरे रहो, परंतु जे सुभटपाल बाल छे, ते आपो. ' तेमज कर्युं. वहोराव्यो(अर्पण कर्यो). तेने सुमुहूर्ते दीक्षित कर्यो. वि. सं. १३२(३)६ वर्षे दीक्षा, शिक्षा आपी, पद्मावती–मंत्र समर्पित कर्यो. अनुक्रमे ते गीतार्थ–चूडामणि थया.

वि. सं. १३४१ वर्षे किढिवाणा नगरमां जिनसिंहसूरिए सुमुहूर्ते पोताना पट्ट पर जिनप्रभसूरिने स्थाप्या; जिनसिंहसूरि देवलोकमां गया.

पद्मावतीना प्रभावथी चमत्कारो

जिनसिंहसूरिना पट्ट पर जिनप्रभसूरि थया. तेने पूर्व पुण्यना वशथी पद्मावती प्रत्यक्ष थई हती. सूरिजीए एक वखते पद्मावतीने पूछ्युं के–' भगवति ! कहो, कया नगरमां म्हारी उन्नति थशे ? ' पद्मावतीए जणाव्युं के–" तम्हारो विहार जोगिणी–पीठ ढीली(दिल्ली)नगरमां महोच्छ्रय(महोदय)वाळो थशे, त्यां तम्हे जाव. " त्यार पछी गुरुए विहार कर्यो, अनुक्रमे योगिनीपुरमां आव्या. बहार वाहा(शाखा)पुरमां उतर्या.

महम्मदशाहनी मुलाकात

एक वखते सूरि, वहार शौचभूमि तरफ गया हता. त्यां मिथ्यादृष्टि अनार्यो(मुस्लीमो) लेष्टु (ढेफां–ढेखाळा) विगेरेथी पराभव करवा लाग्या. तेथी गुरुजी वोल्या के–' पद्मावति ! सारो महोच्छ्रय थयो ! ' त्यार पछी पद्मावतीए ते वध करनारनी ज ते लेष्टु(ढेफां–ढेखाळा) विगेरेथी पूजा करी. तेथी अनार्यो (मुस्लीमो) पलायन करता महम्मदशाहनी पासे गया. सूरिनो वृत्तांत कह्यो. तेथी चित्तमां चमत्कार पामेला शाहे पूछ्युं के–' ते पुरुष क्यां छे ? ' तेओए जणाव्युं के–" अम्हे तेने वहारना प्रदेशमां जोयो हतो. " पातशाहे प्रधान पुरुषोने आदेश कर्यो–' जाओ, तम्हे तेने अहिं आणो, जेथी हुं तेने जोउं. ' तेओए जइने गुरु पासे निवेदन कर्युं के–' स्वामी ! अमारा प्रभु(शाह) पासे आवो, त्यार पछी तमे जजो. ' त्यार पछी आचार्य पोळ(राजमहेल)ना द्वारे जइने रह्या. सेवकोए जइने निवेदित कर्युं. तेओ शाहने निवेदन करे ते समयमां सूरिए शिष्योने कह्युं के–' हुं कुंभकासन करुं छुं, ज्यारे शाह आवे, त्यारे तम्हारे कहेवुं के–' आ अम्हारा गुरु छे. ' त्यार पछी ते कहेशे के–' जेवा हता, तेवा करो. त्यार पछी ' तम्हे भीनुं वस्त्र धरी उठाडजो. " ए प्रमाणे कहीने गुरु ध्यानमां वेठा, कुंभ–समान थया. त्यार

पछी महम्मदशाहे आवीने शिष्यने पूछ्युं के–' तम्हारा गुरु क्यां छे ?' तेणे कह्युं के–' तम्हारी आगळ देखाय छे. ' शाहे कह्युं के–' ते पहेलां जेवा हता, तेवा करो. ' त्यार पछी शिष्ये वस्त्र सरस करी सज्ज कर्या. ऊठीने सूरिए धर्म–लाभनी आशिष आपी. त्यार पछी बंनेनो कथा-संलाप थयो.

व्यंतरनो वळगाड दूर करवो

शाहे कह्युं के–' स्वामी ! अम्हारी प्राणप्रिया बालादे राणी छे, तेने व्यंतर वळग्यो छे; तेथी तेणी पोताना देहपर वस्त्रोने ग्रहण करती (पहेरती) नथी, शुश्रूषा पण करती नथी. तमे प्रसन्न थइने तेने साजी करो. में मंत्र–जंत्रना जाणकारोने अने चिकित्सा करनाराओने बोलाव्या हता; परंतु ते जेने जेने जुए तेने तेने लेष्टु (ढेफां–ढेखाळा), लाठी विगेरेथी हणे छे. तमे प्रसाद करीने हमणां तेने जुओ. ' गुरुए कह्युं के–" तम्हे तेनी पासे जाओ अने एवी रीते निवेदन करो के–जिनप्रभसूरि तम्हारी पासे आवे छे. " शाहे जइने कह्युं. ते वचन सांभळी सहसा ऊठीने तेणीए कह्युं–' दासी ! वस्त्र लावो. ' त्यार पछी दासीओए लावीने वस्त्र पहेराव्युं. तेथी शाह चमत्कार पाम्या. आवीने गुरुने कह्युं–' तेनी समीपमां आवो, तेने तम्हे जुओ. ' सूरि त्यां गया अने तेने जोइने सूरिए कह्युं के–'रे दुष्ट! तुं अहिं क्यां आव्यो ? तुं आनी पासेथी जा. तेणे जणाव्युं के–' हुं केम

जाउं ? सारुं घर मळ्युं छे.' गुरुए कह्युं के-'बीजे घर नथी ?' तेणे जणाव्युं के-'आवा प्रकारनुं नथी.' त्यार पछी गुरुए मेघनाद क्षेत्रपालने बोलाव्यो अने कह्युं के-'आ (व्यंतर)ने दूर कर.' त्यार पछी मेघनादे ते व्यंतरने खूब पीडा करतां व्यंतरे जणाव्युं के-' हुं क्षुधातुर छुं-भूखथी पीडाउं छुं, म्हने कंइक भक्ष्य (खावानुं) आपो.' 'शुं आपुं?' एम पूछतां तेणे कह्युं के-'मने पाडा विगेरे आपो.' गुरुए कह्युं के-' म्हारी आगळ एवुं न बोलो, हुं तमने मजबूत बंधनथी बांधुं छुं.' त्यार पछी सूरिए मंत्रनो जाप कर्यो. ते पछी व्यंतरे कह्युं के-' स्वामी ! तम्हे सर्व जीवो प्रत्ये दयाने पाळनारा छो, म्हने केम पीडो छो ?' सूरिए कह्युं के-' तुं आ स्थानमांथी जा.' तेणे कह्युं के-' म्हने कंइ पण आपो.' 'शुं आपुं ?' एम पूछातां तेणे कह्युं के-' घी, गोळ साथे लोट आपो.' शाहे कह्युं के-' ते आपुं छुं.' गुरुजीए कह्युं के-' हुं केम जाणुं के-तुं गयो छे ?' तेणे कह्युं के-म्हारा जतां अमुक पीपळानी डाळ पडशे, तेथी जाणज्यो. त्यार पछी रातना समये ते प्रमाणे ज थयुं. प्रभातमां बालादे राणीने सज्ज(साजी) थयेली जोइने शाहने महान् हर्ष थयो. तेणे निवेदित कर्युं के-' प्रिया ! जो आ महानुभाग (महाप्रभावक) न आव्या होत तो तुं क्यां होत ?' ए सांभळीने तेणीए कह्युं के-" स्वामि ! आ (पूज्य पुरुष)

म्हारा पिता–सरखा छे. आ महात्मा ज्यारे तमारी पासे आवे त्यारे तमे एमनी आगता–स्वागता करज्यो, एमने अर्धा आसने बेसारज्यो. " शाहे ते प्रमाणे स्वीकार्युं. राजा गुरु पासे जता हता, गुरुने पोताने घरे (राज–महालमां) लावता हता, अर्धासन आपता हता. एवी रीते सुखे सुखे काल व्यतीत थतो हतो.

राघवचैतन्यने हरावबा

त्यार पछी सर्व पाखंडो(दर्शनानुयायी–मतवाळा)नो प्रवेश थयो. आ प्रसंगमां वाणारसी (बनारस–काशी)थी चौद विद्यानो पारगामी, मंत्र–तंत्रनो जाणकार, राघव-चैतन्य ब्राह्मण आव्यो. ते आवीने राजाने मळ्यो. शाहे तेने बहु मानीतो कर्यो.[1] ते हंमेशां राजा पासे आवतो हतो. एक प्रसंगे सूरि(जिनप्रभ) सभामां बेठा

१ एपिग्राफिआ इन्डिका (पृ. १९२–१९४) मां तथा निर्णयसागर प्रेसनी प्राचीन लेखमाला (भाग २, ले. १००) मां प्रकट थयेल यमकच्छटावाळा ज्वालामुखी–देवी–स्तोत्रना रच-नार राघवचैतन्य मुनि आ जणाय छे. ते स्तोत्र(शिलालेख)मां तेना नामनुं सूचन छे, कांगरा(डा) (पंजाबना) राजा संसारचंद्रनी प्रशस्ति पछी त्यां प्रस्तुत साहि महम्मदनी कीर्तिरूप ते परम योगिनी(ज्वालामुखी)ने सूचववामां आवी छे–

हता, राघवचैतन्य विगेरे कथा–विनोद करता हता. राघवचैतन्ये दुष्ट स्वभावथी चिंतव्युं के–' आ जिनप्रभसूरिने दोषवंत करीने आ स्थानमांथी अटकावुं–कढावुं.' एवो विचार करी तेणे विद्याना बलथी शाहना हाथमांथी मुद्रारत्न(वींटी)नुं अपहरण करीने सूरि न जाणे तेवी रीते जिनप्रभसूरिना रजोहरण(धर्मध्वज–ओघा)मां नाखी दीधुं. पद्मावतीए सूरिने निवेदित कर्युं के–' तम्हने चोर बनाववानी इच्छाथी राघवचैतन्ये शाहनी पासेथी मुद्रारत्ननुं अपहरण करी तम्हारा रजोहरणमां नाखेल छे. तमो

" श्रीमद्राघवचैतन्यमुनिना ब्रह्मवादिना ।
[स्तव]रत्नावली सेयं ज्वालामुख्यै समर्पिता ॥ "
' श्रीमत्साहिमहम्मदस्य जयतात् कीर्तिः परा योगिनी ।'

नि. सा. नी काव्यमालाना प्रथम गुच्छकना प्रारंभमां मूकायेल मंत्रमालागर्भित महागणपतिस्तोत्रना कर्ता पण आ कवि जणाय छे. तेनी व्याख्या–टिप्पणीमां तेने ' परमहंस परिव्राजकाचार्य ' विशेषणथी परिचित कराव्या छे. शार्ङ्गधरे शार्ङ्गधरपद्धति (सुभाषितावली)मां केटलांक पद्यो ' श्रीराघवचैतन्यश्रीचरणानां ' उल्लेख साथे सूचवेलां छे, तथा शाकम्भरीश्वर हम्मीर चाहुवाण(चौहाण)नी राजसभाने शोभावनार द्विजाग्रणी राघवदेवना पौत्र तरीके पोतानो परिचय कराव्यो छे. एथी ए राघवदेव ज संन्यासी थया पछी राघव चैतन्य नामे प्रसिद्ध थया हशे–एम जणाय छे.

सावधान थजो. ' त्यार पछी सूरिए ते मुद्रारत्न लइ, राघवचैतन्य न जाणे तेवी रीते तेना माथा परना वस्त्रमां नाख्युं. महम्मदशाह जुए छे, तो मुद्रारत्न नथी. आगळ पाछळ जुए छे, परंतु मुद्रारत्न जोवामां आवतुं नथी. शाहे पूछयुं के-' अहिं म्हारुं मुद्रारत्न हतुं, कोणे लीधुं ? ' एम पूछातां राघवे कह्युं के-' शाह ! आ सूरि पासे छे. ' शाह सूरि पासे मागवा लाग्या. सूरिए जणाव्युं के-' आ (राघव)नी पासे छे. तेणे पोतानां वस्त्रो दर्शाव्यां. सूरिए कह्युं के-शाह ! आ(राघव)ना माथा पर छे. माथा पर जुए छे, तो मुद्रा (वींटी) जोवामां आवी, शाहे ते लीधी अने राघवचैतन्यने कह्युं के-' धन्य छे !, तुं खरो सत्यवादी छो, के पोते लइने जिनप्रभसूरिने दूषण आपे छे ! ' तेथी राघवचैतन्य श्याममुखवाळो थइ पोताने घरे गयो.

एक वखते ६४ जोगणीओ श्राविकाओनुं रूप करी छळवा माटे सूरि पासे आवी; सामायिक लइने

६४ जोगणीओने व्याख्यान सांभळती बेठी. पद्मावश करवी. तीए सूरिने जणाव्युं के-' तमने छळवा माटे आ ६४ जोगणीओ आवी छे. सूरिए तेमने जोइ तो तेओ व्याख्यान-रसमां लुब्ध थइ अनिमेष दृष्टिए (आंखनो पलकारो कर्या विना) सूरि तरफ दृष्टि राखीने बेठी हती. सूरिए ते बधीने त्यां ज खीली

दीधी–थंभावी दीधी. उपदेश थइ रह्या पछी सर्व श्रावको अने श्राविकाओ वांदीने पोताने घरे पहोंच्या. ते जोगणीओ आसनथी उठवा जाय छे, तो आसनने साथे लागेलुं (चोंटेलुं) जुए छे. ए जोइने फरीथी बेसी जाय छे. त्यारे सूरिजीए कह्युं के–श्राविकाओ ! ऋषिओने विहारभूमिनी (भिक्षा माटे वहार जवानी) वेळा थइ गइ छे, तमे वंदन करी ल्यो." जोगणीओए जणाव्युं के–स्वामि! अम्हे तमने छळवा माटे आवी हती, परंतु तम्हे अमने छळी. प्रसाद करो, अम्हने मुक्त करो.' सूरिए कह्युं के–'जो तमे मने वचन आपो तो मुक्त करुं, नहि तो नहि.' तेओ बोली के–'बोलो शी वाचा छे?' सूरिए कह्युं के–'जो म्हारा गच्छना सूरि(अधिपति)ओ तम्हारा जोगिणी–पीठ(१ उज्जेणी, २ दिल्ली, ३ अजयमेर दुर्ग अने ४ भरूच)मां जाय, तेने तमे उपद्रव न करो तो तमने मुक्त करुं.' जोगणीओए ते, ते प्रमाणे स्वीकार्युं. मुक्त करवामां आवतां ते पोतपोताना स्थानमां गइ. त्यारपछी आचार्यो सर्वत्र जाय छे, तेमने उपद्रव थतो नथी. त्यारथी ते जोगणीओ पोतानी वाचाथी बंधाइने रहे छे.'

---

१ आ योगिनीओ संबंधमां जैनाचार्योना पण केटलाक उल्लेखो तथा प्रसंगो छे. सुप्रसिद्ध हेमचन्द्राचार्ये द्व्याश्रय(चौलुक्यवंश) महाकाव्यना १४ मा सर्गमां सिद्धराज जयसिंहने अवन्ती(माळवा)-नी योगिनी साथे थयेला संलापनो उल्लेख कर्यो छे.

एक वखते सूरि सभामां बेठा हता, तेवामां खुरासाणथी विद्यावंत एक कलंदर (मुस्लीम फकीर)

कलंदरनो गर्व हरवो आव्यो हतो. तेणे आवीने पोतानी कुल्लह(टोपी) उतारीने आकाशमां फेंकी महम्मदशाहने कह्युं के-' शाह! तम्हारी सभामां तेवो

जिनदत्तसूरिए ६४ योगिनीओने वश कर्यांना उल्लेखो मळे छे. योगिनीपीठ(दिल्ली)मां विहारनो निषेध कर्यो हतो, छतां दिल्लीना संघनी अभ्यर्थनाथी जिनदत्तसूरिना पट्टधर जिनचंद्रसूरि गया हता; तेथी प्रवेश-महोत्सवमां ज योगिनीओए तेमने छल्या हता अने तेओ मृत्यु पाम्या हता. पुरातन दिल्लीमां तेमनो थूभ(स्तूप) हतो, संघ तेनो यात्रा-महोत्सव करतो हतो-एवा प्राचीन उल्लेखो मळे छे.

तपागच्छना धर्मघोषसूरिए उज्जेणीना योगीना आक्रमण-प्रभावनो प्रतीकार कर्यो हतो अने विद्यापुर(वीजापुर)नी छलवा आवेली शाकिनीओने स्तंभित करी हती, तथा योगि-नीओए करेला मरकीना उपद्रवने मुनिसुंदरसूरिए संतिकर स्तवन-द्वारा शांत कर्यो हतो-एवा उल्लेखो मळे छे.

आचारदिनकर जेवा जैन ग्रंथमां तथा अन्यत्र कालिकापुराण विगेरेमां ६४ योगिनीओनां नामो तथा तंत्रसार विगेरे तांत्रिक ग्रंथोमां तेनी साधनानां प्रकरणो जणाय छे.

कोइ छे ? जे आ(टोपी)ने उतारे. ' शाहे सभा सामे जोयुं, त्यार पछी सूरि, महम्मदशाह प्रत्ये बोल्या के-' राजन् ! म्हारा वडे एनुं जे कराय ते तम्हे जुओ. ' त्यार पछी सूरिए आकाशमां रजोहरण(ओघो) फेंक्युं, तेणे जइने ते कुल्लह(टोपी)ने माथे पाडी.

त्यार पछी फरी पाछा ते कलंदरे एक स्त्री द्वारा लइ जवाता माथे रहेला पाणीना घडाने आकाशमां अद्धर ज थंभाव्यो. [पहेलां प्रमाणे] फरी पाछा शाहने कह्युं. सूरिए ते घडाने भांगीने पाणीने घडाना आकारवाळुं कर्युं. शाहे कह्युं के-' पाणीना कण-फुसिया (छूटा) करो. ' सूरिए ते ज प्रमाणे कर्युं. कलंदरनो अहंकार गयो.

अद्भुत निमित्त कथन

फरी पाछा एक वखते सभामां बेठेला शाहे कह्युं के-' म्हारी सभामां बेठेला विज्ञो ! मने आजे कहो के-प्रभातमां हुं कया मार्गे थइने रयवाडी (राजपाटी)ए जइश ? ' त्यार पछी सर्व विज्ञोए पोतपोतानी बुद्धि प्रमाणे विचारीने चिठ्ठीमां लखीने शाहने आप्युं. शाहे सूरि (जिनप्रभ)ने कह्युं-' तमे पण आपो. ' सूरिए पण पोतानी बुद्धि प्रमाणे चिठ्ठी आपी. ते सर्व चिठ्ठीओने लइने पोताना दुपट्टामां बांधी. शाहे विचार्युं के-' आ बधा असत्यवादी (खोटुं बोलनारा) अने तेम करुं. एवो विचार करी शाह

बंदर बुरजो भांगीने नीकळ्यो. जइने बहार क्रीडा करी. एक स्थानमां बेठेला सूरि विगेरे सर्वेने बोलाव्या, अने तेओने कह्युं के-' पोतपोतानुं लखेलुं वांचो.' ते बधाए पोतपोतानुं लखेलुं वांच्युं. सूरि(जिनप्रभ)ने कह्युं के- ' आपनो लेख वांचो.' आचार्ये लखेलुं वांच्युं के-" बंदर बुरजो भांगीने क्रीडा करीने शाह वडना झाड नीचे वीसामो करशे." ए सांभळीने शाह चमत्कार पाम्या अने बोल्या के- ' अहो ! आ आचार्य(जिनप्रभसूरि) परमेश्वर सरखा छे, के देवो पण एनी सेवा करे छे.'

---

१ आने मळती एक प्राचीन घटना जाणवामां आवी छे के-

मालवाना सुप्रसिद्ध महाराजा भोजे, पोते करावेला सरस्वती-कंठाभरण नामना शिव-प्रासादमांथी त्रणद्वारवाळा मंडपमांथी पोते कया मार्गे थइने नीकळशे ? आवो प्रश्न परमार्हत कवि धनपालने पूछ्यो हतो. पंडित धनपाले त्रिकालवर्त्ती सर्व वस्तुओना ज्ञानवाळा केवलि-प्रणीत अर्हच्चूडामणि नामना प्रश्नमय अतिप्रशस्त ग्रन्थना आधारे प्रश्न विचारी, तेनुं फल पत्रमां लखी, ते पत्रने माटीना गोळानी अंदर नाखी स्थगीधरने आपी महाराजाने पधारवा कह्युं हतुं. जैन देव, गुरु अने आगम साथे तेने असत्यवादी ठरावबानी इच्छाथी सूत्रधारोने बोलावी, मंडपनी पद्मशिलाने दूर करावी राजा उपरना मार्गेथी नीकळ्यो हतो, पछी पत्र वांच्युं तो तेमां तेवी रीते नीकळवानुं लख्युं हतुं—

वडने साथे चलाववो

त्यार पछी शाहे जिनप्रभसूरिने कह्युं के-' आ वड शीतल छायावाळो मनोहर छे, तो ते प्रमाणे करो के जेथी म्हारी साथे आवे.' सूरिए ते प्रमाणे कर्युं. पांच कोश पछी सूरिए कह्युं के--शाह! आ झाडने विसर्जन करो—रजा आपो तो पोताने ठेकाणे जाय. सूरिए ते प्रमाणे कर्युं के शाहे ते झाड(वड)ने रजा आपी त्यारे ते गयो.

महावीरनी प्रतिमाने बोलती करवी

एक वखते कन्नाणपुरना महावीरने म्लेच्छोए लइ जइ शाहनी पोळ(राजमहाल)ना बारणा आगळ पाडीने नीचुं मुख करावी नाखी मूक्या हता. लोको तेना उपर थइने जता आवता हता. जिनप्रभसूरि आव्या, त्यारे तेमणे

" सिरिभोयरायराया कवडेणुग्घाडिऊण पढमसिलं ।
उड्ढपहेणं त(न)ह मंडवाउ सिद्धु व्व नीसरिही ॥"

तेना वचनने साचुं जाणी राजा मनमां परितुष्ट थयो हतो अने तेणे जिनशासननी प्रशंसा करी हती. "

—वि. सं. १४२२मां पाटणमां संघतिलकाचार्ये रचेली सम्यक्त्वसप्तति-वृत्ति(दे. ला. पत्र ८२)मां आ उल्लेख कर्यो छे.

प्रतिमाने ते अवस्थामां जोइ. ते पछी सूरिजीए राजमहालमां जइने शाहने जणाव्युं के–' शाह! जो आपो तो तम्हारी पासे एक प्रार्थना करुं.' शाहे कह्युं के–' मागो ते आपुं. त्यार पछी पाउलि(राजमहाल)ना द्वार पर रहेला महावीर माग्या. त्यार पछी शाहे महावीरने पोतानी समीपमां मंगाव्या. चित्त हरनार मनोहर महावीरने जोया पछी शाह सूरि प्रत्ये बोल्या के–' आ तमने हुं नहि आपुं.' सूरिजीए कह्युं के–' अम्हारुं आगमन निरर्थक थयुं.' शाहे कह्युं के–' जो आ(महावीर–प्रतिमा)ने मुखथी बोलावो, तो हुं आपीश.' सूरिजीए कह्युं के–' जो ए(महावीर–मूर्ति)नो पूजा–सत्कार करो, तो बोले.' शाहे ते प्रमाणे (पूजा–सत्कार)कर्यो. पूजानां उपकरण(सामग्री) करी बे हाथ जोडीने शाह बोल्या के–' प्रसाद(महेरबानी) करीने आप बोलो.' त्यार पछी महावीर जमणो हाथ पसारीने बोल्या के-

"विजयतां जिनशासनमुज्ज्वलं विजयतां भु(सु)ज[ना]धिपवल्लभः
विजयतां भुवि साहिमहम्मदो विजयतां गुरुसूरिजिनप्रभः ॥"

भावार्थः–उज्ज्वल जिन–शासन विजयी थाओ, सुजन राजाओनो वल्लभ विजयी थाओ, भूमि पर शाह महम्मद विजयी थाओ अने गुरु जिनप्रभसूरि विजयी थाओ.

तेनो अर्थ गुरुना मुखथी सांभळीने शाह तुष्ट थया अने

महावीरनुं सन्मान पूजन कराववुं

बोल्या के–' आ(महावीर देव)ने हुं शुं आपुं ?' सूरिजीए कह्युं के–' शाह ! आ देव सुगंधी द्रव्योथी तुष्ट थाय छे.' त्यारपछी शाहे (महम्मदे) खरह अने मातंड बे गाम आप्यां. श्रावको धूप लावीने सदा धूप–पूजा करवा लाग्या. सुलताने ते(महावीर)नो प्रासाद कराव्यो.

अन्य चमत्कारो

राघवचैतन्य संन्यासीने जीत्यो, सुलतानना हाथनुं मुद्रिकारत्न राघवचैतन्यने माथे नाख्युं, संक्रमण दर्शाव्युं. सुलताननेशत्रुंजय पर लइ जइ संघपति कर्यो. रायणझाडने दूधथी वरसाव्युं. अमावास्या तिथिने पूनम तिथि करी बतावी.

खंडेलवालोने जैनो कर्या

खंडेलपुर नगरमां सं. १३४७(७४ ?)मां जंगलदेश (राजपूताना)ना शिव–भक्तोने जिन–शासन–धर्ममां स्थाप्या; तेमनुं स्वरूप कहेवामां आवे छे–एक वखते खंडेलवाल गोत्रवाळा विष्णु(शिव)–भक्तो द्रव्य समुपार्जन करवा माटे गोळ, खांड विगेरे व्यवहार (वेपार) करता हता. वेपार करतां तेमने घणा दिवसो थइ गया.

---

१ " खंडेलपुरे नयरे तेरस्सए चउत्ताले ।
जंगलया सिवभत्ता ठविया जिणसासणे धम्मे ॥ "

घणो गोळ एकठो थइ गयो. तेनुं मद्य करवा माटे सेवकोने जणाव्युं. त्यारपछी मद्य(दारु) करावीने वेचाववा लाग्या. लोकमां मद्य करनारा तरीके विख्यात थया. तेमांथी केटलाके गुरुना उपदेशथी मद्यनो वेपार तज्यो अने केटलाक ते तजवामां अशक्त बनी ते ज वेपार करता रह्या. त्यारपछी जिनप्रभसूरिए पद्मावतीना उपदेशथी जंगलगोत्रवाळाने प्रतिबोधित कर्या."

जिनप्रभसूरिए कन्नाणयनयर(कन्नानूर)-कल्पमां अने विद्यातिलक मुनिए तेना परिशेषमां सूचवतां अवशिष्ट रहेल जिनप्रभसूरिना ऐतिहासिक परिचयनी पूर्ति, तेमना ज कोइ (अज्ञात) निकटना अनुयायीए रचेला जणाता आ प्राकृत प्रबन्धथी थएली जणाशे. पाछळना केटलाक लेखकोए जिनप्रभसूरिनो संबंध, पीरोजशाह(फीरूज तुघलक) साथे जोड्यो छे, परंतु उपर्युक्त कल्प, परिशेष अने आ प्रबन्धना आधारे महम्मद तघलक साथे सम्बन्ध मानवो विशेष प्रामाणिक जणाय छे. विशेषमां जिनप्रभसूरिनां तत्कालीन गुण-वर्णनात्मक [स्वागत] गीतो वाकानेरना जैन पुस्तक-भंडारोमांथी उत्साही श्रीमान् अगरचंदजी, भंवरलालजी अने शंकरदानजी नाहटा बंधुओना प्रयत्नथी हालमां प्रकट थयां छे;* तेमां पण कन्नाणयनयर-

* ऐतिहासिक जैनकाव्य-संग्रह (अभय जैन ग्रंथ-

कल्पमां अने तेना परिशेषमां पूर्वे (पृ. ३१–३३ मां) जणावेली महम्मदशाहवाळी घटनानो निर्देश छे.

माळा पु. ८ पृ. १२–१३)मां प्रकट थएल २ गीतो उचित संशोधन करी अहिं दर्शावाय छे—

(१)

के सलहउ ढीली नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए;
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू. १
चलु सखि ! वंदण जाह, गुण–गरुवउ जिनप्रभसूरि;
रलियइ तसु गुण गाहिं, राय–रंजणु पंडिय–तिलउ. (आंचली)
आगमु सिद्धांतु पुराणु वखाणिइ, पडिवोहइ सव्वलोइ ए;
जिणप्रभसूरि गुरु–सारिखउ हो, विरला दीसउ(इ) कोइ ए. २
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणु ए;
पुहसितु मुख जिणप्रभसूरि चलियउ जिमि ससि इंदु विमाणि ए. ३
असपति कुतुवदीनु मनि रंजिउ, दीठलि जिणप्रभसूरि ए;
एकंतिहि मन–सासउ पूछइ, राय–मणोरह पूरी ए. ४
गाम भूरिय पटोला गजवल, तूठउ देइ सुरिताणू ए;
जिणप्रभसूरि गुरु कंपि न इच्छइ, तिहुअणि अमलियमाणू ए. ५
ढोल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए;
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, संघ–मणोरह पूरा ए. ६

---

(२)

उदयले खरतरगच्छ–गयणि, अभिनवउ सहसकरो;
सिरिजिणप्रभसूरि गणहरो, जंगम कलपतरो. १

वंदहु भविक जन ! जिणशासण–वण–नववसंतो;
छत्तीसगुणसंजुत्तो वाइय–मयगल–दलण–सीहो. (आंचली)

तेर पंचासियइ पोस सुदि आठमि सणिहि वारो;
भेटिउ असपते महमदो सुगुरि ढीलियनयरे. २

आपुणु पास बइसार ए, नमिवि आदरि नरिंदो;
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रंजइ मुणिंदो. ३

हरषि तु देइ राय गय तुरय, धण कणय देस गामा;
भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा. ४

लेइ णहु किंपि जिणप्रभसूरि, मुणिवरो अतिनिरीहो;
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविहपरि मुणि–सीहो. ५

पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु;
देइ फुरमाणु अनु कारवइ, नववसति राय सुजाणु. ६

पाटहथि चाडिवि जुग–पवरु, जिणदेवसूरि–समेतो;
मोकलइ राउ पोसालहं, बहुमलिक–परिकरीतो. ७

वाजहि पंचसबद गहिर सरि, नाचहि तरुण नारि;
इंदु जिम गइंद–सहितु, गुरु आवइ वसतिहिं मझारे. ८

जिनप्रभसूरिनी अप्रकट कृतियो.

जिनप्रभसूरिए 'पउमाभ 'गाथानी अनुयोगचतुष्टयवाळी व्याख्या (अनेकार्थ रत्नमंजूषा दे. ला. नं. ८१ मां प्र.) मां सूचवेल रहस्यकल्पद्रुम तथा जिनप्रभसूरिनी अन्य अप्रकट कृतियो जो उपलब्ध थाय, अने तेनो संग्रह प्रकाशमां मूकाय तो नवीन जाणवानुं बनी शके.

जिनदत्तसूरि-चरित्र(अगरचंदजी नाहटाद्वारा प्रकाशित उत्तरार्ध पृ.४३१-४३३)मां प्रकाशित थयेल व्यवस्थापत्र(सं. साधुसामाचारी) जिनप्रभसूरिकृत होवानुं जणाय छे.

जिनप्रभसूरिनी पट्ट-परम्परा ।

जिनप्रभसूरिनो शिष्यादि-परिवार विशाल हशे,तेम तेमनी मळती केटलीक कृतियोथी अने अन्य केटलाक उल्लेखो(पृ. ५०)थी जणाय छे. ते सौमां जिनदेवसूरि अग्रस्थाने (पट्टधर) होवानुं जणाय छे. शाह मुहम्मद तुघलके वि. सं.

जिनदेवसूरि

धम्म-धुर-धवल संघवइ सयल, जाचक जन दिंति दानु;
संघ-संजुत्त बहुभगति-भरि, नमहिं गुरु गुण-निधानु. ९
सानिधि पउमिणिदेवि इम, जगि जुग जयवंतो;
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु, संजमसिरि-तणउ कंतो. १०

१३८५मां दिल्लीमां जिनप्रभसूरिनुं स्वागत-सन्मान कर्युं, त्यारे बीजा हाथी पर एमने बिराजमान करवामां आव्या हता-ए पहेलां(पृ. ३२-३३मां) उल्लेख थइ गयो छे. तथा उपर्युक्त गीतमां पण कथन छे. जिनप्रभसूरिए दिल्लीथी महाराष्ट्र-मण्डल तरफ प्रयाण कर्युं, त्यारे पातशाहना कथनथी पोताना प्रतिनिधि तरीके चौद साधुओ साथे जिनदेवसूरिने दिल्लीमंडलमां पातशाह पासे मूकी गया हता-ए उल्लेख पण उपर (पृ.३५मां) दर्शाव्यो छे. तथा त्रण वर्ष पछी वि.सं. १३८९मां पातशाहना आमंत्रणथी जिनप्रभसूरि देवगिरिथी पुनः दिल्ली तरफ आवता हता, त्यारे मार्गमां अल्लावपुर दुर्गमां तेमना सार्थिकोने असहिष्णु म्लेच्छो द्वारा सतामणी थइ, त्यारे समाचार मलतां सुलताननें विज्ञप्ति करी ते उपद्रव दूर करावनार जिनदेवसूरि हता-ए पहेलां (पृ. ४७मां) कहेवाइ गयुं छे. ए विगेरे परथी मुहम्मद तुघलकना-दिल्लीश्वरना शाही दरबारमां जिनदेवसूरिनुं पण ऊंचुं गौरवभर्युं स्थान हतुं, ए विचारकोना लक्ष्यमां सहज आवी शके तेम छे.

आ जिनदेवसूरिनी विशेष ग्रन्थ-रचना उपलब्ध थइ शकी नथी, तेम छतां जे मळी आवे छे, ते परथी पण तेमनी विद्वत्ता प्रतीत थाय छे. सचित्र कल्पसूत्रना परिशिष्टमां ९७ पद्योवाळी सं. कालकाचार्य-कथाना अंतमां तेओए पोताने ' जिनप्रभसूरि-स्वाङ्क-पर्यङ्क-लालितः ' विशेषण-द्वारा ओळखाव्या छे.

हेम नाममालाना शिलोञ्छ—(नि. सा. ना अभिधानसंग्रह खं.२,११प्र.) कार, आ जिनदेवसूरि होवानुं उपर (पृ. ३३ मां) सूचवाइ गयुं छे.

जिनदेवसूरिनुं संक्षिप्त परिचयात्मक प्राचीन गीत ऐतिहासिक जैनकाव्यसंग्रह (अभयजैन–ग्रन्थमाला पु. ८, पृ. १४) मां जोवामां आवे छे. *

---

* योग्य संशोधन–संस्कार करी ते अहिं प्रकाशित करवामां आवे छे—

निरूपम–गुणगण–मणि–निधानु संजमि–प्रधानु;
सुगुरु जिणप्रभसूरि–पट–उदयगिरि उदयले नवल भाणु.
वंदहु भविय हो ! सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वरनयरि देसणउ;
अमियरसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊनविउ. आंचली. १

जेहि कन्नाणापुर–मंडणु सामिउ वीरजिणु;
महम्मदराइ समप्पिउ थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि. २

नाणि विन्नाणि कला–कुसले विद्या–बलि अजेउ;
लक्खण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण अमेउ. ३

धनु कुलधरु जसु कुलि उपनु इहु मुणि–रयणु;
धनु वीरिणि रमणि–चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ. ४

धनु जिणसिंघसूरि दिखियउ धनु चंद्रगच्छु;
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ. ५

उपर्युक्त जिनदेवसूरिए पोताना पट्ट पर जिनमेरुसूरिने स्थापित कर्या हता, एम जिनप्रभसूरि-जिनमेरुसूरि गुरु-परंपराना एक गीत द्वारा जणाय छे. *

हलि सखे ! घणउ(इ) सोहावणिय रलियावणिय;
देसण जिणदेवसूरि मुणिरायहं जाणउँ नितु सुणउ. ६
महि-मंडलि धरमु समुधरए जिण-सासणिहिं;
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो अवयरिउ वयरसामि. ७
वादिय-मयगल-दलण-सीहो विमलसील-धरु;
छत्तीसगुणधर-गुण-कलिउ चिरु जयउ जिणदेवसूरि गुरु. ८

---

*× जिणचंदसूरि जिणपतिसूरि, जिणेसरु गुण-निधानु;
तदणुक्रमि उपनले सुगुरु, जिणसिंघसूरि जुग-प्रधानु. २
तासु पाटि-उदयगिरि उइयले, जिणप्रभसूरि भाणु;
भविय-कमल-पडिबोहणु, मिच्छत्त-तिमिर-हरणु. ३
राउ महंमदसाहि जिणि नियगुणि रंजियउ;
मेढमंडलि ढिल्लियपुरि जिण-धरमु प्रकट्ट किउ. ४
तसु गच्छ-धुर-धरणु भयलि जिणदेवसूरि सूरिराउ;
तिणि थापिउ जिणमेरुसूरि नमहु जसु नमइ [नर]राउ. ५
गीतु पवीतु जो गायए सुगुरु-परंपरह;
सयल समीहि सिज्झहिं, पुहविहिं तसु नरह. ६

विक्रमनी सोळमी सदीमां

जिनहितसूरि

उपर्युक्त जिनमेरुसूरिना पट्ट पर जिनहितसूरि स्थापित थया हता, एम जिनप्रभसूरि सुगुरुनी परंपराना उपलब्ध प्राकृत गाथाकुलकना उल्लेखथी प्रकट थाय छे. *

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह(अभयजैनग्रन्थमाला पु. ८, पृ. ११)मां जिनप्रभसूरि-गीत तरीके जणावेल आ सुगुरु-परंपरा-गीत योग्य शुद्धि साथे अहिं दर्शाव्युं छे.

*×× संजम सरसइ निरुयं(हं)सु(वसु) मुणीण तित्थभर-च(ध)रणं ।
सुगुरुं गणहर-रयणं वंदे जिणसिंहसूरिमहं ॥ ९ ॥

जिणपहसूरि मुणिंदो पयडियनीसेसतिहुयणाणंदो ।
संपइ जिणवरसिरिवद्धमाणतित्थं पभावेइ ॥ १० ॥

सिरिजिणपहसूरीणं पट्टंमि पइट्ठिओ गुणगरिट्ठो ।
जयइ जिणदेवसूरी नियपन्नाविजियसुरसूरी ॥ ११ ॥

जिणदेवसूरिपहो(ट्टो)दयगिरिचूडाविभूसणे भाणू ।
जिणमेरुसूरि-सुगुरू जयउ जए सयलविज्जनिही ॥ १२ ॥

जिणहितसूरिमुणिंदो तप्पट्टे भविय-कुमुयवण-चंदो ।
मयण-करि-कुंभ-विहडण-दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥ १३ ॥

जिनप्रभसूरिनी शिष्य-परंपरामां विक्रमनी पन्नरमी सदीना अंतमां तथा सोलमी सदीना प्रारंभमां चारित्रवर्धन नामना विद्वान् मुनि वाचनाचार्य थइ गया. तेओए पोताने तेमनी परंपराना जिनहितसूरिना शिष्य भूमीशवंदित कल्याणराज उपाध्यायना शिष्य तरीके ओळखाव्या छे. तेओ बहुबुद्धिशाली वाद-विद्या-कुशल, साहित्य, नाटक, अलंकार शास्त्रोमां तथा न्याय, बौद्ध, वेदांत विगेरे दर्शनशास्त्रोमां निष्णात हता-तेवुं सूचन करे छे. नरवेष वाणी (सरस्वती) गणाता हता. तेमनी रचेली कल्याणमंदिर-स्तोत्रनी ४२३ श्लोकप्रमाण टीका वडोदराना प्राच्यविद्यामंदिरमां छे. तेओए श्रीमालवंशी ठक्कुर भीषणनी अभ्यर्थनाथी, वि. सं. १५०५ मां वैशाख शु. ८ गुरुवारे सोमप्रभाचार्यना सिन्दूरप्रकर नामना प्रसिद्ध काव्य पर दृष्टांतोथी सरस ४८०० श्लोकप्रमाण तात्पर्य टीका रची हती, जे ए ज वर्षमां पं. धर्मदासद्वारा लखाइ हती. तेनी सं.

वाचनाचार्य चारित्रवर्धन

सुगुरु-परंपर-गाहाकुलयमिणं जो पढइ पच्चूसे।
सो लहइ मणोवंछियसिद्धिं सव्वं पि भव्वजणो ॥ १४ ॥

—ऐतिहासिक जैनकाव्यसंग्रह(अभयजैनग्रंथमाला पु. ८, पृ. ४१-४२)मांथी संशोधन करी उद्धृत.

१९६६ मां लि. प्रति वडोदराना जैनज्ञानमंदिरमां प्र. कान्तिविजयजी मुनिराजना संग्रहमां छे.

आ ज वाचनाचार्य चारित्रवर्धने कवि कालिदासना सुप्रसिद्ध रघुवंश महाकाव्य पर पण श्रीमालवंशी शाह सालिगना पुत्र अरडकमल्लनी अभ्यर्थनाथी शिशुहितैषिणी नामनी ८००० श्लोकप्रमाण टीका रची हती, जेनी प्रति वडोदराना प्राच्यविद्यामंदिरमां तथा खंभात वि. भंडारोमां मळे छे. प्रो. पीटर्सनना रिपोर्ट(३, पृ. २१०)मां आनो आद्यन्त भाग प्रकट थयो छे.

आ ज चारित्रवर्धन मुनिए वि. सं. १५११मां वै. शु. ११ तिथिए सुप्रसिद्ध नैषधकाव्यनी टीका रची हती.

आ ज चारित्रवर्धनाचार्ये पांड्यभूमंडलाखंडल-स्थापनाचार्य, कर्पूरधीरधाराप्रवाह विगेरे विरुदधारी उदार देसलना वंशमां, चेवट(वेसट) गोत्रमां थयेला वरदेव-संतानीय शाह भरवना पुत्र शाह सहस्रमल्लनी अभ्यर्थनाथी शिशुपालवध-महाकाव्यनी टीका पण रची हती, जेनी त्रुटित (८ मा, ११ मा सर्गनी) प्रति वडोदराना प्राच्यविद्यामंदिरमां छे.

ए टीकाओमां देवी पद्मावती तथा शारदा देवीनां मंगल संस्मरणो दृष्टिगोचर थाय छे. तेओए १३ पद्योनी प्रशस्तिथी पोतानी गुरु-परंपरानो परिचय कराव्यो छे, तेमां सूचव्युं छे

के–" जिनवल्लभ सुगुरुना वंशमां सिद्धान्त–शास्त्रार्थना जाण, गर्विष्ठ प्रतिवादीरूपी हाथीओनी घटाने परास्त करवामां सिंह जेवा, विविध नव्य रमणीय काव्योनी रचना करनार, विचारणीय विशुद्ध प्रज्ञावाळा, विज्ञोथी नमन करायेला प्रौढ-प्रतापी सूरिराज जिनेश्वर थइ गया. तेमना शिष्य सूरीश्वर जिनसिंहसूरि थया, जे प्राणि–समूहना हितार्थ–संपादनमां कल्पवृक्ष जेवा अने विपक्ष–वादीरूपी हाथीओने प्रतिहत करवामां पंचानन जेवा हता. तेना पट्टरूपी पूर्वाचल पर सूर्य जेवा सूरि–पुरंदर जिनप्रभ थया, जेमनी जीभने बुधेन्द्रोए वाग्देवता(सरस्वती)ना आस्थानपट्ट तरीके वर्णवी हती.

तेमनी पछी पोतानी बुद्धिवडे बृहस्पतिने तर्जना करनार, निरुपम समरसरूपी द्रव्यवाळा, जयशाली सूरिवर जिनदेवसूरि थया. " त्यारपछी थयेला जिनमेरुसूरि, जिनहितसूरि, जिनसर्वसूरि, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि, जिनतिलकसूरि

---

१. " वंशे श्रीजिनवल्लभस्य सुगुरोः सिद्धान्तशास्त्रार्थविद्
दर्पिष्ठप्रतिवादिकुञ्जरघटा–कण्ठीरवः सूरिराट् ।
नानानव्य–सुभव्यकाव्यरचनाकाव्यो विभाव्यामल–
प्रज्ञो विज्ञनतो जिनेश्वर इति प्रौढप्रतापोऽभवत् ॥ १ ॥
शिष्यस्तादीयोऽजनि जन्तुजातहितार्थसम्पादनकल्पवृक्षः ।
विपक्षवादिद्विप–पञ्चवक्त्रः सूरीश्वरश्रीजिनसिंहसूरिः ॥ २ ॥

अने जिनहितसूरिना शिष्य कल्याणराज उपाध्याय(पोताना गुरु)नो परिचय कराव्यो छे.

जिनप्रभसूरिना संतान-परिवारमां थयेला अनेक मुनिओए परिशिष्टपर्व विगेरे अनेक पुस्तको लखाव्यां हतां, जेमांनां केटलांक हालमां पण दृष्टिगोचर थाय छे.

वि. सं. १५८५ वै. शु. ५ गुरुवारे जिनप्रभसूरिना परिवारमां थयेला मुनिराजना उपदेशथी श्रीमालवंशी सत्पुत्रवती श्राविका रूपाईए सचित्र कल्पसूत्र अने कालकाचार्यकथानुं पुस्तक लखाव्युं हतुं. जिनप्रभसूरिना संतानमां थयेला जिनचंद्रसूरिना समयमां उ. सागरतिलकना शिष्य समयध्वजोपाध्यायने श्राविका पूरीए समर्पित करेलुं उपर्युक्त ह. लि. पुस्तक बीकानेरना जयचंद्रजीना भंडारमां विद्यमान छे.

विक्रमनी सत्तरमी सदीमां

वि. सं. १६३१मां ज्ये. व. १२ बुधवारे जिनप्रभसूरिना

तत्पट्टपूर्वाद्रिसहस्ररश्मिर्जिनप्रभः सूरिपुरन्दरोऽभूत् ।
वाग्देवताया रसनां यदीयामाच्छाद(स्थान)पट्टं जगदुर्बुधेन्द्राः॥३॥

तदनु जिनदेवसूरिः स्वशेमुषीनिर्जितत्रिदशसूरिः ।
निरुपमस(श)मरसभूरिः सूरिवरः समजनिष्ट जयी ॥ ४ ॥ "

—चारित्रवर्धनाचार्यनी सिन्दूरप्रकर-टीका, नैषधमहाकाव्य-टीका विगेरेनी प्रशस्तिमां.

संतानमां थयेला वा. भारतीचंद्रना शिष्य भानुतिलके लिखित गुणस्थानप्रकरण–टीका चुनीभं. मां उपलब्ध थाय छे.

वि. सं. १६३५मां का. व. ७ गुरुवारे जिनप्रभाचार्यना अन्वयमां थयेला देवतिलक मुमुक्षुए जिनप्रभसूरिनी पर्युषणा-कल्प–पंजिका(ग्रं. २०४१)नी प्रतिने आगरा राजधानीमां लखी हती.

वि. सं. १६४१मां बीजा शुचिमास शु. ६ शुक्रवारे, कमला(पद्मा)देवीना वर–प्रसादपात्र जिनप्रभाचार्यना अन्वयमां थयेला जिनहितसूरिना शिष्य आदिदेवमुनिए सिंघानकपुरमां जिनभानुसूरिना समयमां लिपीकृत समयसार नाटक वृत्तिनी प्रति बीकानेरमां जयचंद्रजीना भंडारमां विद्यमान छे.

विक्रमनी अढारमी सदीमां.

वि. सं. १७२६मां फा. शु. १० श्रीमाली खरतर-गच्छमां जिनप्रभसूरिना संतानमां थयेला उ. लब्धिरंगना शिष्य पं. नारायणदासनी प्रेरणाथी कवि हेमराजे रचेली सटीक नयचक्रनी वचनिका(भाषा) बीकानेरना दानसागरजीना संग्रहमां उपलब्ध थाय छे.

विशेष अन्वेषण करवामां आवे तो प्रभावक जिनप्रभसूरिनी शिष्य–परम्परानो बीजो इतिहास मळवा संभव छे, परंतु अति विस्तारना भयथी अहिं आटला संशोधनथी संतोष मानीशुं.

उपसंहार

आ निबन्धनी पुनरावृत्तिना प्रसङ्ग पूर्वोक्त कल्पो उपरान्त जिनप्रभसूरि-प्रबन्ध (सं.)नी लगभग मळती बे प्रतियो उपलब्ध थइ हती [१] वडोदरा आ. जैन ज्ञानमंदिरनी प्र. कान्तिविजयजी मुनिराजना संग्रहनी, तथा [२] वि. सं. १८९५ मुंबईमां, अने वि. सं. १९२२मां अजीमगंजमां लखाएल परथी अगरचंदजी नाहटाए बीकानेरथी मोकलावेली नकल. तथा जिनहरिसागरसूरिजीए पाछलथी मोकलावेल प्राकृत प्रबन्धनी प्रति, जिनप्रभसूरिनी तथा तेमनी शिष्य-परंपरानी कृतिओ अने खरतरगच्छनी अन्य सं. गु. पट्टावलीओ, उपदेशसप्तति, श्राद्ध-विधि, शुभशीलगणिनो कथाकोष (छाणी जैन ज्ञानमंदिरनी ह. लि. प्रति), उपदेशकल्पवल्ली, उपदेशतरंगिणी विगेरे अनेक ऐतिहासिक साधनो साथे समन्वय करी लीधेला तेमांना उपयोगी अंशो आ निबंधमां योग्य स्थाने दृष्टिगोचर थशे अने उपयोगी जणाशे—एवी आशा छे.

आ प्रयत्नथी महम्मद तघलकना समकालीन परिचित इब्ने बतूता जेवा परदेशी इतिहास-लेखके न जणावेली, 'मिराते मुहम्मदी (उर्दू),' झीआउद्-दीन बरनीनी 'तारीख-इ-फीरोजशाही', तथा 'दी क्रॉनीकल्स ऑफ् दि पठान किंग्ज ऑफ दिल्ही' 'सुलतानस ऑफ देहली' 'दी ट्रॅव्हलर ऑफ इस्लाम' 'कॅम्ब्रीज हिस्टरी ऑफ इण्डिया,' 'ऑक्स-

फर्ड हिस्टरी ऑफ इण्डिया ' जेवां ऐतिहासिक प्रमाणभूत मनातां इंग्लीश पुस्तकोमां न जोवामां आवती, छतां मुहम्मद तुघ(ग)लकना समकालीन अने गाढ परिचयमां आवेला आ देशना विश्वसनीय अन्य लेखकोए प्राचीन प्रा. सं. मां लखी राखेली तेमनी साथे संबंध धरावती, जैनशासनने गौरव आपती, जिनप्रभसूरिनी प्रामाणिक ऐतिहासिक अनेक घटना प्रकाशमां आवे छे-ए इतिहासविज्ञो वांची-विचारी शकशे. पुरा-तत्त्व-प्रेमी इतिहासना अभ्यासीओने मध्यकालीन भारतना तथा दिल्लीश्वर पातशाहोना इतिहासना अभ्यासमां, जैन आचार्योनो अने जैन गृहस्थोनो अप्रकट इतिहास उकेलवामां, हिन्दु-मुस्लीम-कलह निवारवामां, परस्पर सहानुभूतिभरी मैत्री वधारवामां अने शुभ प्रेरणाओ आपवामां आ प्रयत्न यत्किंचित् उपकारक थशे; तो लेखक पोतानो वर्षोनो प्रयत्न सफल थयो समजशे.

—ला. भ. गान्धी.

समाप्त

' जिनप्रभसूरि अने सुलतान महम्मद '

आ निबंधमां आवेलां ऐतिहासिक नामोनी अनुक्रमणिका.

ऐतिहासिक घटना–निर्देशक संवत्सर–सूची

शुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	८	-वीरस्तोत्र-	वीरस्तोत्र(स्वर्णसिद्धिगर्भित)
९	४	सरि-	सूरिमंत्र-प्रदेशविवरण
,,	२२	इत्यादि	इत्यादि
१४	७	पंचकल्याणमय	कल्याणकमय
१७	१७	अप्रसिद्ध	प्रसिद्ध
,,	१८	नमस्त्रिजगद्वन्दित-	नमस्त्रिदशवन्दितक्रमे
११, १८	३, १९, २०	पारसी	फारसी
२०	१६	(शौरीपुर)	
२१	३	आराम-	आराम (आमर)-
४२	१७	निर्वृत्ति	निर्वृति-
४५	२२	१४२३	१४८३
५८, ६२	८, १४	१५२९ (?)	१५२१
,,	९	कथाकोश	कथाकोश (कथा २)
,,	१५	-कोश	-कोश (कथा ३)
६३	१४	-कोश	-कोश (कथा ८)
८६	१५	पुरण	पुराण
९६	२२	मे	म्हारे
१२८	१७	शक्ति	शक्ति
१३३	१२	पद्धी	पछी
१५१	१८	बाकानेर	बीकानेर
१६०	१५	भरव	भैरव
,,	१७	सग	सर्ग